

'अपना सब कहिया धनिक होयब?' ओ जिहारागने पुछलकनि।

'ते किएक?'

'रकूलमे हमरा बड़ल जोर सँ भूख लागि जाइत अछि।'

'सा कऽ जे जाइ छऽ तइयो?' ओ पुछलथिन।

'सै ते माथुनी गुमतीए लग घनि जाइत अछि। हमरा पाइ कहाँ रहैत अछि। जहाँ कहाँ दैत भि पाइ? कए रा विद्याथी त अपना संगमे जलखे अनेए। खूब खाइत रहेए। नहि त जेबेमे पाइ रखने रहेए। कीनि कीनि कऽ चिनिब। कहाम कि बिरकट खाइत रहैत अछि। हमरो बड़ गोन होइत रहैत अछि। बाबू ओ।' बेदाक ई बात सुनि कऽ बड़ कपोट भेलनि हुनका। मुदा ओ किछु कजलाह नहि।

'बाबू ओ, अपना सब सब दिन एहिना गरीब रहब?' बेदा अनचोकहि पुछलकनि। हुनकर आन दुल्लभि।

'नै-नै। सब दिन कतह एहिना गरीब करी?' ओ बुझओलथिन।

'कहिया धरि रहब?' ओ पुछलकनि।

'हमरो लोकनि सब दिन गरीब नही रहब। हमरो सबहक दिन फिरत।' ओ बुझओलथिन।

'अपना सबहक दिन कहिया फिरत?' ओ पुछलकनि।

'फिरबे करतोक दिन। देखाहक नै।' ओ कनी खौझाइत कहलथिन।

'कोन बुझै मेरे सँ अहाँ?' ओ पुछलकनि।

'हमर बाप कहने बुझाह।' ओ शान्त स्वर कहलथिन।

'की कहने रहसि?' ओ फेर पुछलकनि।

'कहने रहसि जे बुझक दिन बौति जाइत छैक ते सुखक दिन जयैत छैक।' ओ कहलथिन।

'कहिया?' रमाकाय पुछलकनि।

'जल्दीए।' कहलथिन।

'तौयो कहिया?' रमाकाय के पिताक उत्तरसँ संतोष नहि भेलक।

'जहिना तौ सुन नीक जहाँ पहुँ लिखि कऽ मैच मऽ जयवत। खुब हानी मऽ जयवत तखन। ओ बुझओलथिन। संगहि संग माम भरिक लोक सबमे मेल मऽ जयतैक तखने।'

# उचितवक्ता

गंगेश गुंजन



# उचितवक्ता

[मैथिली कथा-संग्रह]

डॉ० गंगेश गुंजन

●  
क्रान्तिपीठ प्रकाशन

एल० आइ० जी० एच० पसेट-37  
लोहिया नगर, पटना-800020.



पारम्परिक आवश्यकताक अनुसार  
हमहें एतऽ लेखकक विषयमे संक्षिप्त  
सत परिचय छापऽ चाहैत छलहुँ,  
परन्तु लेखक मना कऽ देलनि । लेखकेक शब्द मे :  
"कथा सभकेँ स्वयं बाजऽ दियोक'आ' पाठक वर्ग स  
अपने मर्ग करऽ दियोक । एहि लेल मध्यस्थता की ?  
ओकालति अहाँ तहि बुझाईत छैक से ? कथा सभ  
अपने बाजओ आ' उपस्थित करओ अपन पक्ष ।"

—प्रकाशक

- ☐ अवसर : २६ मार्च १९६१ ई०  
☒ सर्वाधिकार सुरक्षित : श्रीमती ज्ञान्ति सूरजना  
☐ प्रकाशिका : श्रीमती इन्दु बाला सिंह  
☐ आवरण चित्पी : श्री भुवनेश प्रसाद डोंडियाल  
☐ अवधारणा : लेखक  
☐ मूल्य : पचास टाका मात्र  
☐ प्रकाशन : सभित्व सचहतरि टाका मात्र  
☐ प्रकाशन : ज्ञान्तिपीठ प्रकाशन,  
एल०आइ०बी०एच०एल०एल०  
लोहिया नगर, पटना-२०.  
☐ मुद्रक : ए० आर० प्रिंटर्स, डी-१०२  
न्यू सीलमपुर, दिल्ली-५१

UCHITVAKTA : A SHORT STORY COLLECTION IN  
 MAITHILI, BY DR. GANGESH GUNJAN,

# आर्यभट्टजी

ई पोथी अपन श्रद्धेय भैया आ' भोजी, श्री राजेश्वर सा तथा  
 श्रीमती अपर्णा देवी के सावर समर्पित !



# उचितवक्ता

क्रम । पृष्ठ संख्या

शब्दक सरोकार [लेखक विधि से]

: कथा

मुठे मुठ : १

सङ्गीत : ७

सपना काव्य : १५

एवारहम चिन्ता : २०

मनुष्य आ गोबर : ३४

अवसरक लोक : ४४

मुर्दा मुर्दाक भाग्य : ५५

बाप बेटा : ६१

रखवारी : ६८

एक टा रहस्य सतुवेचनी : ८०

धम्म अंकल एहन कियेक छपिन : ८३

अपन समाज : ८६



## शब्दक सरोकार

॥ एक ॥ सूचना-संचारक विश्वव्यापी विस्फोट से आइ जीवित धरतीक एकहु टा कोन बाँचल नहि अछि। सम्पूर्ण मानव-समाजक ई पराभव छैक जे ओकरा, ओही सब किछु गुनऽ, जानऽ तथा सोचऽ-कहऽ-करऽ पड़ि रहल छैक जे ओकर प्रयोजनक नहि छैक जाहि से ओकर सरोकार नहि छैक।

हमरा इहो बुझाईत अछि जे जेतेक रास विचार आ' दर्शन एखन धरि सृजित आ' प्रचलित होइत रहल अछि तथा जे संस्था, तकर बाद संगठन वा व्यवस्था पद्धतिक रूप धरैत अछि से अपना अपनी कऽ मात्र एक टा खास नाव जकाँ भऽ जाइत अछि। सबजाना नाव नहि, एक जनिया नाव। ताहि नाव केँ सब, अपनाहि दिशा मे अपने बाहिक जोरे पतवारि सँ, अपनाहि दृष्टिकोणें खास कऽ छैवैत अछि। छैवैत जाइत अछि। आज सभ बात-विचार, ओकरा दृष्टिकोण मे प्रायः अप्रासंगिक लगैत छैक, जखन कि एहन सभ टा विचार-छेदीया हमरा एखनसँ एक भग्नु मलाह जकाँ बुझाईत अछि।

ओना, कालक अन्तर्दि अनन्त प्रवाह मे, एक संग नाव छैवैत अनेक विचारक नाविक एहि तरहक समाने उद्देश्यक छवि मे आभास भऽ सकैत अछि, परन्तु से प्रायः भ्रम थिक। कारण जे ओ सभ, अपना-अपना लक्ष्य मे पृथक्-पृथक् छवि। मन मे तेँ प्रश्न उठव स्वाभाविक लगैत अछि जे एतेक युग सँ आइ धरि एतेक तरहक विचारधारा, एतेक-एतेक दर्शनक उद्भावना तथा प्रचारक संगहि सङ्ग समय-समय पर समाज द्वारा ओकरा स्वीकार अस्वीकार करवाक उचल-पुचल कऽ दै बला जमानदोलन किएक होइत रहैत छैक ?

तेँ सूचना-संचारक एहि महाविस्फोट मे हमरा एहि लोक-सत्यक अनुभव होइत अछि जे सम्प्रति साधारण मानव समुदाय स्वयं केँ मात्र हेरावल-भुतिआवल तथा नाना प्रकारेँ अपना केँ ठकावल अनुभव कऽ रहल अछि। कए ठाम तेँ सम्भ्रान्त वर्गीय सत्ता सँ परिचालित एहि समाजक अस्तित्व मे ओ अप्रासंगिक भऽ गेल अछि। युग प्रचलित कुल शासन-पद्धति साम्राज्य-वाद, पूँजीवाद, साम्यवाद, लोकतंत्रीय समाजवाद आ नव प्रजातंत्र आदि-आदि

( अ )

सभ मे ओकर अस्तित्व मात्र गनती अर्थात् आँकड़ाक रूप मे रहि गेल छैक तथा आव अपन एहि पराभव केँ सही-सही अनुभव कऽ सकवाक भाषा आ' लोक-विवेक साधारण जन केँ प्राप्त भऽ गेल छैक तेँ ओकर अंतर मे एक टा निर्णायक उपक्रमक प्रक्रिया चालू भऽ चुकल छैक। ओ स्तब्ध नहि, चुप अछि एखन। समय १२ से, स्वाभाविक परिणाम जकाँ सभक सोझाँ अगळे करतैक निर्णायक उपक्रम, मे हमर-लेखकक आत्म विश्वास तथा दृढ़ आशा। विचार-बुद्ध, सत्ता-संवर्ध, सुष्ठु राजनीतिक स्वार्थ-संग्राम आ तत्पन्त्य आपस संपूर्ण मानवीय मूल्य पर अनुदिक विपत्ति केँ, अपन गत सीत-पैतीस विश्वास-वर्षकेँ देखैत, हम स्वीकार करैत छी जे हमर लेखन स्वान्तः सुखाय अछि।

॥ दु ॥ लेखक अपन समाज सत्य, समय-सत्य एवं संमकालीन विचाराभिव्यक्ति-माध्यमक निर्भीक प्रयोक्ता, तेँ 'उचितवक्ता' होइत अछि एही तर्क सँ कृति सेहो स्वयं उचितवक्ता होइत अछि जकर कि आजुक समाज मे घोर अभाव। एहि पोथीक नाम तेँ, 'उचितवक्ता'—कथा-संग्रह धरैत छी।

बारहु टा उचित वक्ता छवि एहि संग्रह मे। पहिल कथा-संग्रह अन्हार इजोत ६४ ई० मे छपल रहल। दोसर संग्रह मैथिली अकादमी पटनाक प्रकाशन-प्रवृत्ति-यन्त्रणाधीन अछि, आव तेँ ६ वर्ष सँ प्रायः। तेसर संग्रह ई (यद्यपि प्रकाशित दोसरे संग्रह थिक) १९६१ ई० मे। कएक वैचारिक एवं व्यावहारिक कारणेँ, लेखकीय-सम्बेदना तथा दृष्टि विकासक ध्यान रखैत, एहि संग्रह मे पैसठि ईस्वी सँ अठ्ठासी ईस्वी धरिक अपन किछु कथा अपने लोकनिक समक्ष निवेदित करैत छी। एतऽ कोनहुँ प्रकारेँ हमर ई माय्यता नहि अछि जे ई सब, सभटा हमर प्रतिनिधि कथा-रचना थिक। नहि। हमरा बुझाईत अछि जे एक-एक शब्द जे हमर कलम सँ निकललब, हम सभक उत्तरदायी छी तेँ ओ सब हमर प्रतिनिधित्व करैछ ओही शब्द, कथा, कविता किवा अन्य विधाक रचना जकरा कदाचित् समय नहियो मानत। सब हमरे। जेना स्वस्थ मुखर सक्षमक खगहि संग कोनो एक टा विकलांग अधिकशित सन्तानक जतक सेहो होबऽ पड़ैत छैक कहियो। ओही बच्चा ओही पिताक। तेँ यैह ओकरो अवायदेह।

॥ तीन ॥ सभ कथा समय, सत्य तथा ऐक्यकीय आदर्शक पृष्ठभूमि मे कयल गेल लेखकक आत्म संवर्धक कथा-सृष्टि थिक, से कहवा मे हमरा कोनो तारतम्य नहि अछि। ई सब टा, एहिना शब्दक काया नहि घऽ लेलक, प्रत्युत मादस मे स्वरूप ग्रहण करवाक एक टा प्रक्रियाक अंतर्गत सृजित भेल अछि। छुट्टे घटना अथवा कथानक कोनो श्रेष्ठ रचना नहि बनैत छैक। श्रेष्ठता समय,

( आ )



बोध, इतिहास-विवेक, समाजक सम्पूर्ण परिस्थिति आ' तकरा विषय मे लेखकक दृष्टि-भंगीक सर्जनात्मक प्रयोग सँ निमित्त होइत छैक । दृष्टि आ' दृष्टि-भंगिमा रचनाकार मुख्य पुत्री धिक्क आ' प्रयोग-कौशल ओकर साधना । ताही अर्थ मे हमर मन कहैत अछि जे, जे जतेक महान् कृति होइछ ते अपन अतीत आ' वर्तमानक समझ आतेवे महान् ख्याल सेहो रहैत अछि ।

एहि कथा सभ मे प्रथा स्वात तकर स्वयं भेटैत चलैत तँ हमर सार्थकता अन्वया अवनेक प्रतिक्रिया सावर गिरोघार्य ।

॥कारि॥ अपन सभ उपलब्धि के हम, सर-सम्बन्धीक आ इहिके खाड़ीक लेखक-कविक आजीवन के दुखैत छी तथा निवर्तक स्नेह शुभकामना । ते हुनका लोकनिक संगहि कुतलता आ' आवरपूर्वक स्मरण रहैत छवि-मैया-भौजी, सरस्वती जी-मुत्तु, छोटाका मैदा-छोटकी भौजी, हमर कनिषा, हमर मित्र, प्रभास कुमार चौधरी, भीमनाथ झा, रामनाथ आजायक सहैब मार्कण्डेय प्रवासी, शुक्ला जी मुखिया, अवधेश-भाभी, देवेन्द्र, नरेन्द्र, रणविजय, इला, सरिता, शंकर मोहन झा, मुकुल पाण्डेय, चन्द्रेय, आ' मंजु विजया, जैनेश, हमर बाल तथा धीर भाव तथा पार, विश्वरूप काजी भौजी, स्व० एस० अतिथल, भगवतीचरण श्रीवास्तव, अजय, भूपेन्द्र अवोध, भी० रामबुल्लान सिंह, केशरनाथ कलाधर, मधुकर गंगाधर, हीरानन्द शास्त्री जी, मुधुगु शेखर चौधरी जी, ए० रामदयाल पांडेय, डॉ० कुमार विमल, निशान्तकेतु, भगवती चरण मिश्र अपन रेडियो गुरु केहन पाण्डेय जी, नर्मदेश्वर उपाध्याय जी... हिनका लोकनिक आत्मीय छविक अमृत सिलसिला अछि ।

तखन अंततः सर्वोपरि एकज समाज ! समाज जाहि मे हमर माँ-पिता सँ लऽ कऽ नाडीम गाँठिमर तथा मदर टेरेसा आ' मोलायस बेंजामिन धरि छथि ।

ए० आर० प्रिंटर्स प्रबन्धक श्री कुमारकान्त चौधरी, श्री विजयचन्द्र झा, श्री सत्येन्द्र मिश्र, श्री उमेश झा तथा प्रिय मातृज कलाकार चि० शान्तनु पाण्डेय एवं श्री भूवनेश प्र० डीठियालक स्नेह सक्रिय सहयोगहि सँ ई पोथी छपब संभव भऽ सकल अछि । ते सबकेँ हृदय सँ धन्यवाद ।

॥पी०॥ हमरा सभ गोटय के एकर विशेष हर्ष जे ई पुस्तक चि० ग्रीलू बाबूक जन्म-दिनक (२६ मार्च) उपलक्ष्य मे प्रकाशित भऽ रहल अछि । □ गुंजन

बेलगाँव

नई दिल्ली

## युद्धे युद्ध

बारह घंटाक भीतर, ई तेसर बेर । ओ होटलमे आबि क' बैसल । माथ पर बिजलीक पंखा घुरमी कइत छैक । सूड़ी उठा क' ओ एक बेर अस्पष्ट पाँख सबकेँ देखलक आ' फेर सौस छोड़ैत कुत्ताक बुताम खोलि लेलक । भीषण गर्मी । जनि महि कोना लोक जीयत ? इन्छा भेलैक जे बरक पानिसँ भरि छाक नहाय । कपारमँ छाह उठल रहैक ।

दू छन ओ सोचलक, कनीकाल तक बिना किछु वजनहि चुपचाप पंखा तरमे बैसल रहब । एही बिचार-सङ्ग ओकर पानी खसि पड़लैक । फेर जेना चौकैत सजा उठल । नवो देखि क' की सोचत ? बाट-घाट सूति जायबला प्राणी ।

बेयरा लग मे ठाढ़ भ' गेलैक । ओ बिना चेखनहि, ओकरा एक ग्लास पानि द' जाइ लेल कहि क'सोत छोड़लक । बेयरा बज गेलैक । सोझाँक अपना पर, अनायास आबि गेलैक । पानिक छिटका सबसँ दगावल अपना मे अपन आकृति ओकरा बेसी डेहियावल लगलैक ।

एहन जीवन जीसैत आइ नौ वर्ष सँ बेसी भ' रहल छैक । एकटा असकर कोठरी, होटलक भोजनक जीवन आ' चाह आ' निश्चित घंटासँ बहुत बेसी घंटा तक बिना अतिरिक्त मजूरीक कार्य करैत जीवन । भोर-साँझ, दिन दुपहर बीच सबक पर जसैत जीवन । आ' सुस्ताइ लेल कोनो चाहक दोकानमे पाँच मिनट-सात मिनट धरि टहरैत, पाह चुकबैत आ' पैर आगौं यदि जाइत असकरआ डेगक अंतहीन जीवन !

ओकरा कुलएलैक, जीवनकेँ अंतक मनःस्थितिमे ओ अनुभव कयने अछि, बहुत कम्मे लोक क' सकल हेलाह, मुदा फेर तामसो उठि गेलैक । अपना विषयमे ओकर अतिबाधितक प्रकृति पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल छैक । वस्तुतः ओ जीवनकेँ बहुत कम रूप मे चुनने छैक ।

आगामि पानि राखि, कन्हा परतूक तोलियासँ हाथ पोछैत बेयरा प्रतीक्षा कर' लगलैक मुदा ओ एतु बेर चुप रहल । खाली, ग्लास उठा क' पाँच-सात घोट पानि घोटि गेल । बेयरा भरिसक खीला क' चल गेलैक । मातृक डैटै छैक । बिन भरि मे केनेको बाबु अहिना घंटा भरि पंखा तरमे बैसि क' चल जाइबला अवैत छथिन । साज ग्लास भरि पानि आ' एक प्याली चाह ।



ओ सोचलक किछु खाइ गेल मंगयए । जेबोमे एखन पाइक खास अभाव नहि छैक । मुदा जानि नहि कियेक फेर बेयरकेँ सोर क' एक प्याली चाहू द' जाइ लेल कहलसैक आ' आव आबुरतासँ प्रतीक्षा कर' लागल जाइक ।

अइ बेरमे आबि क' सब दिन ओकर माथ टगक' लगैत छैक आ' सौसे देह जेना आलससँ टूट' लगैत छैक । ओ एकटा हाफो छोड़लक आ' मुँह पर चूटकी बजी-लक । बगलहिमे आबि क' तुरन्त बसल किछु नयबुजकक गर्म स्वर मुनि-मुनि तामस उठलैक । ओ सब अपनाने एकवारक पन्ना लए अगड़ा क' रहल छलाह ।

'पहिने हमरा देख' दे' ।

'देख' ते, मुदा एकटा पन्ना हमरा दे । ताबत हमहुँ त' बेचिदैंक' ।

'बम्हूँ, द' व' छियाँ' ।

जानि नहि मामुनियो मयकेँ लोक कियेक हल्का क' दैत छैक ? होटलमे आबौ त' हल्के मचबैत । कनीवको काल त' तामित सँ बैसब सीख' लोक'.....

'एँ री, ई त वाकि भूषण प्रकीर्ण छीक ?'—आजके फाटल स्वर ।

'कोन इलाकामे री ?'

'बम्हू—देख' दे । अपनहि सभक इलाका'.....

तेकर बाव ओ युवक पूरा गंभीरतासँ पड़' लागल'..... रातो रात अचानक बाह का पानी बहुत चढ़ जावा और पूरा गाँव दह गया । लगभग डेढ़ मो घर बर्बाद हुए । बेघर लोगों के सेवाथे'.....

एकाएक जेना रेडियोकेँ मिला देल जाइक । ओ ध्यान केँ एकदमसँ हटा लेलक आ' सोच' लागल । एतनीटा जीवनमे नहि जानि कनेको वाकि दहायल घर-अंगनाक कण नावा देखि-मुनि चुकल अछि । वाकि ओहिना अबैत छैक आ' हजारो लोक एहिना अनाथ भ' जाइछ । ई वाकि ओकरहुँ जीवन मे आविषेसँ लागल छैक ।

बाहुक गंध जखन नाक धक' पसलैक त' ओकर ध्यान हटल । प्यालीक डंटी पकड़ि क' बडोलक आ' एक घोंट पीवि कात महुक देखलकेँ देखलक । सब युवक ओकरासँ अवस्थामे कम रहैक । सबहुक आकृति पर तखन अनुभवहीन चिन्ता रहैक । देखि क' ओकरा मन कण्ठसँ भरि गेलैक । मनहि मन जेना वाजल—'चिन्ताक गण्य नहि बंधू, घर आंगन फेर बनि जाइत छैक, खाली आवश्यक्ता होइत छैक रौद-बसातकेँ सहैत जाइक'..... ओ चाह पीबैत रहल आ' मनहि मन आनन्द होइत रहल, जेना ओ चिन्तित युवक सब ओकर मनोभाव मुनि लेने होइक ।

भ' सकैत अछि, अइ युवकसेसँ कोय, हु-बहु बँह हो जे सात-आठ बर्ष पहिने ओ स्थय छल । ओ सोच' लागल ।

20 शनिष गुनन

समयक सङ्ग सबटा स्मृति, घटना नहि मिटा सकैत छैक । कतोक एहनी स्मृति होइत छैक जे कहियो नहि छुटैत छैक ।

ओकर मन अनायास व्यतीतजीवी होब' लगलैक । तखन लगलैक ओकरा आगौ मे अतीतक ओ समस्त घटना, व्यक्ति बैसल होइक आ' ओ दुःख-सुखक गण्य करैक मुदा मे आवि गेल हो ।

आब त' वर्षोक डेकान नहि छैक । जानि नहि कए वर्ष भेलैक ?

सोझ पड़वा मे कनीक देरी रहैक । गामक वातावरणमे बाधसँ घुमि रहल मात-जातक घंटी आ' खुरक स्वर भर' लागल रहैक । बड़दक चैर पर घूरसँ घुआँ उठ' लागल रहैक आ' भगवतीक चिनकार पर, तुलसीसीरा खन मझिली काकी दिवारी लेस चुकल रहथि आ' भनवाकोठलीमे बूल्हि पवारैक उछोगमे लागल रहथि । पत्तानसँ हाँकि क' एकपेड़िया कात मे दूटा नेना माटिक घर-आंगनमे अपस्यात । हुनू दुपहरिसेसँ हुरान छल । दुपहरिखामे त' भोज-भात सेहो भेल रहैक । घरवासक भोज । अंडीक दूहि-घर-दूहिर झालरिवा पातक थारीमे चिकनी माटिकपूआ, काबोक दही आ' पिली-झिमाक तहआ, तिलकोड़ाक पाकल फड़क पन्तोवा'..... परसल गेल रहैक गृहणीक मर्वायसँ मण्डित सात वर्षक रंजना, कपार पर, माटि-पानिसँ खनायल ओझरायल केश लेने नोथारीक पुछारीमे व्यस्त आ' आठ-नौ वर्षक जयन्त ! ओ घरबैसाक वायिधसँ चिन्तित, धरियासँ अपने डाँड़ केँ कसैत, पैठ परहक माटिकेँ पीछैत'..... पैतोवा चाही ? हे, हृदये निय' । आ' एकटा पाकल तिलकोड़ाक लाल मुजंग फड़ पात पर ।

नोथारी सब चल गेल रहथिन्ह, ओसक पातक पान आ' सिक्कठिक कारी-बैगनी फरक मुपारी ल' क' । रहि गेल रहथि हुनू शिन् ।

आगामि गायक गोबर आ' माटिसँ तीपल-पोयल आंगन आ भिजने माटिक बावा पर, अंडीक खुट्टा पर टांगल नारसँ छारल कर्षिक चार । मुखगुड़ा गंभीर वस्तु-जातक व्यवस्था आ, कोठीक स्वान, बखाड़ी-नक केर व्यवस्थाक चिन्तामे निमग्न । धान बेसी हतैक तेँ बखारी चाही । बखारी त' बलान पर कतहु बना लेल जैलैक । बाबूकेँ कहल जयन्तनि जे नानी-नामसँ बएलगाड़ी पर बहुत रास बाँस भैसा दिअ' । केर खूब मजगुत बखाड़ी बनत, जँध आ' बड़की टा खोववाला बखारी । अइ बेर बड़ धान हतैक'.....

ओम्हूससँ रहिकावासी सोर पाइत अवलै । आ' जासनक स्वरे बाज' लगलै,— 'रंजु बीआ, एतेक अन्हार भ' गेलै आ' अहो एखन परि चलेमे लागल छियै ? बँह माँ खिमियाइत छथि । जतरी चलियो' ।

हुनू नेना उरै सकदम्भ, सते सेबाइ-धुपाइमे सोने ने रहलैक कनीवको जे अन्हार भ' गेलैक । माँ आव अवस मायधिन्ह ।

पुढे पुढे 03



'जन्तु, आधे फेर काहि भोरे खन खेलायव । की ते ?' जयन्त चुप ।

'बेस रंजू' । तकर बाद रंजू, रट्टिकावालीक सङ्ग अपना अंगना चलि जाइत रहसि । जयन्त अन्हारमे ठाडु अपन छोटा-छिन घर-आंगन देखैत रहल । फेर स्थिरे पयरे समर लागल अपना दलान विस । आनि नहि ओकरा आइ कतेक छिसिवाचिन्ह माँ ? यद्यपि आन दिन कोनो खाल न छिसियाइ छिन, तखनो आइ कती बेसी अन्हार भ' गेलैक अछि । भ' सकैत अछि छिसिवाचिन्ह, 'अन्हार भ' गेलैक आ' अहाकि' अंगनाक बाट नहि पुरल एखन घरि ? अन्हारमे कतेक साँच-बीड़ा बुलैत रहैत छैक ते' होश नहि कनियो ?'

आइ जयन्त चुपचाप सुनि लेत । किछु ते' बाजत । नहि त' फेर काहि खेलाइयो नइ जाय देल जयन्त मुदा तँयो ओकर पएर धम्कल लगलैक ।

माँ आइ चुप रहबिन्ह । ओ चुपचाप बैसबी परसँ पानि दारिक पएर-हाथ छोड' लागल । फेर छोटाकिनमा पीड़ी पर बैसी क' खसलक आ' ओछाओन पर पड़ि रहल । माँ आइ पहाड़ा सेहो पढ़' नहि छोकलानि । जयन्त आँखि मूँसि मुति रहल आ' भरि राति सपनामे अपने छोटा-छिन घर-अंगना देखैत रहल—

भोरे निग्न दुटितहि आँखि मीरैत बीड़ल गेल अपन घर लन । पढ़ुँचतहि कौड़ धक द' रहि गेलैक । ई की भ' गेलैक ? चारु फात पानिपै पानि । माटिक कतहु कोनो केन्ह ते' बाकी । खाली उज्जर-उज्जर पानि । ते' एकपेटिया, ते' ओ माटिक घर-आंगन सब किछु दहा क' चल गेलैक ।

जयन्त के' ठक-मुड़ो लागि गेलैक । फेर किछु मिनटक बाद ओकर पएर रंजूक अंगना विस बड़' लगलैक—जा क' कहि दैक जे आइ भोज-भात किछु नहि हेतैक । घर त' बाडि दहा क' भ' गेलैक ।

ओहने एकटा बुढ़िया बाढ़ि एक राति भरमे सुतलि रंजूके' सेहो दहा क' लेने चल गेलैक घर समेत । राता-राती घर काटि क' जलि पड़ल रहैक पानिमे । तेकर बाद, बीच में कएक वर्ष बीत गेल रहैक बाढ़ियेक पानि जकाँ । जयन्त पैघ भ' गेल रहल । एकटा गाँवमे बियाह भेल रहैक । एकहि वर्षक बाद फेर ओहिना भयानक बाढ़ि आयल रहैक आ' ओकर फूसक घर खसक' दहा देने रहैक । खाली ओ दुनु प्राणी बाँचि गेल रहल । बाहिमे घर-घर करैत स्त्री आ' आमा बडका टा प्रसन्न-आध सुनू, हमरा कमाय जाय पड़त । ओ स्त्रीके' कहने रहल त' चौकि गेल रहैक ।

कित ?

'कलकत्ता । दोसर ठाम गेनहुँ कोनो विशेष लाभ नहि । सुनैत छी ओत' बड़ जल्दी आ' नीक नौकरी भेट जाइ छैक ।' पत्नी मानि लेने रहबिन ।

4 □ गंगेश गुंजन

पत्नीके' एकटा सुन्दर घरक मनोरथ छलनि । जाहिमे भगवतीक चिनवार हो, आ' दूध ओटक अलग चुल्हा आ' जाँत बैसेबाक स्थान । बारमे टांगल पुर्वमे आवल लोक हो आ' जाफरी देल जंगला । ओखती में गाइल डकी ।

जयन्तक परोक्षमे एकाकीपनक भय तबेक नहि रहलनि । पाइ-कीड़ी जमा भ' गेने भीक घर ठाडु क' लेत, चारि बीघा जमीन कीनि क' घर बैसि रहत आ' करल ठाडुसँ कुखियारक लेती । कतेक रुपैया होइत छैक । नौकरी त' मतलबे छएह । पाइ-कीड़ा जमा क' किछु खेत-पघार बना ली आ' गाम पर गृहस्थी कर' लागी ।

मुदा जनमान पत्नीक सोचलहेक अनुसार किछु नहि भेलैक । वर्षहु ओ रहि गेल कलकत्ता । रुपैया सेहो कमायल । मुदा मामे-मामे स्त्रीके' किछु खास रकमक मनिआर्डर करबाक अधिरिक्त किछु नहि क' सकल । वर्ष-दू वर्षमे दस दिन गेल गाम गेल । संताम-हीन अपन स्त्रीके' खोच-भरोस देलक आ' लटकल ओखतीमे बसिक नव पाहि-खुड़ा लवा क' गाम सँ घूमि आयल ।

'हे कोनो व्योत क' क' डेटबाक कुर्सी दिया दिगीक । ते' त' एना साने-साने खुट्टो बदलने किछु फल नहि' ।

तकरे इन्तिजाममे लागल छी किछु टाका जमा भ' जाय त' वृद्धा कोठली ठाडु क' लेब हुँजेक । ऊपर खमड़ी रहैत त' ते' कोनो—पत्नी संशुष्ट भऽ गेलीह, भविष्यक प्रतीक्षामे । हालेमे मरि गेल छ मासक बच्चाक तकलीक हुनका कम भ' जाइत—बीक धिक । आव जे आओत तेकर भाग्य भीक रहतैक । पक्कामे रहत । ओकरा जकाँ वर्षा मे त' नहि भीजत ।

जयन्त भयवारि बिता क' जाइ गेल तँवार । आब दिने कतेक बाकी ? रुपैया-पैसा तनवा ओड़ि लेलक अछि जे माटिक गिलेबा पर पजेबाक देवाल ठाडु क' लिअए ।

ओकरा मनमे ब्रसत जकाँ जसाल भरि गेलैक । पत्नीक चिट्ठी अवलइए । अइ बेर जयन्तके' अवश्य निरीन आ' दीर्घायु वेदा हेतैक । ओकरा अवकाश समय तखन हेतैक जखन ओ पक्का घर ठाडु क' चुकल ।

ओ कतेको रंग-बिरंगक कल्पनासँ ह्रीडलमे बैसल भर' लागल । शरीर एखनहु धाकले रहैक, मुदा ओ सोच' लागल—मनुष्य प्रत्येक ओहन मुखके' बिसरि जाइत अछि जाहिसँ कनीको पैघ मुख भेटि जाइत छैक । ते' पैघसँ-पैघ दुख विस्मृत भ' जाइत छैक, कारण बुलेक अनुपातमे ई संसार पैघ-पैघ मुखसँ सेहो भरल अछि ।

लाहक अंतिम घोंट लैत ओ बड़ प्रसन्न छल आ' खँवा जोड़ि रहल छल । एतेक वर्षक अनवरत परिश्रमक बाद किछु मासमे ओ एकटा घर बना सकत जाहिमे ओ रहत, स्त्री रहतैक आ' धीया-पूता । आओर जकरा सुननेमे कोनो बाढ़ि दहाक' नहि

पुढे पुढे □ 5



सं' जयलैंक ! ओकरा भेलैंक, एघने पड़ाय गाम, आव असकर नहि रहय । गावसँ एतेक दूर परदेशमे...

पाइ देव' काउन्टर पर आयल । सड़क पर भीड़ लागल रहैक । सभक आकृति पर चिन्तायुक्त जिज्ञासा । होटलक रेडियोकेँ घेरने सभ ठाड़ रहैक आ' चुपचाप सुनैत '...अरे ई त' विशेष समाचार बुलेटिन चर्चक आकाशवाणीसँ...' ओ साक्षात् भ' गेल आ' गुन' सामल । ओला सभक आकृति पर तामस आ, अभिमानक बेग्ह स्पष्ट रहैक । सभ कपो जेना साँसकेँ जाति क' ठाड़ रहय । जयन्त कत्तीक आशोर आग' धड़ि क' पुछारी कयलकैक । ओचहिमे एकटा सज्जन बड़ निपिड़ सन गारि देलथिन । जयन्त केँ अपना देश पर आकस्मिक आक्रमणक ज्ञान भेलैंक । ओकरा कानमे प्राय. सामूहिक रूपेँ पड़ल जाइत सारि 'इस बार सर्वाधिक दो रसाले को...' पड़ोसी और मित्र देश का नाटक करके छुरा भीकता है प्रीठ में...' कमशः मद्धिम होइत गेलैंक । जयन्त स्वयं बड़ कोपित भऽ गेल ।

मनुष्य कहिया हएत मनुष्य, नहि जानि । मामूली स्वाभैंक एहि दुष्ट-वृत्तिक विनाश कहिया भ' पाबोत से नहि कहि । छोटसँ-छोट गप्पक लेल एतेक-एतेक मनुष्यक नाश ? एतेक तबाही ! जयन्तक शान्तिवादी प्रकृति एकाएक जेना पञ्चरत्न दिवासलाइसँ सटि गेल पेट्रोलक टिन भ' गेलैंक । उत्तेजनासँ ओकरा देहक नस-नसक सभटा धकनी, प्रतिकारी आक्रोशसँ भरि गेलैंक '...आब त' एहन परिस्थिति मे एकटा नहि समस्त घर-आपन दहाइ-दहाइ पर लगैत छैक...' ओकर आँखि विचित्र भावसँ पमक' लगलैंक । ओकर साँस बड़ी ओरसँ चलक लगल' । □

## सङी

—'तोरा मनमे कोनो पछतावा छीक ?' ओ पुछलकैक ।

ओकरा ठोरपर ओकर किछु मैही आ स्वादिष्ट स्वादक सूक्ष्म तह जकाँ सटि गेल छलैंक । ओ माथ हिन कऽ—'नहि' कहलकैक आ भिक्कन विहँसल । ओकरा अनुभव भेलैंक जे भरिसक ई ओकर मन पतिअयवा लेल बिहँसि रहल-छैक । असलमे ओ दुखसँ भरल छैक आ पछता रहल छैक । ई सभ टा होयब, ओ पछिला दू घंटासँ खाती मज्ज करैत रहल अछि । ओ सम्पूर्ण बुद्धिमत्तासँ ओकरा देखऽ चाहलक । ओकरा आँखिमे एक टा पारदर्शी तन्त्र भरि गेल रहैक ।

पहिने ओकर कातेमे ठाड़ि भेल रहैक । ओ पुछने रहैक जे 'अहाँ एतऽ एकसरे की कऽ रहल छी ?' ओ अपनाकेँ नुकसनाक चेष्टा कयने रहय । फेर कंठकेँ साफ करैत कहलकैक—'हम यथार्थसँ हठिकऽ एतऽ आबि गेलहु' अछि ।'

—'अहाँ कोनो बात, अपन 'पुरता घर' मन पाड़ि रहल छी ?' ओ पुछलकैक ।

—'नः । मात्र एक टा प्रत्यक्ष वातावरणसँ वचवाक हेतु एतऽ आबिकऽ ठाड़ छी । हमरा हृदयक अधिकोश भाग धड़-धड़ जरि रहल अछि ।'

—'अहाँक आँखियो लाल लगैत अछि । ओ कहलकैक—'अहाँ देखियोक अपन मुँह अपना मे । सत्त' ।'

ओ अपन मुँह देखलक । ओकर आँखि काते-काते लाल भऽ गेल रहैक । आ ओकर सूतोमे तँ बहुत पातर गिरा सभ प्रश्नरभजेल रहैक । ओ घबड़ाहटि आ उत्तेजनासँ चुप रहय । आ ओकर पंखामे चलि कऽ बीसवाक आग्रहकेँ कय बेर टारि चुकाव छलैंक । पछिला दू घंटासँ ओ एके बातक उत्तेजनासँ परेशान छल ।

—'तोहर तटस्था सहज छीक कि बगोतरी—जाति-वृत्तिक ? ओ कोनो आज्ञासँ पुछलकैक ।

—'अहाँकेँ की लगैत अछि ?'

ओ नहि बूझि सकैत छलैंक । ओ नचार भऽ आँखि घुमा लेलकै । दुनू चुप छल । आब कोठलीमे पंखा घुमि रहल छलैंक । नेना पीठपर झुलि रहल छलैंक । भरि मोहल्लाक रुपहरिमा कोठलीमे तेना समा गेल रहैक जेना ओ घर नहि, यती



हो। ओ खूब सम्भोरताई खोला रहल छल। ओकर-कान-लागल छलैक बरबज्जा पर। ओकरा चिन्ता लागल छलैक ओकर पर। ओ आइनेमे बर्तन-वासन भोजि रहल छलैक।

—'तुनु एक बीसराके' देखलक। फेर दोसर दिस देखल नामल। फेर हँस लागल। फेर चुप भऽ गेल। ओख मोहल्लाक आवाज बाजऽ लगलैक।

—'अरे, किछु बाबू!' ओकरा जेना मन पड़लैक।

—'बुझिये ते पड़ैत अछि जे की होयत?' ओ असमर्थताई आवाज।

—'की होयत?' ओकर स्वरक व्यंग्य बड़ कटगर छलैक।

ओ बतऽ लागल, जेना ओ ओकर खरभ धुल्ले पहि कपलकैक।

—'तोहर मतलब?'

—'मतलब की? ओरेंमें एके टा प्रश्न छल—अहाँ कखन आयब। आवि नेवहुँ। बस।' ओ कहलकैक।

—'अवकाश की अर्थ छैक?'

—'अहाँ कहुँ की अर्थ छैक? अहाँ आवि नेवहुँ। एहिमे की अर्थ भेटल?' ओकर बात खूब ठीक छलैक आ एक टा टेकनगर स्थानपर चुप बऽ गइल छलैक। ओ अपन कछमछीकेँ अपना अज्ञानताई सँवका प्रवास करैत रहल। ई प्रयास ओकरा व्यर्थ बुझाय लगलैक तँ किछु बजवाक बात मन पड़लैक। ओकरा दिस ओ बहुत ठीकई देखलकैक।

—'अर्थ किछु नहि छैक? बहुत छैक। तोरा की बुझाइल छीक राम टा 'अर्थक' आहुति तत्काले साफ-साफ बमिकऽ सोझाँमे टाड़ भऽ जाइत छैक? ओकरा रंग-रूप एकद्वैत समय नहि लगैत छैक?'

ओ अकस्मात् गहमत भऽ गेलैक। ओकरा आश्चर्य भेलैक। ओ दुनु हरदम विवाद पर उतरि जाइत अछि। ओ बड़ बजन्ता आ तेज छैक। गतिविधि बात धरल ते हटयबामे पूरा समय लागि जाइत छैक। ताहूमे बेसी काल ओ नहि हटत। ओ बड़ अपनत्वसँ देखलकैक। ओ ओकरे दिन शर्कत बेस नाम्भीर आ पदाम भऽ गेलि छलैक। ओकर ई चेहरा ओकरा छू केलकैक। ओकरा गर्दिन पर एक टा मोलायम पातर सोर मिहुरि रहल छलैक आ सिपर रहलाक बाबो ओकर कानक झुमका हिलि रहल छलैक।

—'रोजे तँ यह होइत छैक। हमराजोक्ति बात करैत छी। की अर्थ छैक?'

ओकर एहि चलहन सन बातपर ओ चौकल। तँको सहज धमल रहल।

—'हम बेसइत छी। हमरा बर होइत अछि पूरक दृष्टि सबसँ।' ओ कुसी पर पसरि गेल। टाड़ आवाँ पसरि गेलैक। पपरक आङुरसँ ओकर तरवा छुआ

भेलैक। ओकरा नीक लगलैक। ओ ओकर इहिन कान देवालय पर ओठईत-ओठईत करीब-करीब परि जकाँ गेलि छलैक।

—'पूरक दृष्टि कि माने?'

—'जेना बाह पीवाक आवश्यकताक संगे सहजानी, बम्मक, प्याली छकलाक आवश्यकता होइत छैक ते? अवैश्वर्य मे पड़ने छलियेक।'

आब फेर ओ सब चुप रहल। फेर ओकरा सभक चारु कात सोसे मोहल्लाक बुपहरिया बार्जि रहल छलैक। ओकरा सभक ऊपर कपारपर पंखाक हुनहनी धुमि रहल छलैक।

—'किछु प्रश्न मै छी किछु?' ओ अंतर्बोधमे पुछलकैक। सोनिकऽ ओ बडल जकाँ छल जे अगिला कमेको मिनट धरि कोनो सप-सप नहि चललैक।

—'हमर छापी धधकि रहल अछि।'

—'तऽ?' ओकर आशि, आहुति आ ओरपर एक टा चतुर स्वीक दुपट्टा छलैक।

—'कतहु चल। हमरा मझे कतहु चल।'

—'छालीक धधक्क बन्द भऽ जायत?' ओ अपन प्रश्नपर एको रती नहि बिहूसलैक।

ओ जहदीन 'है' कहलकैक। परन्तु ताबत उदास भऽ गेलि छलैक।

—'चल।'

—'कतऽ बऽ जायत?' अपन एहि प्रश्नसँ ओ ओकरे पछि कतरि देलकैक। काहिह, परसु, चारिमो दिन ओ यह प्रस्ताव कयने रहैक ओकरा सोझाँ। ओकरा चुप भऽ जाय पड़ल रहैक। सोसे गहरमे एको टा स्वाप एहन नहि जात ओ अवका ओकरा सभ सन कयो अपना जकाँ एकान्त भऽ सप कऽ सकय। गहर बेहून बेकार अछि। ओ खिसियाकऽ मोक्षक आ हारि कऽ बैसि गेल।

—'ओहि दिन तँ आने कहने रहै' जे कतहु बऽ चलू।' ओ ई बात मनेमे मोचलक, बाजल नहि। बाजल एहि प्रसंगक अगिला अंश।

—'कतऽ चलये?' ओ कीकि गेलैक।

—'अहाँ की सोचि रहल छी?' पूछैत काल ओ एक टा चान्हल लूशीक अनुभव कऽ रहल छल ते ओकरा बुझलैक।

—'हमर माथ जरि रहल अछि। पहिला दू बंटसँ हम तंग-तंग छी। हम जाड?'

व्यंग्यसँ ओ हँसि देलकै। बजलैक किछु काल बाद।

—'कतऽ जायत? सड़कपर, भीड़मे, अपन प्रिय रेस्त्रांमे, कतऽ?'

—'छुछे सड़कपर चलैत रहलसँ बात नहि बनैत ?'

—'से तँ अहाँ जानी । मुदा आन्तिक लेल ने जायब ?'

—'नहि । अशान्तिक लेल ।'

—'तखन जयबाक जरूरति ? एतऽ तँ अशान्त छीहे ?'

—'नहि । सीमाक एहि दोस अशान्तिसँ नीक अछि दूरक आत्यन्तिक अशान्त । सीरा एतेक लग, एतेक पैरबन्दीमे सँहि संकष असम्भव होइत अछि हमरा ।'

—'तँ हमरा मुक्त कऽ दिअऽ ।'

ओकर कहबामे कोनो मुनीना आ कोनो पाबना नहि छलैक । मात्र कर्तव्य सुझावक एक टा सूचना मात्र छलैक । ओ विषय बुझाय लागल । ओकरा भेलैक सेना ई बात ओ धमनेसँ सोचि लेलक अछि, ओ नहि बजलैक । चुपचाप ओकरा देखैत रहलैक । ओ अपन आ ओकर मुक्तिक बात सोचि रहल छल । ओ स्वयं बन्दी भऽ चुकल अछि । ओही ग्रंथनमे अछि । ओ हुनू अपना-अपना मुक्तिमे आरो अस्थाइये जा सकैत अछि । ओकरा मनमे छलैक जे ओ ओकरा खूब लगमे आबि कऽ बैसय आ विचार करय जे हुनू गोटे कोना-मुक्त भऽ सकैत अछि ?

ओ अपन एक मात्र घेटाकेँ 'मुम्मा' लऽ रहल अछि । आ ओ देखि रहल छलैक चुपचाप । कोठरीमे फेरो पूरा महल्ला छलैक । पंखामे घरघराहट छलैक । हलहली नहि । बाहरक घरघरककरी चलबाक आहट छलैक आ ओकरा फातमे, आँखिमे जिज्ञासा ।

ओ आँखि मूनि लेलक । माथ मारलक । खोपा ठीक कयलक । आँबरकेँ सम्हारलक । ओकरा दिस तकलकैक ।

—'माथमे बड़ दर्द अछि । सोझामे अन्हार सगैत अछि ।' ओ ओहिना बजलैक ।

—'लगेत नहि छीक, सन्ने अन्हार छीक—बैह हम । मुदा ई कह तँ जे माथमे दर्द किएक छी ?'

—'कमजोरीसँ भरिस्क । दू दिनसँ सेनाइए नहि खयलियेक ।' ओ नेनपनीसँ हँसल । जेना उरकीर्ण कयने हो ।

—'सेनाइ नहि खयले—मतलब ? काज पर तँ जाइत छथेहे' । सीरा कलऽ टेलिफोनो कयने रहियो..... ।'

—'भुखले की काजपर नहि गेल जाइत छीक ? अहाँ हरदम बाहरे चलि जाइत छी । दोड़-बख्खावला नोकरी छोड़ू । अहाँक आफिसक टेलिफोन ऑपरिटर बड़ दुष्टराज अछि ।'

—'छोड़ । खयले' किएक नहि ?'

—'जिदने । देखियेक फतवा कागधपर बिगु खयने चलि सकैत छीक ।'

—'फायदा ? जिदक मतलब ?'

—'सत्त गुनि सगैत छी ?'

—'कह ?'

—'बेहमे मथित रहैत अछि तँ मनक सभ विकार जीवित रहैत अछि, सभ अण निष पर फुलबा थोका लऽ कऽ इहो मारैत रहैत अछि । अखल शरीर हल्लुक बुझाइत रहैत अछि । काहि राति, आइ राति खूब निश्चिन्त भऽ कऽ मुतलहू । निक्किर भऽ कऽ ।'

—'विकारसँ की मतलब छीक तोहर ?' ओ अज्ञान बनैत पुछबाक ताटक कयलक ।

—'विकार मतलब विकार । सोचब, प्रतीक्षा, गुणा, प्रेम, शरीरक अन्हार बिहाइ सभ किछु ! रोगक विरडोमे मचकी शूलैत मझमझी पतंगक बेह-नृत्य..... ।'

ओ चुपचाप ओकरा दिस तर्कैत रहल । ओकरा ओ चंचल आ उत्तेजित बुझाय लगलैक ।

—'मुदा मात्र किछुए काज भेल अछि खयना । अहाँक अयबासँ चारि मिनट नहिमे खयलहुँ अछि । बेह मुनमुन बाजि रहल अछि । बिहाइमे पड़ल अछि आब ।' ओ केवाड़ छिड़की दिस देखऽ लागल जे दुनू पट्टा दू दिस रहेक ।

ओ ओकरा किछु कहबाक बात सोचैत-सोचैत बेसी काल चुप रहि गेल । बैह फेर ओकरा टोकलकैक किछु बजबा लेल ।

—'आब चलबाक चाहो ।' बाजल ।

ओ हल्लुकेसँ हँसऽ लगलैक ।

—'तोरा हँसी किएक लगली ?'

—'अहाँ भारी डरबूक आ बकलैल छी । ई बात ओ कठोर आ आघातक स्वरमे बाजलि छल । ओ कछमछाकऽ रहि गेल । अपन दुखछा आ कायरताक डर ओकरा फेर मथि रहल छलैक । ओकरा दिस आँखि उठाकऽ तकबाक ओकरा साहस नहि भेलैक ।

—'उबास होयबाक बात नहि छीक परन्तु, दिअर अहाँमे अपन सम्बन्ध जे खसम कयने होयति से एही बातपर, से हम ठीक-ठीक जानि सकैत छी । ओकर प्रस्ताव कयनीपर ओकरा अहाँ अपना एकसर घरमे जाहि कारणे' नहि लऽ गेलियेक से अहाँक कोनो आवर्ण नहि, कायरता छल अहाँक ।

ओ उत्तेजित भऽ गेल छलैक ।



—'हमरा घरमें ओकर जयवाक मतलब छलैक ओकर सर्वनाम । तौ जनेत छै ई बात जे ओ कुमारि छलि । हमरा पर विश्वास करैत छलि । तखन ई विश्वास-जन नहि होईत ओकरा प्रति ?' ओ चुपचाप आ प्रश्न सभमें बेरामेल छल ।

—अहाँ घरमें एकसरे रहैत छी मे बात ओकरा बूझल रहैक तथापि अहाँक घर जयवाक ओकर इच्छा स्वाभाविक आ अधिकारपूर्ण छलैक । अहाँ नेल जे विश्वासपात्र अछि से ओकरा वृष्टिमें अहाँक पक्ष लयितैक । स्त्रीके पुरुष चाहिएक मात्र ।'

—'हमरा कनियो' दुख नहि । किएक तँ हम ओकरा कनियो प्रेम नहि करैत रहिएक ।' ओ कहलकैक ।

—'मे भिन्य बात । मुदा अहाँ उत्तेजित किएक छी ?'

ओ मुड़ी तिरुवा कऽ बैसि गेल । 'कोठनी ओकरा घुमैत बुझि पड़ऽ लगलैक । खिड़कीसँ नीकटा मुँह ओकरा हुलकी मारैत बुझि पड़लैक ।

मुदा ओ आरामसँ पड़ऽ—पड़ऽ सल भऽ गेलि । ओकरा आँखिमें फेरो वहु नदरुपता छलैक । एतेक कालमें ई नदरुपता ओकरा अछरि रहल छलैक ।

उठिकऽ ओ कोठनीमें चक्कर देवऽ लागल । ओ ओकर पीठपर नजरि देने देखऽ लागलि । हुनूक अनुभव एहि बातक रहैक जे हुनू भुप अछि ।

—'अपना नहि जनु । वसू कुर्मीपर आरामसँ ।' ओ बड़ म्नेहमें वाजलि । ओकरा दिस ओ देखियो नहि सकलैक । खासी ओकर हुलुक हैमीक खिलखिली कान में पैसलैक । एहिबेर ओ देखलकैक ओकरा । नगेमन ओकर हुनू तरहवी बढलैक आ ओकर धनु गाल समेत ओकर चेहरा हुनू हाथमें आवि गेलैक ।

—'अहाँ कल्पने-कल्पनामें जीवैत छी ।' ओ गंधीयतामें वाजलि ।

—'हमरा बुझिने पड़ैत अछि जे हम की करी ?' ओ खीसा कऽ बयनीय भऽ गेल । ओ मुदा विह्वल रहलि छलैक । ओकरा देखने जा रहलि छलैक । ओकर आँखि फेरो अग्नि नहि सकलैक ।

ओ टहलि रहल छल । कोठनीक चारु दिसमें ओ अपन अस्तिरक घेर दऽ रहल छलैक । आँखि ओकर स्थिर रहैक । एहि बेर ओ एक डैग धमिह कऽ ओकरा नीललक । एकदम आधा बड्किऽ ओकर कन्हा छलकैक । ओ चुपचाप बैसि गेलि ।

ओकर बाँहि पकड़िक ओ अपना दिस विचलकैक । चूम्ना कऽ लिपकैक । ओ ओकर बाँहि कम्बुधमे इच्छापूर्वक डील होइत मूलि गेल रहैक । ओकर माथ ओकर बामा छालीपर पड़ल रहैक । ओकर आँखि झँपा रहल छलैक । ठोर काँपल आइक । ओकर तरहवीमें अपन तरहवीपर दबाव ओकरा नीक जकाँ अनुभव भऽ रहल छलैक । एक बेर खूब तेज-तेज धधकि उठल छल हुनू ।

ओ चुपचाप रहैक । ओकरे देखने जा रहलि छलैक । आँखिमें कोनो शिकायतिक भाव नहि छलैक । ओकरा देखिकऽ चूमाइक जे ओ नदरुपता कहि रहि गेलि अछि । ओ चुपचाप अपनेमे चिन्तित भऽ गेल रहल । कायरता आ विश्वासघातने की श्रेय होइत छैक, ओ सोचि रहल छल ।

—'की सोचऽ लगलहुँ ?'

—'किछु नहि । तौ की सोचि रहल छे ?' ओ सजापत जकाँ पुछलकैक ।

—'अहाँके सत्ते, वास्तविकतासँ बेसी कल्पना नीक लगैत अछि ।' बात बहुत गलत थिक । ओ खूब बोद्धिकतासँ प्रभावित ललक कहि रहलि छलैक ।

—'मे मानवाक तोहर आधार ?'

—'अहाँक आँखि कल्पना । स्त्रीके घटनामें होवऽ पड़ैत । घटना सभक सच्चा, विवरण वा संस्मरण कि कल्पनामें नहि । घटनामें होवये होइक थिक, अर्थवान थिक । सस ।'

माथ झुकीने ओ चुनैत रहल ।

खिड़कीसँ, बाँवके फाँकमें सन्धिया कऽ पैसैत विनाइ जकाँ सूर्यक प्रकाश कोठनीमें आवऽ लगलैक । ओहि प्रकाशमें ओकर मुँह उदास आ चिन्तित लागि रहल छलैक ।

—'तौ पडता रहलि छे ?' ओ सहमैत, अपराध भावनामें पुछलकैक ।

—'उहूँ ।' ओ माथ हिला देलकैक वा स्वप्न आँखिमें ओकरा देखवा उपक्रम करऽ लागलि । ओ की करी की नहि ताहि स्थितिमें बैसल रहल छलि ।

—'हम तोहर इतना छिपीक ।' कहैत ओकर कऽ किशित वाजि गेल परन्तु ओ अपन घेठके बहुत दुखार कयने जा रहलि छलि । ओकर चेहरापर बहुत उल्लास वा उत्साह नहि रहैक, यद्यपि ओ विह्वल रहलि छलि ।

... हम तौरा कोनो तरहक छुटकाराक किछु टा आना नहि दऽ सकै छिरीक । तौ तँ जनेत छे ।

—'हमरा छोड़ । अहाँ अपनोटा अपन बनाओल अश्रुत काटि कऽ जीवन तँ सौख ।

—'तोहर मतलब ?'

—'आब अहाँ जाउ ।' किछु सोचैत ओ हड़बड़ा कऽ बजलैक—'ओ कखनी, एखनो कोनो गड़ोस आँखि सही छथि—दूर परसँ ।'

—'के ?' ओ पुछि तँ बसलैक मुदा तुरन्त संकुचित भऽ गेल ।

ओकरा कन्हापर सटल वक्ताक देहमें कोनो संचार नहि छलैक । जाति गेल छलैक ओकर माथ आव' एखन ओकरा दुखार नहि करैतक ।



—'बली ?'

ओ माथ हिला बेलकैक । फेर दोसर दिस देखऽ लागलि । ओ ओकर माथ छलकैक । बदलामे ओ एकर तरहूँ-पाँचो आङुरकेँ दबाकऽ कतेक क्षण धरि अपना हाथमे धरने रहलैक ।

ओ आबि गेल । ओकरा छोरपर बहुत सूक्ष्म स्वादक नहि कहि सकबा योग्य तहूँ सटल छलैक । ओकरा बुझाई पड़ि रहल छलैक जे ओ उत्साहित अछि । मुदा, ओकर डेग बड़ स्थिरसँ चाकल-चाकल पड़ि रहल छलैक । ओकरा मस्तिष्क पर सभटा ओ सभ छलैक जकरा मजत मानल अछि ।

ई ब्यवस्था दोसरो होइलैक तँयो, एहने किछु होइलैक की ?

अनिर्णीत ओ एकटा फटीयर दोकानमे चाह पीबऽ पिसि गेल । बहारक भीड़ जाइत रहलैक-लोकक रेलम-पेल सड़कसँ ।

ओ केरी अपनाकेँ घटनाक कालमे ठाढ़ अनुभव कएलक—घटना मे नहि । ई ओकरा जेत खूब खराब बात छलैक । □

## सपना कायम

एक टा नीजवान रह्य । गहूँवाकांशी रह्य । जेना कि कोनो नीजवान बेल करैत अछि । ओकर परिस्थिति-माने आर्थिक, नीक नहि रहैक । ओ खूब सोचल करय । अपना मनक लक्ष्य धरि पहुँचवाक प्रयास मे दिन-राति चिन्तित रहैत रह्य । अपना चिन्ता मे ओ तनक व्यस्त रह्य जे ओकरा देखि कऽ कबो ई कहि देल करैक—'ई नीजवान जानि नहि, कौन विचार मे भुतिबायल रहैत अछि ।'

टोल पड़ोसक लोक ओकरा मादें एहन कोनो गप्प सोचैत छैक आ' बाजल करैत छैक ओकरा एतू बातक पता नै छलैक । ओ वेशी-तँ वेशी व्यस्त रहैत छल अपने आप मे । एक तरहँ बनहपनीक सीमा धरि ।

ओकर स्वास्थ्य औसत रहैक । काडी कामा सँहो साधारण । रहन-सहन अति साधारण जेहन कि मध्य वर्गक जनहीन कोनहुँ पुवा लोकक भऽ सकैत छैक । ओ जखन बाट पर पथ्यतक्षना गंभीर आ जिम्मेदार लोक जकाँ । ओना ओकर सबटा व्यवहार आ' बालि-डालि एक टा सामान्य आ बुझनुक मनुष्य जकाँ रहैक, तँयो ओकर गंभीर रहवाक स्वभावक कारणे लोक अपना-अपना मोताविक ओकरा विषय मे उदकरी लगयैत रह्य आ मोहल्ला मे किछु ने किछु चर्चा ओकरा बऽ होइतहि रहैक । फलस्वरूप सतक संहानुभूति मे जे—'चू चू—' बेचारे फकाँ बाबूक वेटा एवा भऽ गेलैन तँ ओना भऽ गेलैन ।' एहिना, किछु मोटय अकारणों क्रोध सँ ओकरा विषय मे बाजल करैक, जेना कि कम पढ़ल गरीब समाज मे होइत छैक । ओ पढ़ि लिखि कऽ बेरोजगार जरूर रह्य । से बात राज के वृद्धक छलैक ।

नीजवान मे एक टा विचित्रता छलैक । ओ सब राति एक्के टा सपना देखैत रहैक । सुर्जित रह्य समय पर आ, उठयो करय समय पर । एहि मे ओ कसिको अतिथय नै करय । मुदा रोज दिन एकहि टा सपना सपनाय । ई बात हमरो बहुत बाव मे जाकऽ एता लागल तऽ ।

हम, जे अहाँकेँ ओइ नीजवान दो मुना रहल छी, ओकरे पड़ोसिया रही आ मोन मे ओकरा बेस निश्चिते एक टा पैघ भाषक स्नेह छलय । ओकरा हम खूब बुझनुक विचारक पुवक मानैत रहियैक । तँ ओकरा बास्ते चिन्तितो रहल करी । बचपि ई बात छीक सँ हमहुँ नहि जानि पवित्रक जे आखिर ओ एना कियेक अछि



जो लोक सब ओकरा विषय में कएक ठाम तऽ निश्चय सेहो कऽ बैठ छैक आ जकरा कारखें ओकर मन में कोश पहुँचैत होतैक ।

संयोग सँ, एक दिन प्रातः में हम अपना कोठसीक सोझाँ में दलमनि करैत रही । इपेह चात-सबा सात बजेत रहल होतैक । ओम्हर सँ ओ युवक आवि रहल छल अपन सज्ज चालि-डालि सँ ।

जखन ओ लगन आयल तँ देखला तँ बुझायल जे ओ धाकल अछि आर इहो लागल जे भरिसक कोनो चिन्ता-किरि में ओ राति सुति नहि सकल अछि ।

हम ओकरा आओर कम पहुँचबाक प्रतीक्षा करैत रहलहुँ जखन ओ एकदम लग आवि गेल तँ दिनभर भाव सँ प्रणाम कवलक ।

—'ओरे ओर कहाँ चलल ?' हम ओकरा पुछलियैक ।

—'एहिना...कनी...।' ओ अपन संयमित संकोची स्वर में कहलक आ जाय लागल ।

—'बड़ हड़बड़ी में छऽ भाव ? कियेक जे अपना दुनू भायें एक-एक प्यारी चाहत पीबि लीं । हमरो बलमनि संभलने भऽ रहलए ।' हम आग्रह कमलियैक ।

—'हड़बड़ी कोनो विशेष नहि, परन्तु भाइजी, एकर कोनी जरूरति नहि एखन ।' ओ क्षणभरि ठमकैत बड़ निश्चयता सँ आपाँत कवलक ।

—'तहि जरूरतक कोन बात ? तौ मुँह तँ अबस्में ओ नेने होयबऽ ।' हम पुछलियैक ।

—'हूँ, से तँ हम बहुत ओर तैयार भऽ जाइत छी सब दिन ।' ओ कहलक ।

तखन चाह आयल । दुनू घोटन वसति ओ स्वादि-स्वादिय पीअऽ लगलहुँ ओहि दिन । कोही दिन ओइ युवक दऽ किछु गहीर गप्प सब बूझबा योग्य भेल । ईहो बूझल भेल जे ओ सब राति एक्के ठा सपना सपनाइत अछि । ओहु राति ओ वैह स्वप्न देखैत रहल कि ओकर पिता निम्न में खूब जँर सँ दरयलखिन आ घिघिखान-घिघिबा नाकी दैत उठि गेलखिन । युवकक निम्न दुटि गेलैक । निम्न छीक तखनहि दृढ़लैक जखन कि ओकरा सपना पूरा होइये गेल रहैक । तकरा बाद तँ खोसायल मने ओकरा सुतल पारे नहि लगलैक । निम्न नै भेलैक ।

ओकर सपना विस्तारि में दुटि गेलैक ताहि बात तँ ओ खूब तमसायल रहल ।

पिता मामूली मुँगीक काम करैत छलखिन कोनो कपडा-तेठ कतऽ । ओ सब पुरान कहल इनमनायल किरायाक कोठली में रहैत रहल । सुतल में, छत सँ किछु छोट सन टुकड़ी झड़ि क, पिताक छाती पर खसि पड़ल रहैत । तँ ओकर पिता खूब ओर बरा गेल रहलखिन ।

जाहि राति ओ अपन सपना संपूर्ण नहि देखि पवैत छल तकरा प्रात ओ भरि दिन खूब बेचैन, अनुत्थायल खोसायल रहल । ई सब बात ओ बड़ इमनवारी सँ सुनीलक हमरा ।

ओ चाह घोटि रहल छल, मुदा जेना खूब छट भाव सँ ।

—'आखिर ओ कोन सपना छ ? तौ की देखैत छहक रोज सपना में ?'

—'देखैत छियैक... (ओ किंचित रुकल)... देखैत छियैक जे घरक चार तँपार भऽ गेलए, बेनी फूल सब सात टह-टह भऽ गेलैये, 'बाबू गाम-दूहि' रहल छबि, गरें-गोऽ गरें गोऽ, आ हमर छोटका भाय अपन कटलाही पोखी सब पर भत्ता लगा रहलए कानि रहलए जे ओकरा सबक ताहू बना भऽ रहल छैक, आ सोझें में एकटा खूब समदमर लतामक गाछ छै, ताहि में बहुत राम तारिकेर फरल छैक लुधकल — तकरा महत्वाक खूब नाहि टटा नेना-भुटका लोभायल ओखिये देखैत छैक—टुकुर-टुकुर मुदा ने तोड़ि पावि रहल अछि ने खा पवैये उदास भऽ जाइत अछि सब कच्चा... ओ सब भूखल अछि... फेर देखैत छी—कोठली सँ माँ गीत गाबऽ लगैये...'' रोज दिन ई सपना देखैत छियैक ।

—'फेर ? हम पुछलियैक ।

—'फेर की ?' जेना ओ उत्तेजित भऽ उठय—'सपना पूरा तँ होइअय नहि काल्हियो राति छीक तखने दूहि गेल तिन जे कि माँ गीतक भास उठवैये लेल छल । हमरा स्वप्न में माँक गीतक बड़ प्रतीक्षा रहैये । हमर माँ भरि जीवन कहियो कोनो गीत नहि गाबि सकलए ।'

कहैत-कहैत ओ जेना धाकि गेल ।

ओड़े काज धरि ओ चुपचाप बैसल रहल, फेर एकाएक अकसौच करऽ लागल—'तहि जावि कियेक, हम सपना कियेक देखैत छियै ?' ई बात ओ बड़ बेचैन जकाँ होइत कहलक । जेना ओ कोनो अपराध करैत अछि जे कि ओकरा कथमपि नहि करावाक चाही ।

—'ओ उदास कियेक होइत छऽ ? सपना देखब किछु खराब बात त नहि छैक घंटाकर महान-महान लोक स्वप्नदर्शी भेल छबि । चिन्ता कबीक ?' हम ओकरा अपनत्व सँ बुझावियैक ।

—'नै, से बात नै । दुख ई होइए जे हमर स्वप्न पूरा भइये रहल छल कि दूहि गेल ।'

—'कोनो हर्ष नै । संभव छैक आइ से पूरा भऽ जाय ।' हम आश्वासन देलियैक ।

ओ क्षणैक रहल । फेर उठल, प्रणाम क कऽ चल गेल ।



ठीक दोसरे दिन भोरे-भोरे ओ बिहुँसैत पहुँचल, आ उरसाहू सँ बाजल-  
भाहगी, हम अपन सपना पूरा देखल आइ। आइ हम माँक मोत मुनलहुँ आ नेना-  
मुटका सबकेँ नारिकेर खाहल देखलियै। 'कहत काल ओकरा मुँह पर दिव्य हर्षक  
भाव पसरल छलैक। देखवा योग्य।

ओइ दिन ओ जेना माँक एतवे अनुभव करबऽ हमरा जन आवल रह्य आ  
अमाँरा सँ उतरैत रौद जकाँ बलि गेल रह्य।

फेर हम ओकरा विषय मे मुनलियै जे कतहुँ सँ—कोनो शहर सँ अपना बाबू  
के एक टा बिट्ठी लिखलक्यै जे ओ नीकेँ अछि, बिन्ता नहि करै लेल। ओ एक टा  
कोयला खान मे मजूर भऽ गेल्य।

एहि समाचार के सुनि कऽ हमरा, सबसँ पहिने मोन पड़ि गेल, कोयला खान मे  
अहाँल भेला सँ पहिनेक ओइ पुषक रत्तरत मोर सोन्य देह। ओकर रंग तँ कोयला-  
कारिख पर डबोत जकाँ छिडकीत रहैत छैलैक...

बुढ़ा हमरा ओकर स्वप्नक चिन्ता रह्य जकरा विषय ओ किछु ने लिखने  
रहैक। ओइ पुषक ई स्वप्न तँ कोनो संशीर मनोविश्लेषकेँ जगति पाओत, हमरा  
सन साधारण लोक खाली एही चिन्ता सँ भरल रह्य जे आखिर ओ एहन स्वप्न कियेक  
बेचन करैत अछि ?

एता तहि आव ओतऽ ओकर पड़ोमी सब ओकरा कोन नजरि सँ देखैत छैक।  
हुनका लोकनि केँ केहन आदमी लगैत छनि ओ पुषक ?

ओही दिन मे कहियो एक बेर भोरे ओकर छोटा भाय हाथ मे एक टा  
अलमुनियैक गिलास लेने हमरे दिस सँ जा रहल छलैक त हम ओकरा खोर कपलियैक  
आ पिता आ भायक विषय मे पुछलियैक।

भायका बिट्ठी तँ अगल्यै मुदा ओहि मे अपन पते ने लिखलकियहुँ ओ। बाबू  
कोन ठेकान पता पर लिखयुनि किछुओ ? आइ कालि खूब जोर दुखित छथि पड़ल।  
“कोकरोधी छुटि गेलन्हिँ” ओहि सड़काक अछि तोरा लेलैक आ घर नागि  
गेलैक।

—“हम तोरा संगे चलबऽ लोहर घर। तौ कतऽ जा रहल छ’ एखन ?” हम  
पुछलियैक।

—“आध पाव गायक दूक ताकऽ बाबूक बास्ते।” कहलक आ आगाँ बढ़ि गेल।  
हमरा ओकर पैस भायक स्वप्न मोन पड़ऽ लागल जाहिमे ओकर पिता गाय दूहि रहैत  
छथिन।

हम पूब व्यगता सँ प्रतीक्षा मे रही जे ओ छोडा जल्दी दूध लऽ आपस

आपस। हम एम्हर ओम्हर भवैत-किरैत कएक भितल बिता देलहुँ ओहि दिस तनैत  
जिम्हर सँ ओ छोडा अबै लेल रह्य। नहि जाकि एतेक देरी कियेक भेलैक ?

आ कि नाथत ओ अचैन देखाइ पड़ल। ओ खूब आस्ते-आस्ते आवि रखल  
छल। एहन मन बुझावत रहैक जेना ओ अपना पर बिस आवहिजे ने चाहैत हो।  
मुदा बेमोने डेने अचैत ओ हमरा जन मूड़ी खसा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। हम देखलियै आ  
पुछलियै—“भेटलऽ गायक दूध ?”

ओ विवशता सँ मूड़ी झिलीक—“तँ।” गिलास खाली रहैक। तकरा बाव हम  
ओकरा दिस तकवाक साहस नहि कऽ सकलहुँ। मुँह दोसरे दिस लेने कहलियै—  
“कोनो बात नहि...”

—“घलऽ आइ तोहर घर देखि ली।” हम कहलियैक आ ओकरा साङ्ग भऽ  
गेलहुँ।

भाय देखियो, ओही दिन एखवार सबमे कोयला खानक ओहि भयावह  
दुर्घटनाक विषय मे समाचार सब छल रहैक। जाहि मे बहुत रास खान मजूरक  
मृत्युक आशंका कयल जाइन रहैक। आ हमरा सोसाँ पड़ल पुषक रौमी बूड़ बिना  
जाहि निरीह ओघियै हमरा दिस तकवे छलाह मे तेहन अनन्त भावनाक लहरि  
छलैक जे हमरा लेल एकदम नश्व रह्य। हम तकरा बिसरि नहि सकल छी। मासक  
मास सँ कोयलाक खान सब मे ओइ नौजवान मजूर केँ ताकि रहल छी—अवन ओइ  
किरायाक कोठली मे आनख नहि गेल छी।

आब सँ हमकूब साँक-साँक अनुभव करैत छी जे सब किरायाक कोठली मे  
मृत्यु, दुख जीवन जीन हार लोक, सहोदर भाय होइये।

ओ हमर भाय अछि। □



## एगारहम चिन्ता

प्रिय भाई साहब

आजा रखत छी जे सम्परिवार नीकेँना होयब । हम एकटा खुब संसटिया कार्यसे, (अर्थान् ओहिसे छुट्टी पयबाक लेल) बहुत दिनसेँ पटना आबस चाहि रहल छी, किछु त परिवारी ओसरौहटि आ दुख-विपत्ति, आ बेसी 'नौकरी'क व्यस्तता, ते' कय-कय बेर कार्यक्रम स्थिर भऽ जाइत अछि, फेर अने ठामपर पहुँचि जाइत अछि । लखन सोचैत छिएक ई पटना यात्राक कार्यक्रम बुझाइ छ जे कय मास कि वर्ष पहिने बनौने रहै । ठीक छै । फेर बनायब । एहि फेर कार्यक्रम बनाविब' बला बातपर सत्ये बुझाय लगैए जे हमर बयस सोस धरमसेँ, बेसी भऽ गेल । एतबोपर ठीक छल, मतलब एतबै मानि लेल । परन्तु कहाँ ? बुझाय लगैए जे एक टा हम व्यक्ति—तोख वर्षक पूरा 'वेश' बनि गेल छी आ 'कतहु' जयबाक (ओजना पुरा करबाक) कार्यक्रम बना रहल छी आ सोस वर्ष तैमि गेल छी ।

कोनो एक टा मनुष्यक, सोस वर्षक पूरा 'दिन' भऽ जायब कहल गम्भीर स्याधि भऽ सनैत छैक तकर कल्पना जे, कि अहाँ एही संसारक लोक छी, कऽ सकैत छी । नहि जानि अहाँक तीसम-एकतीसम वर्ष केहुन दृष्टा आ वडिण्यु लगैए, ई बात हम डेरायल कलमे लिखि रहल छी । बहुत दिनसेँ अहाँ नहि निखलौहें भरिख किछु । नहि ने । किएक तेँ संवादक समेटा साथसेँ हमरा लेले' खुब गड़बड़ भऽ गेलैए । यद्यपि हमरालोकनि आइयो ओतवे—'कलुआहू-दममियाहू' छी । मानि तारीख सनैत रहैत छी आ दिहौ कि पटना कि भागलपुरमे नौकरीक समय सेपेव रहैत छी । संभव छैक, अहाँ दिल्ली, पैर, बिलोव जी बुनहा किवा रहिको लेल । प्रभास पिडाकूच आ भीम भाई कोइलस लेल' ।

मूदा कोनो 'दममियाहू' भावुकतामे नहि, एकटा तीस वर्षक वयसक लोकक मानसिकतामे एहि पत्राचारक पैपी उगल यूँ ।

गुन्यस्त शारथी बहस आ व्यवस्थाक फलस्वरूप आवावाय मे खूब शतमीमान सेँ वर्षक वर्ष जीवि लेब हमरालोकनिकेँ आबि गेलब आब । हमरालोकनिकेँ मुदा हमरे गामक 'खनमावकला' बरहीकेँ नहि, जकर दरबज्यापर नित्य धोरैत हर राखीक मरम्मत मे लखन-बसिधा बजरब चालू भऽ जाइत छैक' ? रखन जे कि कहलहुँ 'हमरालोकनि'

केँ, ते' एतऽ प्रयोजन एतबै । अस्तु... जेना, सेहो ई बूझ रहल अछि, एहि चोती ओर लिखैत काज, जे प्रयोजने की ? ई बात बहुत 'टाक' दंगसेँ ने तेँ बूझब' ने कहल जा सकैए ! जखन देशीय संदर्भ मे समग्रतासेँ समाजकेँ देखबाक उपक्रम करी तेँ वैज्ञानिक होयब अपेक्षित कि दार्शनिक होयब, कि समाजशास्त्री—अर्थशास्त्री होयब कि राजनीतिज्ञ कि कवि-साहित्यकार होयब अपेक्षित ?

हम जनैत छी, एकर जबाब देख अहाँक वाध्यता नहि । संभव छैक, एतबा संघटित भऽ कऽ एहि प्रश्नकेँ सेमहि ने जेह अहाँ । किन्तु ई मानब हमरा लेल बहुत स्वाभाविक आ आवश्यक अछि जे हमरा सहो एहि प्रश्नमे अहाँ हमरा सङ्ग छी । आ, हम जेँ कि से मानैत छी तेँ ई पत्र ।

बेसी मैजिनी समालोचक अहाँकेँ (नव-पुरान सभ) समयवर्गीय नागरिक दाम्पत्य-जीवनक कुशल कथाकार कहैत छथि आ ई अपनालोकनिक समाजक ऊपरसेँ उरल-उरल मूदा भीतरसेँ हाहाकार करैत दिन-रातिक भुक्कपी सत्य छैक तेँ एखनो एकटा हमरा अनुभव भेलैए, से लिखि रहल छी । एकरा कथा कहबैक कि समाजक कोनो एक टा स्थिति, नहि कहब, मूदा भेलै से कहैत छी । कहिते नहि छी, दल्ल रखैत छी जे अहाँ एहिपर चहौ तेँ किछु लिखी—अहाँ अपना कौशलसेँ एहि स्थितिक समाधान-कथा कहौ । पटना ई अछि जे

हम पटना आबल छी । आइ साँत बजारे गेल रहौ, जाने । आब कतेक व्यस्त आ सौस-रमजमर भऽ गेलैक अछि छोडो स छोडो बहरमे, से तेँ जनिने छिएक ई तेँ पठने थिक । ऊपर सड़कक बिजली-बत्तीक प्रकाश आ नीचाँ चुनू कात मोटर, फटकदिया आ चोक सभक भागमभाग । किछु पैदल चलनिहार सभ । तावत देखलियेक जे थोमती अंजु भरिख ओकर भतीजी वा बहिन-बेटी आ ओकर छी वर्षक बेटा एक कात वाटे मजकत आबिरहल छलैक । बेटा कने बेसिए अगती बुझायल । मजक बीच मे बड़का डम सभकेँ चाफकातमे कारी उज्जर रंग रंगि कऽ बैसा देल जाइत छैक, ओ छौंछा एकबेक कुदिकऽ साहोपर चढ़ि गेलैक आ माय-माने थोमती अंजु थ्याकुल भऽ कऽ चितिया जकाँ उठलैक आ दोड़िकऽ बेटाक बाँहि पकाँड़ि धींचऽ लामनि सड़कक कात दिस । ओकरा मानमे जान अवैक जेना गाड़ी-नीचाँ बेटा पिचाइमे गेल होइक, आब बाँहि गेल होइक । सड़कक व्यस्त आवा जाहीमे किछु अमंभवो नहि छलैक ।

थोमती अंजुक एना चितित आ थ्याकुल भऽ जायब खुब स्वभाविक छैक । हम ओकरा पछिला पक्षहु वर्षसेँ जनैत छिएक जखन ओ बयानन्द स्कूलमे अठमा कि नीमा क्लासमे पढ़ैत रह्य । असमाप्ती नील कुर्ती, उज्जर सलवार-ओड़नी आ जुना मोजा पहिरिकऽ स्कूलक बस पर चढ़िकऽ जाय-आवय ! बाब बड़ मानैक, भाइ-भाउजि मेहो । पाछाँ भरिख किछु परिवारी विघटन सभ भेलैक । भाइ-भाउजि माय सेँ फराक ।



आप भरिसक रहवे नहि तहि करैक। पाछाँ माय कि भैलैक से नहि कहव, भरिसक मरिये केनेक। मुदा मरबो कयल तँ बड़की बेटी ओतऽ। जतऽ जीवनक अन्तिम दिनमे ओहि बुढ़ियाकेँ अपन बेटा पुतहुसँ गिराधित भऽ कऽ एहि कोरपच्छू अंजुकेँ लग कऽ बेटी-जमाय ओतऽ आबिकऽ रहऽ पड़लैक। हमरा ई बात नीक जकाँ बूझल अछि, एही बेरा तँ अजु कालेजोमे पढ़लक। माने बहिन-बहिनोड आ बहिन बेटी-बाहिन बेटाक सङ रहल। पाछाँ एक दिन कतेक दिनक बाद, एहिना फौजदर रौड बाटे जाइत रही तँ बगैँनएकेँ खूब रहना-गुड़िया गुन्दर साड़ीमे जव-हुब सन करैत रिकशापर चल जा रहल छलस। विशेष बात ओकर स्ववित्तक छलैक-पंथ सन घोष। घोषक गड़िमे खूब टटका बेसी फूलक बेसी छिपलस। भरिसक घर गँगे सिनेमा देखऽ जा रहल छलस। फौजदर रौड पर ई एक टा नीक दृष्य छलैक ओकरा मार्ते, जे ओकरा पछिया कम वर्षसँ अनैल छैक।

बहुत दिनक बाद इहो पता लागल जे श्रीमती अंजु हमर एकटा 'भाभी'क सङ-पाठनी। ओ हमरा कहलनि, आव अंजुकेँ निबड़व कठिन छैक। अंजु अपना बहिनक ओतऽ घुरि आयल अछि। एक टा बेटा छैक। बातहु कोनो स्कूलमे मास्टरनी बनऽ चाहैत अछि। एम० ए० राजनीति शास्त्रमे कयलक पढने विश्वविद्यालयसँ। भरिसक बी० एड० सेहो। मुदा भेटैत नहि छैक नोकरी। हम भाभीकेँ एकबेला सवाल कयल-यनि—“ई बात हमरा आइ धरि बूझल नहि आयल जे अंजुसँ (हमरा अंजुले कहब नीक लगैए) अपन बहिनोड सङ” किएक रहैत अछि? बियाहक बादो बहिनोड संगे रहबाक की मुक्त छैक? अहांक तँ सखी अछि, कहू तँ !”

भाभी कोनो जबाब नहि देलनि। खाली पैह जे ओ सड़की विचित्र छैक। ओकरा मरति होखबाक चाहै। बेटाकेँ कोनो ना भड़ा-सिखा रहल अछि। पति छैक कहाँदो कोनो 'विजनेस मेन' सिटोमे ओकर अपन कारबार छैक। लेकिन सम्बन्ध तँ हुन गोरेमे सैह छैक आव।

—“बोप ककर छैक। कोनो जरूरी तँ नहि जे अहांक मित्र अछि तेँ एकर बोप नहि होइक ?”

—“जे हम कहैत छी? मुदा चरो कोनो खास उचित कहाँ सैत छैक? काज तँ दू वर्ष भऽ गेलैक। एक जहरमे रहैत...”

ताही अंजु दऽ पछिला दिल्ली-यात्रामे भाभी कहलनि जे आव एक प्रकारसँ ठीके छैक। अंजुकेँ आव पटनामे नहि देखि सकबैक। आव ओ पटना छोड़िकऽ चल गेल। कलजेले, ककरा सङ गेल, किएक गेल तेँ नहि जानि। हम तथापि जिन कयलियनि—जे “अहांकेँ ईहो बूझल होइत जे कतऽ गेलस।” मुदा ओ अनठिगबैत

कहलनि जे—“आलमियाँनगर बिस कतहु...”। मुदा आव ओ ओकर पछिया जीवनसँ निश्चिन्त भऽ गेल होइत। एक टा नव-जीवन होइतैक। सबटा नोडि-बाड़िकऽ गेलस।

—एकर मतलब तलाक भऽ गेलैक ?

“नहि तेँ कहाँ भैलैक। एहि अर्थमे निश्चिन्त जे आव ऐ जीवनमे ओकरा अपना बहिनोडक ओतऽ केर मुक्तिक शरण नहि लेब। एकरीक। अहाँ कल्पना कऽ सकैत छी, ई केहन भयावह छैक संभ्य समाजमे एकटा बियाहिलाक अपना बहिनोडक ओतऽ शरणार्थी बनब ? किछु नहि। अहाँ लोकनि लेखक नहि, निवृत्तक नाछड़ि।”—ओ एहि मत्संनिक संग चुप भैल छलीह।

—“मुदा कयइ-तत्ता, रहन-सहन तेँ एकवम राजकुमारिये जकाँ सजैत रहैए। से केर कतज ?”

—“जहिया छली छलैक। चरो तेँ पुर्जा-पाटीवला लोक छैक तेँ। मुदा आव नहि। आइ-काहि नहि। खेर, आव तेँ ओहनी विरमे छलस। भल कयलक। हम तेँ जुलैत छी जे ई निर्णय जीवनक अनिविधता, संघर्ष आ अभ्यासक विरुद्ध तथा-कथित वैवाहिक संबंध विषयमे ओकर अपन ई निर्णय खूब ठीक छैक। जीवि तेँ सकत। बहिनोडक ओतऽ तेँ नहि घूरन...”। ओ अन मन एकटा शुभेच्छु सखी जकाँ सीम हाँडलनि। जेना घाट पर नाव लागि गेल हो...”

आ सैह एतहिमेँ हमर ई विरसा, आइक, समाजक, जीवनक विचारक ई विरसा छुट होइत अछि।

हम एहि दुआरे नचार भऽ गेलहुँ लिखबा लेल जे ओ माने श्रीमती अंजु (जकरा हमरा ‘अंजुला’ कहब नीक लगैए) फौजदर रौड पर ओही रिश जा रहल अछि। व्यस्त दार्शनिक जनमारा खतरामे अपन एक मात्र अगली बेटाकेँ वचबैत।

एहि बेरक दिल्ली यात्रामे भाभी कहने रहल जे आव सँ अहां रौड कि पानिमे अंजुकेँ फौजदर रौडार जाइत कहियो नहि देखि सकबै। ओ नव-जीवन लऽ कऽ सहरसँ आलमियाँनगर बिस कतहु चल गेल अछि।

मुदा आइये सीम केर श्रीमती अंजुला फौजदर रौडपर ओतेक रश्मिगर समयमे अंही बाटे जा रहल अछि। हमरा पछिला कतोक वर्षसँ बूझल अछि जे ओम्हरे ओकर बहिनोडक घर छैक। अहाँ ओ केर ओतहि जा रहल अछि।

ई प्रसंग हम किएक लिखलहुँ अहांकेँ तकर बहुत कोनो ठोस व्याख्या मतमे नहि अछि। मुदा, लिखलहुँ ताहिमे एकटा मानसिक आधार आ खरारत ई अवश्य लागि रहल अछि जे मैथिलीक समासोच्चकण अहांकेँ आधुनिक मध्यवर्गीय नागरिक दाम्पत्य जीवनक कुशल कथाकार मानैत छथि। ई घटना अहांक जानकारीमे पड़िकऽ अपन



कोन अकारिक स्वरूप छरत से नहि कहि । जानी अहाँ । मुदा एहिपर हम कोनो कथा नहि सोचि रहल छी ।

आर करीब करीब ठीके ।

हँ, एक टा पत्र भीम भाइक नामे संलग्न अछि । भेटि जाइत हुनका । डाकक दोष कि हुमर पता-ठेकाना बिखराक, कैक टा चिट्ठी नहि भेटलन्हि । ई पत्र जरूरी, तँ दोसर डाकपिन अहाँके वनाक निश्चिन्त होव चाहैत छी ।

इहि अहाँक

भीम भाइ,

आब तँ बुझाइत अछि जे पञ्चाचार पर्यन्त करव परामर्श । कतहुँ कोनो आम्न लोकक चिट्ठी भेटैत छैक तँ लोक हुलाससँ पिकाए काई ए आ संवीधनक बाव पहिल पाती जे पढ़ैए तहाँसँ 'कुजल-क्षेम' शुरू भऽ जाइत छैक । मसलब जे "तोहर भीजी" बहुत दिनसँ बुझित छथि पहिने भेल जे कार्यक एतेक रास आर आ एके घर-आइतक सबीसँ परिधिमे एतेक रास धीया-पूता तकर फेर दुख-रोग आ अभावसँ दबापल-दबावल कय बेर लोक अँसरो रोगी बनि जाइत अछि । ते' सोलिकऽ मार्कण्डेय डाक्टर तँ देखोलियनि । फेर सोचलहुँ जे दू मास भाव लग पठा दिवनि, देहमे चैन होयनि तँ नीके भऽ जयतीह । दवाई अहाँ धरि सम्भव भेल सङ कऽ बेलियनि । मोनमे छल जे माघ लग बेबी हुब, खम तरहेँ नीक रहतनि । कमसँ कम वेहमे तँ खुब आराम होयतनि । नीके भऽ जयतीह । अपना, बँह गामसँ सकरी, रांकोरसँ मान करैत रहैत छी । अपनो मोन नीके नहि रहैए । ताहिपर मुन्ता-मिन्दुक चिन्ता । बिरतू तँ बूझि पढ़ैए जे हुरवाही करता । एको पाह पढ़ैमे मोने से दैन छैक । नारि-पीठि कऽ भाकि गेलहुँ । कय टा प्रलोभन दऽ कऽ भाकि गेलीहो जे, ओतऽ घुमा अतऽ नीक जकाँ पढ़ल करऽ, ई बस्तु कोनि देवऽ, रोज स्कूल गेल करऽ । मुदा व्यर्थ, कतबो मारि लगैत छैक सीबो फेर नहि लेन जे जायब कान्हि सँ । मुदा फेर बँह । खाली खुरी-कोवारिमे देस बेस रमल । बाड़ी भाँटा कि भेरचाइके' बस्ती ई मे पोखरिसँ पानि पटवैमे बँस मोन लगैत छैक । पढ़ाइक नामपर अस्सी मोन पानि पड़ि जाइत छैक देह पर ।

गामक वातावरणी छीक नहि । अपनेमे असहयोग आ अन्याय । ते' मिन्दुक भविष्य की सोयतनि नहि जाति । खितिये करिबि । सेहो कथी पर ? जे जथा-याल अछि ताहिपर परिवार सेपायत ? आगे जे बु बीबा भूमि अछि तकर आदि सभ, एक कयने रहैत छी तखन तँ कहूना कऽ घर-गृहस्थीक व्यवस्था चलैए आ सीइहली खेतीपर भऽ

जाय तँ लोक धायत की ? जतनी छैक सेहो साह्रिकऽ उपज तखन नै । बँह एह बेर एखन धरि वर्षा नहि भेलैक अछि । कनेको मेघ लगैत छैक तँ कायानयक कायज जोड़ैत-जोड़ैत चिन्ता करऽ लगैत छी जे खेतमे पानि लागत, कोना हर-हरवाहक खेत कऽ कऽ ताक पर सब टा कऽ सकब । मुदा बँह रोदी । पानि नहि । की होयतैक एहि बरे लोकक ! एखन धरि भरि गामक रोपनी समाप्त भऽ जाइत छलैक ! खगता सभ तँ नहि मानतै ! पिनरपक्ष शुरू होयतैक आब । रोज थोड़-बहुत बोधारी होयबक चाही । जे अब दूर भऽ गेलाह, छैर, तनिक तनिक छोड़ल जा सकैए । बादाजी कि दाइके' तँ नहि छोड़ल जयतनि । भऽ गेल, कटू, तेलक भाव मधुवनीमे बौदह टके भऽ गेलैक । बाउर कि दाजि किछु टा तँ घरसँ नहि निकलनिहार ! दरखज्जाक ओलती लगक ओल उपत-डियो तँ तरकारी-तीमनक इतिजाम नहि भऽ सकतैक । मोहरीमे तँ एहन नहि चलय । दणभी लगचियतैक । इष्टदेवताक पूजा कि अने आत खर्च होयतैक । कतअँ होअय ? धीयापूताक सब वस्त्र हे नहिथी होयक । मुदा अन्त्याय मयदुखी ! कतअँ होअय । किछु मांघ काज नहि करैए । अलमाधर नेतकके' छरीने रही, कोन-कोन धरानिये ओहल महग खरक इतिजाम कयने रही बलाठसँ । भऽ गेल पाछिने वर्षसँ चुपऽ लागल । इणोड़ी-टाटक आगे सँ बाट छैक । गाममे करवी पर्यन्त दुर्लभ । कतोक तरहेँ कहिकऽ लाल सँवारिबोझक हिमाव किताव लगाकऽ टाट अन्धवाकऽ घेरवीने रही । खतम । आँगन बेपई होइपर । करी तँ कनऽ सँ करी । सभसँ तँ कहूना मानसिक दुःख-स्वाधि लोक खेपि सकैए कोटीमे चाउर रहै तँ । सेहो तँ छैक नै । मुँहपर तँ जाबी नै लगतैक । नहि लगतैक तँ फेर एतबे दरमाइमे एतेक टा अडवाल चलय कोना । गृही सभसँ सोचैत-मोचैत मोन बड़ थकि गेलय । पहिने माइकिल सँ सकरी चल जाइ, किछु ब्रम्हचर्यो जे कार्य । आब साहमे जे होइत अछि । खैर, इष्टदेवताक जे इच्छा होयतनि मे होयतैक । कनेक माघ धनु ?

एम्हर तोहर भीजी दऽ तार आयल जे मोन खराब छनि । जाकऽ नामे लऽ अन्तियनिहो । फेरसँ सब टा जांच भेलनिहो । एतम-ने सेहो । मुदा राफ-राफ किछु रोने मे कायम करै छै हापटर । एम्हर देहक स्थिति ई, जे ऊज्वर । एक डोप शोषित जेना देहमे नहि । भानम-भान पर्यन्त ममलेके' करऽ पढ़ैत छैक । ओकरा बुने सगरी नै छैक मुदा उपाय की ? नहि देखल जाइत छनि तँ टापरल-टापरल जाइत छथि भानसमे । ई कोना चलय आ कतिक दिन से नहि जाति । मोन फेर घोर-घोर अछि ।

ताहुँ कोनो चिट्ठी नै लिखलऽ । कोना छैक धीया-पूता सभ ? बीआलिनिके' मुनलियनि जे बड़ कमजोर भऽ गेल छथि बच्चो सभ छै बँह । तँ ओतऽ तँ गुभीरा हेतऽ, सभके' नीक जकाँ देखाकऽ छीक सँ दवाई कराबक चाही ।



अपने तीरे, सेहो मुनलीं जे बीमार रहैत छः। बेहपर ध्यान देवाक चाही। बीमारीकेँ अनटिपावक नहि चाहै। हमरा लोकनिकेँ देहे तँ पुजी धिक। वैह जे खसि पड़ल तँ परिवारे भितरि जाय नै ! तँ अनठवहक नहि कोनो नीक डाक्टरसँ जांच कराकऽ दवाई खाह।

कलशस्थापना आदि रहल छैक। सब वक्तासभकेँ लऽ कऽ गाम आबिजइहऽ। सँ छुट्टी होअहु पहिने तँ कम सँ कम निशा पूजा धरि तँ अखरे सभ क्यो आबि जाइ छाह। छीपा-पूजासभ निशा पूजा देखत। बाबूजी काकाकेँ ई बड़ जरूरी लगैत छलन्हि जे परिवारक लोक भरि बसै कतहु रहब मोकरी-चाकरी, मुदा निशा पूजा धरिमे अवश्य उपस्थित रहब इच्छवताक पुजामे।

चिन्ता नहि करिहऽ। कहिना धरि अर्ब जगवह, से लिखि दिहऽ पहिने। तोरा धिड़डी लिखवानि किएक एतेक आलस होइत छह, नहि जानि। एतेक-एतेक दिन धरि लोकक कुशल-अंम नहि जानि सकला पर लोककेँ कतेक चिन्ता होइत छैक से बुझवाक चाहियऽ नै।

ई पत्र हमरा गामसँ हमर छोटका भैयाक अछि भाइ।

माने हमरो गाम अछि। एक घर छलव। माँ छवि, पिता छलाह। से सभ टा आब समाप्त अछि। अर्थात् आव नहि अछि। गाम तँ अछि। सौन सेहो ओहीसँ रोधाएल अछि। प्राय लागल माछ जकाँ जतया दूर धरि बंसीक ताग जाइत छैक, कोछरिमे तरेतर घाघलो भऽ कऽ यवना मोने बेष्टा करैत छी तँ बंसीमे आर सँवायल जाइत छी, कारण, बंसीक छीप खुब नीक जकाँ भीड़पर पाछिमे कऽ बंसी खेलनिहार कतहु गेल अछि। ई निविवाद छैक जे ओ आओल आ हमरा छीपिकऽ ऊपर कऽ लेत। ई तँ भेल नियति। मुदा निवर्तिवादी लोकक निपति नहि। अहाँक ओ कविता जे अछि—“निवर्तिक ई धूरी अछि”

ओ संसार नहि भेटैए आव कतहु। आव ओ परिस्थिति नहि भेटैए कतहु। पहिला बेर भनसा घरक असीरा पर बैसलीं। भीजी वेस नीक जकाँ राह कपलहा फावरक रोटी पकाकऽ तोन-बेल अँधार, हरिपर मेरवाइ देलनि। खाय बैसलीं। दूइ-कसर तँ खयने हाँयव कि बेसीसँ बेसी बरख तीनिहँ-चारिक एक टा गोर-नार रोमी बन्धा मैन-मुर्चल तैरह ठाम फाटल गँधी पहिरने, जाहिसे ओकर पेट डुलकैत रहैक, चुपचाप आँधिकऽ नगेमे अलती लग ठहऽ भऽ गेल। हम भीजीकेँ पुछलिनि, ककर बरखा छैक ई ? ओ उधियायल मात्सर्व ओकर जे परिचय देलनि से जेमा करैत बरखि गेल। अर्प इ जेवा ओकर बेटा छिएक ! एहिना बोआकऽ अँगने-अँगने घूमिकऽ पेट भरै छैक ? एकरे बापके बुद्धितारावण भा मात्साहेब स्कूलमे दुर्गास्थानमे पढ़ैक हेतु जयबा खेल कतेक बेष्टा कयने रहिएक जे पढ़ि-लिखि लैक किछु। नहि पड़लक। जेठ भाइ

कतअबसँ एकटा महोस कीनि अनलकैक आ एकर वाप ओकर सरवाही करऽ लागल। विविध दुर्भाग्य !

—“आब तँ एहन भऽ गेलैक ई। दुइए-तीन मास पहिने तेहन सुखर मोटावल मोटावल छलैक जे देखिनिके तँ किछु नै कुरैत। मुनर। आब तँ रोगी भऽ गेलैए। पेट एतेक टा उमि कऽ भऽ गेलैए। पिल्ली छैक कि की ? के देखीक ? लाय-रीपक बेरमे डेनि कऽ एहिना पठाई जाइत छैक, मुसि पड़ैए” ओ जेमा चुप, ओलतीमे डाइ। हमरा बुले कओर उठाकऽ मुँह धरि लऽ जायब कहिन। भीजी ओकरा बजाकऽ जाय देखिन।

मुदा अहाँ कहु भाइ, भीख दऽ कऽ जीवन आ समाज बदलव जा सकैए ? कहियो ? एतेक व्यापक ‘वाल्सरोम’ कहन रहस्य युवा-समाजक भविष्य बनि सकैए ? आब तँ एक वर्ष आर बाँड़ गेल होयतैक ओकर वयस। वाप बेकारीमे जिकात भाड पीवैत छैक आ सबतुरिया सभ सङ्गे ‘ग्राम सुधार कमिटी’ बनैए। ककरोपर पंचैती बैठबैए, कौनो मुँहदुस्वर मोक्षकेँ अकारण बँड वैए। अपन ग्राम-सुधार समितिकेँ भीसभ कखनी ‘युवा कांग्रेस’क ग्राम-शाखा, कखनी छात्रसंघ समितिकेँ सरल सभ-कमिटी कहैए”

बहुत नीजबान अछि। संगले-मंगल कऽ कीर्तन करैए” कखनो जाति-पाति न तोड़बाक चाही ताहि पर सभा करैए। कखनोप गल्लाहा रूपा नहि दऽ सकलापर कल्याणक दरवाजजापर सँ बरकेँ घुरा अने जाइए”

तँ, गाममे अहाँ गाम जकाँ बहुत रास बेरोजगार अछि। कौनो बाट नै छैक ककरो। ई ग्राम, लोक कहैए जे मिथिलाक सांस्कृतिक वैभवक केन्द्र छल। मिथिलकेँ गौरवन्वित करैत छल, विद्वानसँ लऽ आचार-विचार समे”।

पछिला तीस वर्षमे एहि गाममे क्यो एहन ‘राजमेला’ नहि भेल जे मधुबनी-बाट परक मुगलकालीन टुटल-भग्नछल ‘अइठरवा’ प्लक परम्पति पर्यन्त करा सकैत, सड़क, बिजली आ आत वस्तु तँ जाय धिमीक आ ने कोनो तेहन लोकक बेटा-बेटासँ हमरा गामक बेटा कि बेटीकेँ विवाहे भेलेक जे सरकारक बड़का अधिकार हो जे अपन बेटा कि बेटीक मात्सर्यमे हमरो गाम, थोड़े सरकारी ‘सुभीता’ सँति कऽ पठा बितय। हमर गामकेँ भेटलैक अछि हमरा सभ पुच्छ लेखक।

मुदा, अहाँ गाममे मुनलीहुँ जे आव प्रायः ई सभ सुभीता भऽ गेल अछि एबकी सड़क, बिजली”

हमरा गाममे एखनो दशमी पर्यन्तमे बुढ़ालोकनिकेँ भरि-भरि जाँध चाल-पानि हलिकऽ दुर्गास्थान जाय पड़ैत छनि। अहाँ सोचब खता बाटे किएक जाइत जाइ छथि, मुदा हमरा गामक ‘सड़के खता छैक जे’ बौचमे मुनलहुँ इमर्जन्तीमे श्रीवे जे मुखियाकेँ



कय दन हजार टाका भेटलैक सङ्कक गरमतिक लेल ! एक-दू ठाम खाना भरयो कयलै... एके भादमे केर काठपर, छोट-छोट डबरा कायम... लोकोके कहि बेल गेलैक एते अनुदान भेटल रहैक ।

ते गाम एक टा धर्मसंकटी भाव-बोध जकां गर्दिन मोकने रहैत अछि । होइए जे आव गाम महि... केर कहियो नहि...'

एहनेमे गामसँ छोटका भैयाक चिट्ठी हमरा, कि छोटकी भौजीक चिट्ठी हमरा स्वीके आबि आइए—'एते-एते बित्तसँ चिट्ठी किएक बन्द कयने छऽ ? बिस्ताने छी, घोषा-पूता कोना छैक से ?'

आ, हमर गाम-बोध, पूजा-कालक-बडका बाबाक संशोच्चार जकां जीवन भऽ आइत अछि आ चानन ककाक मुगसाठ जकां... बडका माय, काकी, छोटकी काकी, गोरनी काकी आ हमर माँ—दुर्गापाठ सुनैत ओलोकनि आ घुमनक मुगधसँ व्याप्त अग्निसंभरि टोल...'

माँ कहय—'हम जाइछी काठ मुगस । घरमे जिजिर चडा देनिबैए ! भूख लागह तँ काहि कऽ खा निहऽ ।'

एम्हरे मुनलीहँ चानन काका सेहो बमामँ तवाह छथि । बड कष्टमे, शरीर, मोने, सब तरहेँ ।

जाहि नहि, हमरा मानके की भऽ गेलैए ? हमरे की भऽ गेलए ?

वैसी गाम किएक 'बुलाइत' रहैए ?

भाइ, ई एना बुलाइत रहब की छैक ?

अहाँ अपना गामपर कोनो कविता-एक टा सम्पूर्ण कविता सोचि रहल छी ? केर कखनोका हम ईहो सोचैत छिएक जे अहाँ यदि कयाकार रहितहुँ तँ एहि नम रिश्तिके कोना निवृत्तिके ?

हँ, भाइ, एक टा कारक आर । ई चिट्ठी प्रभावके भेट जावनि । अहाँ-लोकिन, अवश्य डाकबंगला बगक चाह दीकान वा फेजर रोडक मोदीमे बैसित होयत किछु श्रम कऽ...'

मिष्ट प्रभाव,

बीचमे एक बेर दू दिनक बास्ते बटना गेल रही । तँ अपना पिताक घरखीमे गाम गेल रहै । आज न कय मास भेलैक । हमरो बाबूक बरखी एम्हरे किछु मास पूर्व भेलनिहँ । सोरा त बूझल छीक—हम नहि जा सकलहुँ । नहि किएक गेलहुँ, तकर कोनो साफ-साफ कारणां नहि बूझल अछि । मुदा, नहि गेलहुँ । छोटका भैया रण्ट भेलाह, समाजमे किछु गोटे हमरापर 'आलोचको' बनल होयताह । वनधु । मुनलहुँ जे

हुनू भाइ अपना-अपना घर-असोरापर बेल भव्य ब्राह्मण भोज कयलनि । एक भाइ विभवसँ, एक भाइ व्यवहार सँ । ठीके छनि । सम्भव, हमर स्वर्गीय पिताके पठि आसन होइनि बेदा लोकनिक ई भव्य-भोज । एहन महो आ अकालमे एतना वागविसँ आयोजित ई भोज हुनका नीक लागल होइनि ! भऽ सकैए अपन छोटका बेदा अर्थात् हमरा पर चिन्ता भेल होइनि—बुझि पईए, ओहिना अभाव आ कष्टमे अछि... माफी देने होथि, नहि कहबौ !

मुदा हमरा तँ ओहना गाम जयबाक कोनो प्रश्न नहि छल । तोरा जकां 'सामन्ती उत्साहक' ओहना हमरा स्वभावमे गुरुहे सँ कमी अछि । तो' त हजार बजारक व्यवस्था कऽ कऽ बरखी कऽ अबै छँ पिराक । नहि जानि अपन आसवनीय सँ कि 'कर्जो-जर्जो' कऽ कऽ ? पहिचक सम्भावना तँ ओना हमरा कर्म बुझाइत अछि । जे हो ।

हमर तँ एहन भोज-भातमे ते आस्था अछि ने अहि ! तकर कारणो छैक । शोक बरखी रहनि । नवे-नवे लोकरी घबने रही । छोटका भैया कहलाखन—आब सँ दिनको कमाइसँ नाके भोज होउक । हम टाका पटोलियनि सँ अवश्य, मुदा भोज लेल नाहि । हमरा भारी पाखण्ड समैए ई-खाली ब्राह्मण भोजन । ब्राह्मणो केहन तँ जीवनका भरक कोठीमे स्वयं कय-कय वर्षक मै'ह्रिका चाडर मोनक मोन घबल रहैत हो... से हम लिखने रहियनि जे शोक उपलक्ष्यमे ई टाका खर्च हो अवश्य, मुदा भोज-भातमे नहि । आ हम अपन विचारो लिखने रहियनि जे कोना खर्च हो । ई विचार एतना गामक लोकके अरमभ केहन कठिन छैक, से तँ बुझने छीक... किछु गोटे द्वारा हमरा, 'नै खुसैत छथिन', 'जेना छथिन', तँ 'ई छथि' 'ओ छथि' कहल गेल, 'अशौक्षिक बात-विचारक घोषित कयल गेल...' । हमर पिता कहलाखन—'नै, ठीक छैक । माय हुनकर, ओ यदि अपन कर्तव्य एहिना करऽ चाहैत छथि तँ आपत्ति की ?' छोटका भैयाके आदेश भेलनि—'विश्रलखन अछि, तदनुकूल व्यवस्था कऽ दहूत ।'

ताही मुख विधारक प्रगतिशील पिताक आदमे जखन अपने भाषक कर्जखोर होवऽ पईत छैक लोकके तँ विवम्बना नहि कही एकरा तँ आर की ? वैहू भाइ पिताक आदमे अधिकाल टाकाक व्यवस्था कयलनि, खर्च-बर्च भेलैक । पांच गोटे पंचक गोसाँ (कयनि छलाह ओ लोकनि पिता, भाइ मभ, ओहि प्रसंग पंच ! ) आदक स्वस्वक निश्चय भेलासँ पूर्व हमरा हुनू छोट भाइसँ ई वचन भऽ लेल गेल छल जे एखन श्रावमे टाका नहि अछि, मुदा टाकाक व्यवस्था कऽ कऽ एक तेहाइ अपना-अपना हिस्साक टाका जेठ-जगकेँ घुरा देवनि ।

वसित हमरा एकदम नै छल ई आइ-भाइ । मुदा, पिताक शोक आ सामाजिक, पारिवारिक कठिण अंतरि आ दशावक वातावरणो विविध होइत छैक...



फेर इही मोनमे भेल जे लोक हमर विचार नहि बुझत, बुझत ई जे फला बसुक छोड़का  
बेटा केहन कंडूम आ कुपूज भेलनि !

कुपूज बुझल जायब असह्य छल, अछि; तेँ सभ टा बर्त—अधिरु आदरनीय  
अजलक 'अनुबंध' चुपचाप स्वीकारऽ पड़ल छल—'पिताक आदर सम्पन्न भेल छलनि  
आ भव्य भोज भेल छलनि'—'दावशाहक दोसरे बित सेया पंच सभकेँ आमंत्रित कऽ कऽ  
घरमे बैसोने रहल। माय, पिता, माम बड़ अपमानजनक आ स्वर्गीय पिताक जीवन  
भरिक अजिन प्रतिष्ठाक अपमान बुझायल'—'हृत्प्रभ भेल ओहिना बैसल रहलहुँ जेना  
महाराजक कहचरीपर रैयत सभ'—'रहल छलैक ताहि दिन'—'मुदा छोड़'—'ईसभ  
घटना तेँ तोरा खूब बुझल छीक। मोने धौल भऽ गेलैक। फला नामक फला बाबूक  
भैयारी'—'चिता तेथनि बापक आछक टाका लेल, चिता भेलनि'—

ओसभ हमरा परिवारक कुलीन-खुद इतिहासमे एक टा भयावह कर्नक जकाँ  
बुझलैक। एक टा विचित्र स्थिति ई छलैक जे एहिमे हमरा नामक समाजक कोनो अति  
नहि भेलैक, एतऽ धरि जे एक टा कोनो व्यक्तिबोध किछु हानि नहि भेलैक। तथानि  
कर्तव्य एहि दुजारे जे हमर स्वर्गीय पिताक मर्वाक सभटा प्रतिकूल भेलनि। कुलीन  
परिवार-परम्परामे कर्नक। एहि युगमे, एहि 75-77 ई० मे पर्यंत हुनक स्थान  
छलनि भौयारीक सीमंतस्थ आ एकल भावना। संभव छैक ? जतऽ साय पाइ सभ टा  
कऽ रहल छैक आ करा रहल छैक ? नमुअव, पाइ, जमीन आ दोकान भऽ गेल अछि ?  
जीवनक सभ महान मूल्य समुद्रमे—'स्वाभाविक छैक जे हमर एहि बोकालदारीमे कोनो  
सहमति आ सहयोग नहि रहल, ने अछि'—'तेँ कर्नक टाकाक अदायगीमे हमर भैयाक  
नामे अपन हिस्सामेमे जमीन रजिस्ट्री करवाक छल'—'कचहरी आ जमीन रजिस्ट्रीमे  
तेहन अपमानक आ अपराधजनित भयक बोध होइए जे मोन फड़ल जै कथयक। से  
कि एक नहि कथयक ?

तोँ पाठक आ आलोचक वर्गमे एही नामक सामग्री संस्कार आ नागरिक  
ग्रामीण आधुनिकताक समस्यी कथाविलपीक रूपमे स्वीकृत छै तेँ हमरा जानि नहि  
कि एक आगल जे अपन परिवार नाम आ तकर परिस्थिति तोरा सुनिषी।

एहिपर कोनो कथा कहवाक हमरा लेल गुंजाइरी नहि अछि। कारण जे  
हमरा तेँ स्वयं एकर पात्र बनऽ पड़ल ! असम्भव !

भैया हमरा वास्ते बहुत कयने छथि जेना एक टा जेठ भाइ अपन छोट भाइ  
लेल कऽ सजैत अछि। एक बेर भगवनी भऽ गेल रहथि 58-59 ई०क मध्य धरिक।  
भरि-भरि राति खिरमामे जागल बैसल रहथि, मोने अछि—

आइ भैयाक चिट्ठी केर आयल अछि—'जे किछु परिवारिक बटवारा  
संजो लई-गई बीचमे छै ते आबि कऽ तोशर जायब बहुत आवश्यक'—

एहि चिट्ठीक मतलब हम बुझैत छिएक—'कर्नक अदायगीमे हुनका जे हम  
छेक देने छियनि, तकर रजिस्ट्री नहि भेल छैक। उपजा तऽ रहल छथि। 'ताहिसेँ  
मोन निश्चिन्त नहि छनि। चाहैत छथि जे कानूनी रूपमे ठीक-ठाक भऽ जाइक माने  
हम लिखिबे दिबनि ! कहीं हमर मोन बर्तल गेल आ जमीन पर दावा कऽ दिबनि !'  
यैह व्यवस्था चाहियनि ! हमहुँ तोचैत छिएक, स्वर्गीय माँ, पिताक, भैया सवहक आ  
अपन सम्बन्ध, समयक प्रवाह आ जीवनक तब-तब समस्या सब संबंधक जोड़। कतेक  
रास बात अनर्गल आवि गेलैए जे लोक 'आदरपूर्वक' स्वीकारने जा रहल अछि। ई  
कतई, किएक अवश्यैक अछि एहन असुरक्षा आ अविश्वास ?

हमरो मुख्य समस्या वैह 'सम्बन्ध' अछि परस्पर सम्बन्धक विविष्ट मानवीय  
संवेदनाक खुब विस्तृत धरातल। किएक लोक ओकरा छोड़िकऽ भाइक स्थान छोड़िकऽ  
दोकान भऽ जाइत अछि ?

तोरा तेँ बुझलै छीक, पिताक लेलाक बाद सभ किछक समाप्त छैक हमरा  
घरमे। दू ठाम चुहिय। दू स्थान, बैतनिहारो लोकनि दू। बीच आइनेमे टाट—  
केहन घोरित अपमान बुझावत छैक ? आ लोक एकरा एना बुझबैए—'ई सभ सदा  
तेँ भऽ अर्जनक अछि, भैयारीमे बंटवारा, एकरा बान्ते कयो दुःख करय ?'

हमहुँ बुझैत छिएक बंटवारा। मुदा कि सम्बन्धी समाप्त ? या, यदि नैह तेँ  
कोन मूल्य पर ? रूपा आ जमीन दुजारे ? ई दुनु एतना शमक, जे लोकक सभटा  
मौलिक बान्तेकेँ गाड़ि देअय ?

जेना कहनिषी, खूब अपमानजनक लखै रहै। मुदा कोनो रस्ता नै छैक।  
भैया सभ टा रास्ता बन्द करपर लागल छथि, से तेँ बुझावत अछि, मुदा कोन  
अभाव आ कष्टमे से नहि बुझावत अछि ? हम कर्नल छै, एक बित छलनि, खूब  
समस्या छलनि आ परमाहा कम भेटनि। अभाव रहनि। मुदा ओइ ? तखन ? मात्र  
आरो मात्र आरो ?

भैयाक तार-चिट्ठी-तार अखिले रहैत अछि। जहियातेँ घर-घरासोक बंटवारा  
भेलय ई घटना साधारण छैक। फेर आयल अछि। एहि बेर स्वयं नहि लिखैत  
छथि—'लिखबयैत छथि अपन अस्वस्थता वऽ आ हमरा सब बकियाँता किछु रूपा दऽ  
जे दवाइ होयतनि।

एकतेँ चिट्ठी खूब बेरी से भेटल अछि। दिल्ली चल गेल रही ! भैया दुखित  
रहैत छथि, चिन्ता भेल। पाइ तेँ तत्कात पठा सवादाक हवातिमे नहि छी। भैयासेँ  
उत्कृष्ट होइ लेल कोनो मोगल सुबजोरत टाका सेवऽ पड़त। एतऽ तेँ सेहो संभव नहि।



फेर ईहो होइत अछि मोनमे जे रूपाक अभावमे भैयाक ब्याह सकल होयतनि ? अतभव ! मोन फेर ईहो धिक्कारैए एकर मतलब जे भैया मात्र रूपाके लेल लिखल निहँ, अपन बीमारीक खबरि नहि देखनिहँ... एकटा विविध विधावस्तु परिस्थिति छैक, सम्बन्धक शेष सामग्री बोधक ब्याव आ एकदमसँ बदलि चुकल आयुक्त जीवनगत सुख आ संवेदनाक दुइल परिवेश... बड़ विविध छैक। भैया एक टा सम्बन्धी द्वारा फेर सवेह समाव देलनिहँ।

एकटा अभिनीत मेहो—“दुखित रहौ, फल्लोके तँ कम सँ कम एतबो चित्ता भेलनि जे मुनोके पठाकऽ जिज्ञासा नै कयलनि। आ, फल्लो टाका तँ नहिबै, पक्क जबाब तक नहि देलनि... आबि (एहिज फल्लो माने छोटका भैया आ दोसर फल्लो माने हम...), कतेक छुपी भेल चलू भने एके रती भैयाके ई अपेक्षा छेल छनि। हुनक दुख सकसीकक हुनका भाव-परिवारक अपेक्षा बाँचल छनि? मुदा, एहि टेकीक भूकभूकायबसँ कलहु सीसे अन्हार कटप ?

मोन पहुँए अन्हारिया राति ! बाबूक लडाउ के खटर खटर... एक हाथमे छडी, लोटा, लाउटेन, दोसर हाथमे छोटका डोल आ टीबै ! जखन वर्षा कि वर्षाक संभावना तँ बाबू छत्ता सेहो मेथि संगमे ! बाबू कलपर जा रहल छथि, कहियो कऽ निखबद रातिमे बाबूके एना पोखरि दिस जाइत तिन दूइल रहलपर पछवारी कातर अपना कोठलीदेसँ बड़का भातिन पुछथिन—“पेट गड़बड़ अछि कि बाबू काका ?”

—“नहि। किछु मरोड़ जकाँ दैलक। तखन तँ जाबत एक बेर संवेह नहि छाँडा सी, तिन नहि होयत।” मुदा एतेक रातिके अपना भातिनक ई पुछि लेब हुनका खूब आत्मबल बढ़बैत छलनि। भरि जीवत परदेमे रहलाह। बूढ़ावस्था मे जहरिया लोकक नाममे जे जीवन भऽ जाइत छैक, तेहते छलनि ! अपन केटा सब हरदम तँ बाहरै...

आब तँ बाबू कोना जयताह ? आंगनमे टाट लागल छनि। बँटवाराके कल, देखावा टाटक ओहि कात पड़ि गेलक।

जाब दे, हम किछु बेसिये भावनामे आबि गेलौहँ। पिताक प्रसंग आबि गेल तँ। आब ओ नहि छथि। ओ जखन ई तयका घर बनबौलनि (जकरा ओ गुमटी टाड़ करव कहथिन...) तँ सोचनो मे छल होयताह जे पैह पाँच कोठली पक्काक घर समटा आपसी सीमनस्पक, अलटि-ससावक जड़ि भऽ जायत, भरि जखन बीमारी सीमनस्पक सगना उड़ि जायत आ एक टा 'कोठली' लेल चिन्ता जायत...

मुदा, ईहो तँ भरिसक तोरा मुनसे होयतीक। भरि मिथिला तँ सम्बन्धे सम्बन्ध। नुकायल की छैक बाब ?

हूँ, एतबा चित्ता ओ दुख जकर होइए जे किष्क नहि हमर ओ बाइस कि चौबीस हाथक पुरने फुसक घर बाँचल, जकरा हमर भाँ स्वयं अपने हाथे जगिया माय-सकुत्ती माय तंगे लेबने रहब आ जकर असौरापर तीन टा सोझर हरदम लागल रहैत रहैक, चार हरदम चुबैत रहैक आ दुपहरियामे भाँ आइतमे देल मकै कि मड़आ कि घानक प्यार, ओगरेत ओगरेत चौखटिमे ओठङल ओठङल भूति रहैत छलय...। दूइल, चुबैत पर छल हमरा लोकनिक खड़क। मुदा कम रँ कम माममे एक टा चिट्ठी जरूर माँक बच्चाक (माने भैयाक) डाकपिन बऽ जाय हमरा लोकनिके जाहिमे माँक बच्चाक की हाल छैक तकर चिन्ता रहैत छलैक आ भाँओ कए बेर छुनका लबा देल करब कोधमे जे एखन भरि बच्चाकेँ किष्क ते पोस्टकार्ड लिखि देलहुन, कतेक दिनसँ चिट्ठी नहि भेटल-ए, मोन ब्याकुल अछि।

आइ गामक अर्थ कोना बदलि गेल अछि हमरा लेल ! हमरा बेर-बेर होइए जे पैह फुसक घर होयब जकर अतीरापर माँक उकासी करैत स्वर फैलैत रहैक आ समटा जुड़ल-टुड़ल एक्के अस्तित्वक मुख-मुख, वर्तमान भाविष्य जकाँ लगीत रहैक।

मुदा कहाँ ? गाम तँ गाम नहि आब। जे पिताक लडाउके खटर-खटर मे माँक दमाक उकासी। आब तँ पाँच टा पक्का कोठलीक बाहरसँ एक मकान (भीतरसँ खोराक फाँक)...

हमरा नहि सुझाइन अछि जे तोरा ऐतेक रास ई सब लिखबाक आधार-प्रेरणा की ? बहुत दिनसँ भरिसक तोरो कोना कथा तथा प्रकाशित नहि देखि रहल छी ?

पुनः—

फेर एकटा पत्र पता लिखलाह पड़लिये। बूझमे तत्काल आबि गेल। भैयाक चिट्ठी। चिट्ठी पढ़बामे भय जकाँ भऽ जाइत अछि। एहि बीचमे भैयाक चिट्ठी भेटबाक मतलबे रूपाक तपोदा आ जमीनक रजिस्ट्री। भेल जे राखि दिएक। मुदा तत्काल संभवहूँ, कतेक काल नहि पढ़ब ! पढ़ी।

अनदेसीय खोलऽ बाहनिहँक अछि तँ अनायास खुनि गेलै। लिखल छैक—  
बि०.....  
मुभातीबाँद !

तोहर परीक्षा-कल वेबि कऽ बड़ हर्ष भेलए। एहिना जीवनमे प्रगति करैत बाह से आशीर्वाद !

हम अकबका मेजहूँ। जे तँ हम कोनो परीक्षा पास कयलौहँ एहि बीच, जे आज कोनो प्रगति। दोसर जे ई पत्र भैयाक भऽ कोना सकैए ? पूरा पत्र देखलिक अछि। पत्र 28 दिसम्बर 67 ई०क छैक। पत्र भैयाक छैक।



## मनुष्य आ गोबर

महानवमी 10 अक्टूबर 1978 ई० एफटा भारतीय गामक प्रमग ई विवरण अछि । राम मिथिलाक । जकरा नार दिन कहल जाइत पंचकोसी । जीवनक अंतिम दुर्गन्धन सहित्कार, प्रभावत भेष बूढ़-पुरान आइसी गैह कहैत छविन-पंचकोसी । पैकरा हेतु प्राचीन संस्कृतिक गौरव-धीधर्म सीद्धित रहैत छथि । हुनका मभके अंगरेजी राजक सन्ती देखल छनि आ एहि जीम-रनीस वर्षक स्वतंत्र प्रजातंत्री राजक महगी सेहो ।

एहि किछु वर्षमे बड़ विकास कार्य लागू भेलैक । जेकरा राम भाषण, प्रकाशन मभ अत्यंत सशर्ता एकरे प्रमाण साहित्यक वस्तु अछि ।

किनको मने—“गाम-गाम खूब आसी बड़लैए, किएक तँ आव भिखराक बेटाके” पर्यंत टेरेतिनक बसट पहिरने देखलैक” किनको मने—अंगीर बड़लैए आसी । एफटा जेहो पुरना मिडिल स्कूल चलैत छल से तँ चलाओल पारे ते खपलनि किनकी बुते, देवालक फनेवा पर्यंत मुखियाजीक कोठी सभक मोरा तर चल गेलैक आ साँज भात बेसवाक चबुनरा बनि गेलन्हि...”

—“आ सड़क ? बिजली ?” बयो नवोत्साही गृवक फानि कऽ उदाहरण दीसलाह ।

ई घटना वा विचार सीधे देखक कोनो गामक भऽ सकैए । ओना हम गमेश गुंजन, जे कि यहाँ लोकनिक-मैथिलीक लेखक छी तँ अहाँ एकरा मिथिलाक कोनो गाम मानि लियऽ । अपने मने नाम राखि लिखऽ, मरिसक से नाम एकदम फिट बैसत ।

तँ ओही एक गाममे आव एकटा सड़क बनलए । ई सड़क बेस चौङगर आ बहीरगर सड़क ताहि दिनक डिस्ट्रिक्ट बोर्डक छलैक । एहि सड़क पर कय सड़क सँ प्रतिपानी बनल बैलगाड़ीक एक-एक टा लीख बूज् जे एक-एक टा नाखी जकाँ रहैक । निधति ई जे डेढ़ कोत पर रेलवे स्टेशनक ताँगा-रिक्शावाला ओहि गाममे अवकाक रुपा बड़ मोर्बिकल तँ बड़ महग रुपसँ करैक, तेहन जे बाबूग-भैया लोकनि बुते संभव । सेहो सभ मौसिम मे नहि ।

से सड़क एहि बेरक ‘महम दी, काम लो’ अर्थात् गृहमक बोनि दऽ क सड़क निर्माणक सरकारी योजनामे एह सड़कक दिन फिरलै । आ माटि चड़ाओल गेलै । खाधि

बाद अँत सड़कक सभमे खनि गेलै । एहनमे जेना कि होइ छैक, प्राचीनमे किछु मोटेक बेटा उपकृत नन कमे दुर्गन्धानमे लऽ कऽ बाधक बान्ह छरि भाषण करथि—“ई मुखियाजी गामकेँ स्वयं बला देनाह । की देरी । कऽ गेल एही साम धरि सड़क बीच भऽ जायत गाममे गहर धरि रिक्शा मोटर, बस बिन राति पोड़ैत रहत । फ्रैत रह धरि गृहका भरण । पहिने जकाँ नहि जे फरोमे निकलव परामव भवधारि जेतजी नै जाय-आसी । अर्थात् धन्य ई मुखियाजी गामकेँ स्वयं...”

रोमर कोनो अग्र्य युवा डाह-पडाई ओकरा कंठ मोर्के पर नैकार—“दुर छी । अहाँ नै मुखियाक दाल लटिहै । सभटा सरकारी गृहम अहाँक मुखियाक पैदमे आ अहाँ मभ-मनक कोठीमे... । स्वयं बनवैत छथिन । जतना गृहम सरकार देलकए बनवावे पैह एतने सड़क बनै छै ? खाधि-बुधिके अरिकऽ कनी सोझ कऽ देखथिनतँ आ स्वयं पैपार भऽ चलनि... । श्रमभाव सभ तँहि नन । एतने कम गृहम भेटल छलैक फलाँ गामकेँ कनी आधि चियारिकेँ देखि अविबो, केहन ठोस बनौलकए ? मुखियाजीकेँ लऽ जेबनि कहथिन जेओ बी०डी०ओ० केँ सेहो लऽ लेथि... । जकरा सडै साही छनि सभटा विकास कार्यक सरकारी आ पश्चिकक कोष...”

स्वभावतः एहिने गरमा-गरमा आ तकरा बाद कबार फोड़खनि । जे कि कतहु मे कनहु किछु टोम तथ्य रहलै तँ महाभारतक वातावरण ।

बस गोटे मुखिया बी० डी० ओ० क, तँ बीस गोटे निरीक्षु शम्भोण जनताक । ताहमे विडम्बना तँ ई जे एके परिवारक सदस्यमे पाटा-पाटी । दू गोटे मुखियावादी नीन गोटे मुखिया विरोधी । कुल मिलाकऽ गामक मने ई निश्चय करब बड़ मुभीनगर जे गाममे राजनीतिक चेतनाक विकास भऽ रहलए । खूब खोरसँ । अन्वेषा बी० डी० ओ० क खेसमे पाँच वर्ष पूर्व बयो कल्ला अलग सँकत छल से आव राजनगरक दम टा शकुनिया विद्यार्थी सभ खेराय कऽ देखक । धरि दिन बाप-बाप करैत रहलाह बी० डी० ओ० साहेब । परन्तु अनाम सजदूरी योजनामे जे किछुओ जतना किछु कयननि-जे घोटाळा भेल होइक, ई धरि सत्ये जे गामक एक दू गोटे बोकायदा रिक्शा सेने अछि आ सवारी उधैए जकर उदाहरण दऽ कऽ मुखियावादी लोक सभ आ स्थानीय विद्यालयक समय-समयपर अपना भाषणमे कहैत छथिन जे ‘सड़कक ई विकास नहि भेल रहैत तँ गामक ई बेरोजगार पिछड़ावर्गक पुवक सभकेँ रिक्शा चलाकऽ अपन बिनगी सुखमय जनयवाक रस्ता भेटितैक किन्तहु...’ अर्थात् सड़क गामक बेरोजगारीक समस्यामे एकटा बड़का समाधानमे रहलए... । से एक जने बजलाह ।

ई घटना बसपि सभमी दिनक नहि थिक मुवा थिक ओही गामक । जाहि पर एकटा बी०ए० पास बेरोजगार पवक कौबलेख मा समझाहत कहलकैक—“यो भोंपू मा, समद भाषट । अहाँक मुखिया वा बी० डी० ओ० केँ छनि वृत्तल जे एहि गाममे



कलक बेरोजगार लोक रहेए ? आ ई नहि बूझल छनि जे जाहि दु गोटे दऽ रिकषासँ मुक्ती होयवाक उदाहरण देल अछि से दुनु टा सड़क बनवासँ पूर्वहि गहरमे रिक्के नीचा छल... मुट्ठे प्रचार करऽ आबल छनि जेना कि कोनो चुनाव होइवाक...

—आहिरे वा, नै मन छी, मुखियाक चुनाव नहि होइवाक छैक ? तेँ वातावरण बनबा अपलाइए ई भौपू मा सभ । एक टा पुक्क सीध स्वर पहिलुक वात कर्तत व्यंग्य कयलक ।

—वेसी कबिलती नै छोट । बेकार समय बेबाद किए करैत छी ? जाउ जाउ, मुखियाक चुनरा पर, एहि सड़कक धुरा उड़िया कऽ जमा कऽ गेलैए । ताछरिसँ बहारि आउ...'

—'अबै ओ, तकर मतलब हमरा अहाँ कुकुर कहलहु ? अहाँक ई सपरतीव ?' भौपू मा शीघ्रित भेलाह ।

—'अहा हा, कुकुर कहाँ कहली ?

—'ताछरि तेँ कुकुरे होइत छै...'

—'किएक ? बड़के नै होइत छैक नाछड़ि ?

—'कतहु देखलियैक अछि बड़ के तांगड़िसँ अखीरा साईत ?' भौपू मा अत्यन्त कुछ भावै कहलनि—'ई तेँ कुकुरे'...

—ताछरि सेँ माछी-कुकुरमाछी तेँ साड़ि लैछ बड़द... ओ पुक्क किबकिबोल बिन । ताबत जमा भेल किछु पक्ष-विपक्षक दंग लोक आ घोवाजजि हीवऽ लागल जे 'मउक बनलासेँ ग्राम बिकास भऽ गेलै' ओ 'सड़क बनला सेँ गामक चौड़ी घास भेल' एहि दुनु वाद-प्रतिवादसँ लगइम-लगइ ।

तखन फेर ई निराकरण जे फल्लो चौबट्टी परक पाकड़ि तर, के दोकान खोलओ अवसति गामक परमिट ककारा भेटओ, तकर डककेरीमे पुरा गामक दुनु पक्ष-व्यस्त आ दीड़ बड़हामे कपची सड़ककेँ धाँगि कऽ समतल करैत उपक्रम !

जैर तेँ वैह एकटा गाम आ तहि गामक ओहि सड़कक कथा कहैत छी । तबमीक बेर पहरक घटना ।

महानन्द वाव जाइत रहल दुर्गास्थान, दुर्गकेँ प्रणाम करऽ । लोकक आवाज-जाही लगल रहैक, छौड़ी-छौड़ीक बरीह सभ जा रहल अछि आबि रहल अछि । दुर्गास्थानमे आब तेँ पहिने जकाँ छुट्टे, बत्तासा वा गरी-मुपारीयेक भाग दोकान नहि लगैत छैक । आब तेँ पंचमेर मधुर आ दिकुली-सिन्धुरे नहि, पानक दोकानमे चारि-पाँच रंगक पान हरिहर कारी पीयर बेसियर सेहो लटकल भेटत । यद्यपि पानक दोकानमे त्रैविधरक तुक ललैत रहू । गरीब गुरवाक धिया पुतऽ पर्यन्त एक टा मल बिनकटि सखकी पहिरने, सीसे देह उपहार मुवा कपार पर खुब भव्य लाज टोप ! उदपटौग जकाँ बुझायत

ओकर बसाय-बागा देखिकऽ डेहुनसँ नीचा दीड़सेँ ऊपर सम्पूर्ण उपहार । वस्त्र नहि, मुवा लाज भव्य टोप ।

तेहने एकसरि छौड़ी खुब हुकमेत दीड़नि जा रहल छनि से महानन्द वाव देखलनि । ओ पच्छिम बिस खुब जोरसँ दीड़ल जा रहल छनि ।

बहुत आगाँ से हरिचरण कामति ओकरे गइह कऽ कऽ कहने रहलनि—'दीड़ ते विजनी 'जल्दी दीड़, नै त हुमि जयबै' 'हो वैह, ओम्हर, बस श्रिष्टी लग ठामहि, दीड़ पुर्ता तै ।'

ओ छौड़ी विजनी बिचछोले पड़ावल जाइत रहैक । ताबत एकटा आर खुब अँज स्वर सुनलनि—'मुनरा जादी करै रे हेऽऽ । दीड़कऽ ओ दुर्गास्थानक वाद, बसवाड़ि लग ठामहि राखल छीक बहुतरास छैक हेऽ । दीड़ । नै तेँ कोय हँतोबि लेती रे...'

एहि आह्वान पर एकटा छौड़ा मुनरा शरिया छँसैत पबिया छहाराँत पड़ावल लँक लागि कऽ ओही छौड़ीक पाछाँ पाछाँ ।

तकर बाद जेना आरौ बहुत छौड़ा-छौड़ी के एहि सोर करवाक मनेत बुझा-सेल होइक ओर एक पतिवानीसँ सभ ओही दिगामे दीड़ल जेना दीड़वाक प्रतियोगिता हो । महानन्द वावकेँ अंदाज लगलनि जेना कमित बसवाड़ि लग किछु बँदा रहल छैक । किएक तेँ बाड़ि-साड़िमे कहियो काल खरात, जकरा नेता मोकनि 'रिक्कीक' कहैत छनि से बाँटल जाइत होइक । वेसी गंभीर नहि होइत ओ मात्र एतबे सोचलनि जे—'अपना गाम केँ तेँ एम० एल० ए० साहेब' बाड़ियस्त सँभ घोषित' नहि करवा तकलाह । तखन एतऽ 'खरात' ? मुदा हुनका दुर्गास्थानसँ आवि कऽ फेर पाठ करवाक लेल बँसवाक छलनि तेँ ओ डेम अटकारनहि थड़ि गेलाह ।

हुनका कात बाटे छौड़ा-छौड़ी दीड़त आगाँ जाइत रहलनि । एकमेदियारसँ उत्तरियो कऽ खेतो केँ धड़ैत ओ सभ दीड़-प्रतियोगितामे लागल रहैत ।

जाइते-जाइत महानन्द वावकेँ बुझलनि जे भरिसक ई नेत सभ मेला देखऽ दुर्गास्थाने जा रहल अछि । ओ अपन गेलाह दर्शन करऽ आ पुरवाक क्रममे जखन दुर्गास्थानक असोरासँ भीचाँ उत्तरलाह तेँ देखलनि जे कैकटा लोक करीब-करीब ओतमे दुर्गास्थानसँ आगाँ दीड़ल जा रहल छैक । हुनका एकर अर्थ नहि लगलनि । एक क्षण रुकैत अनुमानऽ चाललनि मुवा नहि अटकर लगलनि ।

दीड़त एक टा लोककेँ चिन्हैत लोकनि—'किशुना की बाँक छैक हो ? एना किएक दीड़ल जाइ छऽ सभ क्यो ?'

—'मारि बजरि गेलैए, सीहे जाइ छिए ?' ओ कहलनि ।

—'मारि ? कतऽ हो ?'

—'वैह बँसवाड़ि लग ?'



—'बैसवाड़ि लग ? कपरा संगे ही ?'

—'मि हीकसें तहि बुझल अछि ।' ओ वस्त्राएमे बाँड़ि गेलैक । महामन्द बाबू एक क्षण डाढ़ भेलाह जे किछु माफ-माफ भए बुझबा योग्य हो । मुदा बाँड़ैक काज ठाढ़ रहलक बाद ई सोचि कऽ जे बैसवाड़ि ठामहि तँ छैक, वैह एही कलम बागक बाद । बत्ती देखिए, बात की छैक ।

ओकरा डीके लोकक खुब भीड़ । गजैस गजी भऽ रहल छलैक आ काय टा बायोस नैस 'याक' सब सम-सम कऽ रहल छल । महामन्द बाबूकेँ अंदाज तहि लगलनि परिस्थितिक । ओ आगू बढ़लाह तँ किछु लोक हुनकर अवकाश महरम दैत चिन्ति-आयल—'रो वहीं' सब री, सान्त नै होई जो री । हे मायिक अवलखुनहुँ करऽ बहुत हिनके निसाक ? अपने कपाड़-फोड़वैल जुनि करै ओ री सार सब' ।

मुदा ओकर एहि ओजखी शिष्ट सुझावकेँ क्यो नै मानलकैक । घोषाउनि ओहिना होइतहि रहलैक । महामन्द बाबू आर आगो बढ़लाह तँ किछु मोटे आर सावधान भेल । कर्नाक रत्ता रेल भिषमि आ झुला किछु काम पर जललैक । ओ आर आगो बढ़लाह तँ लोक आर बाद छोड़लकनि ।

महामन्द बाबूकेँ तँ ठकसूड़ी लागि गेलनि । दृश्य ई छल जे दूटा पुरुष मानुष हरिचरन आ शिवचन एक दोसरन पर लाठी उठाहने आ बेर-बेर चुनौती दैत जे बापक भेटा छै तँ तऽ ओ तौ ? दुनू-दुनूकेँ सैह कहैत आ एक बातमे एक टा बरख वसेक छोड़ी आ बरख एगारहे-बगरहेक छोड़ा करायल सहमल ठाढ़ । दुनूक हालत देखलसँ सुझाव जेना गोबरसँ दुनूकेँ खुब स्नेह होइक । दुनूक देह माथ आ गालपर गोबर लगल आ चेहरा दुनूक छल ।

महामन्द बाबूकेँ चिन्हवामे आवि गेलनि ओ छोड़ी पहिले जे चोड़नि छलैक ओ ओ छोड़ा जकरा बादमे क्यो सोर कयने रहैक आ ओ लंक लऽ कऽ पड़ावल छल, आ हुनका भेल छलनि जे ओ सब अरिस्तक दुर्गन्धवान आ रहल अछि—'वैह दुनू नै विकैक ।

—'की बात छैक हो ? किएक तोरा लोचनि' ?' महामन्द बाबूक एतवा कहलक छल कि लाठीधरा एगटा पुरुष बाजल—'अहाँ के नै जकरनि बखबाक । अहाँ छी कोरवारक नेता । सान्त रहू । हम आइ एकरासँ फरिछाए लैत छी । महामन्द बाबूकेँ लगलनि तँ खूब अधलाह, मुदा सान्त रहैत तथापि बुझीलखिन—

—'अपनामे की फरिछावैल हो ? आइ बीच वधमीमे ई अपनामे जे लाठी भोजि रहल छऽ ई कोम काज करैत छऽ ? राम राम ! हूई आ एतय तँ ?'

—'हटवै तँ तहि । मर्दे वनैए । अछि एक बापक जनमल तँ उठा लियऽ ।'

एकटा बेर देनई चुनौती ।

—'हँ री बापक तहि तँ की तोरा अकी शिर्सीक जनमल ? हम उठपवौ, तो मर्दे छै' तँ रोकि ले ।' कुल मिलाऽ दृश्य ई रहैक जे, जे पड़ी ने-दुनू ने सँ कि तँ एक, कि दुनूक कपारसँ पोषित बाहिनैक । महामन्द बाबू देखी देखी पड़ल एक क्षण किछु सोचि तहि मकलाह । बेर एक बेर आहूँ करैत लगसग एकटाक हाथ धारैत कहलखिन—'शिवचन ! तँहीँ मानि ले । बुझनुक भऽ कऽ चोड़ तँह । एना क्यो समझा करय अपनामे ? सान्त रहू । कहू हमरा । बात की छैक—किएक ई जगड़ा ?'

भरिलक किछु तमी अयलैक ।

'हइए हमही कहैत छी ? हरिचरन बाजल—'हमर कंठिखी पहिले चोड़ि कऽ आयनि आ ई गोबर इंसोधि कऽ रखलक । तखन एकर पैऽ पड़ैलैक आ हमर कंठिखीक गोबर नभटा छीनि लेनकैक । तँ पर हमर कंठिखी रोकऽ लगलैक जे किछु लेन छै हमर गोबर ? तँ ई छोटा नीचि कऽ छकैनि देखलैक आ जगड़ा करऽ लगलैक । हम जे पहुँचो एतऽ तँ बेखैत छी जे ई हमरा कन्टीरकी के गव-गव मारि रहल अछि । तँ पर ओही भम्हँहिरे केसकैए । हमरा देखलक तँ छोड़ी कामऽ शायक । हमरा रहल तँ गेल तँ हम ऐ छोड़ा केँ एक थापड़ मारलिये । तँ पर एकर बाप हमरासँ खाटा-नाडी करऽ बाजलए ।

—'गोबर कोनी सबदा तोरे बेटी छिठने छौ ?' शिवचन कड़ा होइत पूछलक ।

—'त की हो काका, वहाँ बापक संपत खाकऽ कहै छियऽ जे हम पहिले एतऽ जुमि गेल रही तखन ई छोड़ा आयल आ हमरासँ छीनऽ लागल ।' ओ छोड़ी बोचहिमे कहैत फेर हिलुकऽ लागनि ।

छोड़ा चुप डाढ़ रहैक ।

—'ई तँ बड़ छराप बात शिवचन । तोरी सन बुझनुक लोक यदि तुच्छ एतनी गोबर लेव एना लाटा-नाटी करऽ लागय... ?'

—'तुच्छ गोबर कहैत छियेक, एतनी ? एतवामे कतवा कतेक विपड़ी होइतैक से अहाँ पीर नै ने जगवै ? एक साझक सौते परिवारक कुतात छिये ई ?'

—'हँ री से खाली तोरे परिवारक एक साझक कुतात छी कि हमरो ?' पहिल लोक कोधेँ बाजल ।

महामन्द बाबू अयाक एहि परिस्थिति केँ बुझबाक चेष्टामे ठाढ़ रहल आ मोसामे पहिल लोकक फूटल कपाड़सँ टखरैत पोषित देखल रहनि आ एतेक काजक बाद आब जाकऽ देखाइत रहनि दुनू चोटक बीच बहुत रात गोबर माटिमे मिसरावल किछु मोलियाखोल आ किछु छिड़ियावल पड़ल ।



ई सता-सती बजरले रहैक कि क्यो मुखियाजीके" सेहो देलकनि एहि कुकाबक मुखना । पहुँचला स्थल निरीक्षण मे । शान्त करौलनि सब टा । बुनू पाटीक बयान लेलनि । कनी काल गुरु गंभीर रहलाह । ताबत कोनो भौपु आ अगसमई कयलनि— 'मुखियाजी तेल चाह-पावक व्यवस्था करे जा कोइ ही ?' लोकके अपन एहि घोषणासँ भौपु आ हुनविलिया देलनि ।

गुरु गंभीर मुखियाजी थोड़ेक कालक बाद बाजब गुरु कयलनि— "उपस्थित गानक लोक सब, ई बहुत दुर्भाग्यक बात अछि जे अपना देसमे एतेक एतेक प्रगती भऽ चुकल अछि आ विन्यास के एतेक अविस्कारक भऽ रहल अछि आ अपना नाममे एक रसी गोबरक बास्ते भाइ-भाइमे कपार-फूटय ?"

—भाय-भाय नै मुखियाजी, हरिचरण आ शिवधाम किसी-भानिज ।

क्यो टोकलकनि ।

—'भेलै । हमर कहै के मतलब अछि जे गोबरक बास्ते कहीं लड़ाइ ही ? हमरा पता चलल जे एक चित्त आरो एहिना एहि नवका सड़क पर गोबर बास्ते किछु लोकमे लगड़ा-सोटी भऽ चुकल अछि । ई तँ नीक बात नहि । नामक बदलानी होइत अछि । लोक मुनि कऽ हँसैए जे फला गामक लोक एक चोत गोबरक लेन महाभारत मचवैये । ऐसँ चेतवाक चाही हमरा यौर के । आखिर अपन पंचायत के परतीरठा बचायव हमरे अहाँक कर्तव्य अछि नै ।'

मुखियाजी एक धण गुम रहैल फेर बाजऽ लगलाह— 'नै, ई बड़ा चिन्ताक बात । पैघ समस्या । एकर समाधान तुरन्त हुएव जरूरी ।'

—'बिष्णुक मुखियाजी । बड़ आवश्यक ।' एकटा दोसर भौपु मंडलक उदगार छुटल ।

—'हमरा अगैत एकर एकाहि टा समाधान होइत छैक ।' मुखियाजी बजलाह ।

—'से की ?' एकटा तेसरा भौपु आक जिनस जिज्ञासा ।

—'ई, जे आइसँ एहि नवका सड़कक इलाकामे अनेक मानशाल गोबर करय लकरा एक ठाम जमा कयल जाय आ ओकर कोनो तेहन उपयोग कयल जाय जे गामक समाजक उन्नति कयल जा सकय ।' आइसँ सैह इतजाम करव जरूरी नहि तँ रोज गोबर बास्ते पंचनी बैसल । ई तँ ठीक नहि । ते आइ ई गाम-पंचायत आंफिसक सम्पत्ति भेल ।'

—'मुखियाजी, बड़ छीस कहूनिऐ । इतजामो कोनो कतिन नहि । रामजी राजतक छौड़ा सब अनेरे तेहनाइत रहैत छनि । सति बाटक ठीका हुनके दऽ देल जाइनि । गोबरक जमा करतक आ एकट्ठे ठीका पर गोदटा वनशाओल जाय आ एकरा बेचकऽ

जे आमदनी हो लकरा पंचायत के विकास-कार्यमे लगाओल जाय ?' बड़ उत्तम । एकटा अन्य भौपु भीधरि समर्थनमे व्यवस्था देलखिन ।

—'से तँ एखन भेल नै । मुदा अहाँ लोकनिके बुझने होयत जे सरकार गाम-विकासमे चीमे देहातक स्तर पर गोबर गैस योजनाके सफल करयवा मे बहुत तयार अछि । ताहू विचारसँ हमरा लोकनि गाम बासोके सोचव कर्तव्य अछि जे सरकारक एहि 'पुनीत गोबर गैस योजनाके जाव-प्राप्त सँ सहयोग दिवैक ।

हमरा विचारसँ ई गोबर संचय कानिह जाकऽ ग्रामीण गोबर गैस योजना मे सेहो बड़ योगदान करन । ते आइसँ इऐह निश्चय भेल जे सड़क इलाकाक सब टा गोबर रामजी राजत जमा करवीता । ई संपत्ति गाम-पंचायतक उन्नतिमे लागत ।'

मुखियाजी अंततः ई व्यवस्था देलखिन आ मुख्यस्त भावे बाहू कात तकलनि । महानन्द बाबूके देखि एक लग कनी निदरिदयलाह फेर स्थिर होइत बजनाह— 'अहा, महानन्द बाबू ? अपने कखन अपसिई ? महानन्द बाबू बुणे रहलाह किछु जबाब नहि देलखिन । मुदा आजुक गोबरक तँ कोनो पंचनी भेल नै रहैक । हरिचरण अगुताइत जकां कहलक— 'से तँ बादमे भे नै । मुदा आजुक एहि गोबरक की हिमाज होतै मुखियाजी ?' बीचहिमे दोसर सटिधर पक्ष उत्तेजित भऽ गेल— 'हेतै की ?

हमर कन्टिरीक गोबर की ओ गेल ?'

—'जबबरती । हमरो छौड़ा गोबर जमा कयलकए ओकर किएक नहि ?'

शिवधाम बाबो देलकै ।

—'ककर-बापक दिन छिऐ जे...

—'हां हौ, गंठितसँ काज करै जाउ । छिः छिः । एता जूनि लड़ै जाउ । मुखिया जी बुझौलखिन ।

—'कोना नै लड़व मुखियाजी ? मुपन के हमर गोबर, उनटे एकर छौड़ा हमरा छौड़ीके भारवो कयलकए, ई अपने हमर कपारी फोड़ि देलक अछि आ ताहि परसँ गोबरो ओकरे ! बाहू रे तिसाक । भगवान सब देखैत छयिन ।' ओकर कोध जेना विमलता सँ बढायल जा रहल छलैक ।

—'वेज तँ एकटा करु ।' मुखियाजी तिसाक कयलनि— 'आधा-आधा गोबर बुनू गोदय बाँटि लिउऽ । लगड़ा शासक करु ।'

—'से किएक यी ? आधा-आधा कियेक बंटावत । गोबर हमर छी आ हम एक रस्ती ककरो नहि नेवऽ देखै । जान दऽ देव मे वर मंजूर ।' एक बेर फेर ओ उसाह देखौलक । मुदा बीचहिमे एक टा भौपु आ ओकरा शमकौलखिन—

—'बड़ मद नहि बनऽ । जान दऽ देता । बूड़ि-नहिन । केहेत दिव तँ



मुखियाजी कहनखुनहे । वीटि जे आधा-आधी । मुखियाजीक घातके उठा देवहूक से लोहर अखियार नै छऽ ऐ गाममे ।

ओकर खाडी हाथ मे जेना तनाय लागल छलैक । महानन्द बाबूके बूझल छलनि जे जिवचन मुखियाजीक लोक छनि ओकरा बिस कऽ निसासके हकिले जयलैक । जिवचनके लाभ वेसे जयलैक । ओ चुनबाएँ एक क्षण उपन-कर्तव्य सोचत रहलाह । मानत मुखियाजी पुछलखिन—“की महानन्द बाबू ? बेज्जाम कहलैक ?” महानन्द बाबूके कोध आवि गेलनि ।

—बेज्जाम ? जेम्ह इस्लाम कयलिए अहाँ लोकनि । हमटे ओकर बेठा ओकर वेटीके मारलकै, गोबर छीन कऽ छोड़ देलकै वा बाप अपने ओकर कपार फोड़ि देलकै, तकर सती अहाँ आविकऽ जिवचन केँ इनाम दऽ रहल छिएक जे जुब कयलऽ । ई तँ अद्भुत न्याय भेल मुखिया । गाम के तँ अहाँ लोकनि भुजवा देबे आपसी सगडा करवा कऽ...

—‘महानन्द बाबू । बड़ पालिटिक्स नहि लाडू । चमकू एतअँ । मुखियाजीकेँ एहन गप्प कहैत एकदुरती संकेचो नै भेल ? एकटा भोंपू सा घुड़कल महानन्द बाबू दिस । मुदा ओ स्थिर रहलाह ।

—‘अहाँकेँ मुखियाजी भगवान छथि, चामीजी—जी हजूरोंमे देह पर साफ अंदा मूल्ये आ पानमें डोड़ रगत रहिए । महानन्द खाली भगवाने टा केँ भगवान कऽ मानैत छथिन ।’

ई एहन अन्त्याय कयनिहारकेँ तपो किछु कहि सकैए...बीबहिमे भोंपू सा मुखियाजीक अतिरिक्त कफावारीमे लपकलाह महानन्द आकेँ मारऽ कि तावतहि हुनका कपार पर सोहाइ खाती बनरख आ ओ कपहारि कटैत बेति रखलाह ठामहि ।

तकर बाद तेँ ओतऽ धमानात नाटी चलऽ लागल आ भयवहूँ दृष्य उपस्थित भऽलैक । स्वभाविक छैक जे ओतऽ मुखियावादी आ मुखिया विरोधी दूनु प्रकारक मान-भोक छल तेँ खूब बनि कऽ लाठी शरिखल आ पड़ाहि लागि गेल ।

प्रात भेने महानन्द बाबू आ ओहि हरिचन पर बारेंद कटि गेलैक । मुखियाजी ई क्षण देखबिस जे महानन्द बाबू दंगा करबोलनि । समाज विरोधी तत्वके रूपमें गामक मानि-अवस्थाकेँ सट करैत छथि आ बैक-बाइँ फारवाबक पालिटिक्स करैत छथि, हुनका जेहलमें बाहर रहल समाज आ देलक लेल ‘हानिकारक ।’

मुदा हरिचरण जे बेज्जाम देखलै ताहिमे ओ कहलकैक जे मुखियामें बेसी तँ मुखियाक आगाँ पाछाँ नाहरि डोलनिहार कुकराहा सब खराब होइए । तेँ ओकरा सबकेँ पकड़िक धूमि देबाक चाही । पाछाँ देखल जयत । कहूँ तँ महानन्द बाबू पर हाथ उठोलक नपुंसकता । बाँचि गेलाह नहि तेँ ओतऽमें उठिकऽ धरिक कात जइतथि...

महानन्द बाबूकेँ पकड़न नहि जा सकलनि मे मुखियाजीक बेचैनी बनने रहननि किएक तेँ हुनका बेर-बेर ई अर होइत रहनि जे महानन्द बाबू मुखियाक लेल उम्मीदवार होबे करताह ।

एहना परिस्थितिमे एहन कोनो गामक विस्माक तात्कालिक अंत की भऽ सकैत छैक मे अनुमान कयल जा सकैए । जीना यात्रा दिनमें विधिवत रामजी राखलक दिया पुता खाटी तकऽ सड़कक इलाकाक गोबर जमा करबामे तेनात रहैत छथिन आ सड़कक गोबर विधिवत गाम पंचायतक आग भऽ गेलैक अछि ओकर उपयोग वर्काल मुखिया, भविष्यमे सरकारक गोबर नैस संयकमे कयल जयलैक आ गामक सर्वाङ्गीण विकास कयल जयलैक ।

ओतऽ गाममे एकटा अफवाह एसरल छैक खूब जोर सँ जेकरा लोक हरिचरणक बयानमें जोड़िकऽ एडोलेकीये जे “आठ कासिहूँ भोंपू सा” सभक बड़ मंदी छनि । धोतीक बट्ठा डील छनि आ तेँ मुखियाजीकेँ बेचारेकेँ बेसी काब असकरे निकलऽ नइत छनि । भोंपू सा सभ लाठीक डरे मननुकान नेने छथि ।

आ मुखियाजी महानन्द बाबूक खोजमे पुलिसकेँ बराबरि मगवि कऽ रहल छथिन । □



## अवसरक लोक

महेल प्रसाद आ बेसल-बैसल सात बेर बनावोल भौध-ज्मेतमे दाढ़ी छानि रहल रहिबि नखत भोजन समाचार होइत रहेक । एतएक खोजावल मन ठमकि गेलमि, किछु तँ आकाशवाणीमे सभ टा समाचार गंगा आ यमुना नदीक आर्थिक प्रकोपक छलैक आ लगभग एहि तरीकटपर वसतिहार सभ टा नगर दऽ समाचारमे कहल गेल रहैक जे फला ठाम गंगा खतराक निशानसँ एतेक फोट ऊपर वहि रहल अछि तँ यमुना एतेक ।

महेल प्रसाद साक बहुत रास सम्बन्धी सभ रहबिनि एहि सभ गहरमे कैक ठाम जनिका विषयमे समाचार ई रहैक जे जवदेस्त खतरा बनल छैक आ कय ठाम तँ नागरिककेँ बेताबनी दऽ देल गेल रहैक शहर छोड़िकऽ सुरक्षित स्थानपर चल जय-बाक लेल ।

सभ समाचार प्रमुखतः आर्थिक प्रकोप आ लकर खतराक बारेमे रहैक । महेल प्रसादक अपनो गहरमे गंगा खतराक निशानसँ बहुत ऊपर वहि रहल रहनि । मुदा अपना दऽ निश्चित रहबि किएक तँ हुनकर घर गंगाक कातसँ बहुत ऊँचपर छनि आ हुनक घर भरि गंगा केँ अवयमे करीब-करीब दू टा खतराक निशान पार करऽ पड़तिनि । तँ अपना दऽ निश्चित, मुदा पटना-दिल्लीक अपन बाड़िबस्त सम्बन्धी सभक विषयमे काफी चिन्तित रहबि । मुदा, चिन्ते टा कऽ सकैत छलाह । किएक तँ अधिकतम रेल-मार्ग बन्द भऽ गेल छलैक आ दस किलोमीटर पहुँचवामे पचीस किलोमीटर तय करऽ पड़ि रहल छलैक लोककेँ ।

बाड़ि अमलापर जेना कि होइत छैक, सभ बेर कैक प्रकारक बीमारीक प्रकोप बढ़ि गेल रहैक आ लोक ताड़वै चिन्तित छल । ओहने कय माससँ लोक पाण्डुरोगसँ घातकित छल । सम्पूर्ण आवादीक एक तेहँस लोक एहि पाण्डुरोगक शिकार भऽ चुकल छलैक आ कय टा मृत्यु सेहो भऽ चुकल छलैक शहरमे, तँ बेसी चिन्तित छल लोक । ताहि परसँ ई बाड़ि जचित संज्ञासक रोगक आलोक लोककेँ किछु भारी वृत्तपलैक । गहरक कय टा मोहलामे पतरि चुकल रहैक आ अफवाह ई छलैक जे अस्पतालीमे रोगीकेँ कोनो महत्व नहि दैल छैक । रोगीकेँ सऽ कऽ टिटिआइत रह । कयो नहि सुनत । रोगीक प्राण चल जायत, मुदा डाक्टर सभक अपन रवैयामे कोनो अन्तर नहि

होलाक, तँ लोक आर असुरक्षित आ भयभीत रहए । खान-पान उठव-बैसव सभमे ओ भयभीत आ असुरक्षित रहए । वस्तु-जातमे ते दामक बुद्धि आर मोषिकल । ओना, डाक्टर सभक निजी क्लिनिक सभ बेसु आवाज ! ओतऽ ओ लोखनि छूव जमल । समय पर अस्पताल जयबाक, बाड़िमे समय पर रहबाक हुनका लोकनिकेँ बिल्कुल जरूरी नहि लगैत रहनि । मंत्रीजी बड़ हास आ अहिंसावादी लोक, तँ अस्पताली सफाई कम्पनिद्वारा कर्मचारीसँ लगाइत डाक्टर छरि सभ एक प्रकारक निश्चितताक बातवरणमे जीवैत अपन अभ्युदयक दिशामे स्थित ।

ओना बाड़ि बाड़ि अमलापर जेना कि कय टा चुतल संस्था सभ मुरफुरा कऽ ऊँठि पड़ैए आ 'राहत काटे' मे जूमि जाइत अछि, कय टा बिन जन्मल समाजसेवी संस्था सभ जनमि कऽ गुरुरत 'गराहतकार्य'क संरजाम जुमा लैत अछि आ कार्य करऽ लगैत अछि से सभ चालु भऽ गेल रहैक । स्कूल-कलेज सभक छात्र संगठन सभ तेहो सरकारी प्रेरणा वा आदेशसँ सक्रिय भऽ गेल रहैक आ 'दोला-मोहल्ला सँ' रोटी, चिक्कस, दानि-पुरान कपड़ा सभ माँगि कऽ एकदहा करम आ अपन प्रभारी लोकनिक देखरेखमे लकर बितरण समारोह' मनावय—बाड़िबस्त क्षेत्रमे जा-जा कऽ ।

एम्हूर रेडियो पर, अखबार सभमे तेहो बराबर स्थानीय बड़ आदमी सभक अखिल भारतीय बलय सभक अध्यक्ष वा महासचिवक, राजनेता आ महिला समाज सेविका लोकनिक वक्तव्य सभ बनावन प्रकाशित-प्रसारित भऽ रहल छनि लगातार बहुत रास रूपक प्रसारित होइत रहैत छलैक जाहिमे बाड़िसँ छल लोकक इच्छा सेहो रहैत छलैक आ मुबिया प्रखण्ड पदाधिकारी वा एही प्रभुति लोक सभकेँ जान-प्राणसँ बिन राति राहुत कार्यमे दौड़-बरहा करैत रहबाक आ बाड़िबिड़ितकेँ पर्याप्त मुख मुबिया पहुँचाओल जा रहबाक खबरि सभ लगातार प्रसारित भऽ रहल छलैक आ मुनजला बुरस्य लोक सभकेँ मनमे आशा आ विश्वास जगैत छलैक जे कार्य भऽ रहल छैक ।

रेडियो वा अखबारक समाचार सभक सब गामक बाड़िसँ बेराबन रहबाक बात कहैत छलैक आ लाखो स्त्री-पुरुष बाल-बच्चा आ मजदुरीक विपत्तिक कण्ठक जानकारी देन छलैक जनिका सभक उचित व्यवस्थाक लेल सरकार तँ अछिमे बहुत रास निजी संगठन सभ तेहो सक्रिय अछि । आ, लोक सभकेँ उपयुक्त स्थानपर लऽ जयबाक वास्तु, एतेक नाद, तँ एतेक ई-ओ ओकर व्यवस्था भऽ गेल छैक । कखनो-कखनो देसक बड़का-बड़का, औद्योगिक प्रतिष्ठान द्वारा तेहो बस हजार पाँच हजार राहुत सहायता कोषक हेतु देल गेल राशिक उच्च स्तर चर्चा होइत छलैक आ लोक सुनैत छल, कयो-कयो तँ छूव आश्वस्त अनुभव करैत छल कयो-कयो मुनिकऽ बिरल होइत छल । वास्तव होइतला लोकक कहब छनि जे समस्या देखवापी छैक पा एकरा वास्तु जतने कऽ सकैत छैक सरकार से कहल छैक ।



जे बिरका हीदय छपहू एहि तब परिस्थितिक मोक्षीक आ सेवितार एवं समाचार सूचिक-हुनक तर्क छलनि जे आखिर ई वर्ष वर्ष बाढ़ि अचिते किएक छैक ? ई कोनो एहि वर्ष तँ अयनैए नहि । कनोक वर्षमें अकि रहल छैक आ भीम जनजीवन केँ सभ वर्ष सङ्ग-नङ्ग कऽ दैत छैक तँ आखिर एकर चिन्ता किएक नहि भेलक सरकारकेँ एतेक दिन ? एहि भरौस जे बहुत रास संस्था सभ छैक, बहुत भिन्न देलक आ अपन विभाग सभक अनुदान सभ भेटैत छैक बाढ़िप्रस्त लोककेँ सहाय्यार्थ ताही लम्बीद आ विश्वास पर बाढ़िक सन्स्थाक मध्य रूपमें समाधान पर किछु मोचले नहि दिनेक आ वर्षक वर्ष करोड़ी अरबोमे राष्ट्रिय सम्पत्तिक सञ्चालन कयल जाइत रहलैक ?

पहिल प्रकारक लोक दोसर प्रकारक लोकमें एहि प्रश्नपर ताराज होइत छलनि जे अहाँलोकनि जे भऽ रहल छैक तकरा महत्व नहि दैत छिऐक आ एक टा धमर्ग प्रश्न डाढ़ करैत छी जाहिसे 'निर्वा कार्य' में तेजी नहि आवि गबै छैक ?

दोसर प्रकारक लोक पहिल प्रकारक लोककेँ कहैत छथि—'अहाँकें नें हिमाय किताब लागि जाइत अछि वर्ष भरिक खास-पोषाक एहि बाढ़िक सहायता कोषमें । अहाँकेँ चिन्ते की ? मुदा एतेक लोक बाढ़िमे भसिया कऽ दुखि कऽ मरि जाइत अछि तकर दुख या चिन्ता अहाँकें किएक हो ? रातिमे सपरिवार अपन वस्त्राकेँ धुतार को कऽ माय-बाप सुतए आ धोर भेले वस्त्रा, बाढ़िमे कतऽ घर-संगे बहा कऽ कालक मुँहमे समा गेल रहैत छैक माय-बाप वला नहि पवैत अछि, भाय, बहीन, भवेली सभकें तँ पैहू समस्या छैक ! अहाँलोकनिकेँ मतलब तँ 'राहत कार्य' खुटा देखा परियै अछि । जतऽ तबऽ पाइ जुटवैत छी तयाकथित आठिटक डरें किछु खर्च करैत छिऐक आ विशेष मंगल करैत छी । भऽ गेल । तँ अहाँ सभ लेख तँ ई 'सीजन' धिक । व्यापारक सीजन । जेना भदवारिमे सभ दिन बजारमें बोलक बोल छलत बिका जाइत छैक तहिना बाढ़ि कि कोनो प्राकृतिक संकटक कालमे अहाँ लोकनिक व्यापार अवस्था तफा शिखर धरि डेकि जाइए...

स्वाभाविक छैक जे एहन बाद-विवावसें जगड़ाक स्थिति उत्पन्न भऽ जाइक । आ एहि तरहें होहि-पडोहि कहनिहारकेँ समाज विरोधी, त्याग आ सेवामे आस्था नहि रखनिहार, घोर नास्तिक आ जनविरोधी प्रकारक लोक वृत्त जयवाक वातावरण बनल रहैक ।

एहने वातावरणमे भरि दिन बितलाक बाद संध्याकाल महेश प्रसाद पैसल रहथि आंगनमे । वर्षा नहि भऽ रहल छलैक । घोर उमस व्याप्त रहैक । बिजली अपना स्वाभाविक गतिसें घटित सवा घंटासँ गायब रहैक भरि दिनमें भरिसक ई चारिम बेर छलैक । महेश प्रसाद आंगनमे खुजले बेरे बैसल रहथि । बाढ़िक

विभीषिका आ संस्था एवं सरकारी मुख्यमन्त्राक खोज-खान पर भरि दिन लोक गभरें खिबाइ भेल छलनि । सैह बात सभ मनसे घुरिआइत रहनि । मन तितल रहनि । ओ स्वयं बाढ़िप्रस्त लोकक बास्ते किछु करऽ चाहैत छपहू, मुदा एक तँ मौकरी, दोसर परिवारी अभाव, चिन्ता । तँ मन नमायि कऽ बाढ़िक समाचारसँ संतोष करैत छलाह, बड़ क्षुब्ध कोषिण । बहुत रास युवक सम्पर्कमे रहनि, पूरा नगरीय कार्यकलापक सूचना रहनि जे अहाँ मोक्षार्थ फला संस्थाक फला एतबा संग्रह कयलनि तँ आइ फला मोक्षक मजूर सभ अपन एक दिनक मजुरी बाढ़ि सहायता कोषकेँ दऽ देलकैक जे फला मेडनी खोललनि...

एहि अमानवीय 'कंदा-मोक्षण' आ तयाकथित सहायता कोष पर हुनकर देखने, मतमे जेना प्रधरा लागि जाति । पूरा समाजक विवेकतः अहिधिन धर्मप्रण आ नैतिकताप्रस्त वर्गक लोक एहि कथित 'समस्याक समाधानी' घोषणसे हुनकर हृदय आतंकित बेचैत रहनि । मुदा सर्वथ समाजमे व्याप्त रहैक ई संशय आ जकाँ वातावरण । ओ एकखरे कऽ की संकेत छलनि एही सभ सुश्रुतमे बेरान बेहू कर लुपकैत पच्छड़केँ उडयबा लेल गंजीसँ होक रहल छलाह तबने दू टा युवक अयलनि । बेसऽ कहलनि । ई दुनू युवक देस-मुतमे 'नेममोह', दुव्वर पाकट मुदा नमभीर आ सज्जसो तरङ्ग कवि-छात्र । बेसी काल अवैत छनि ।

—'की बात भुङ्गल ? की सभ भऽ रहल छैक ?' महेश प्रसाद पृष्ठलनि ।

—'की तेतैक ? एहि समाजमे करबाक लेख छैक की ?' ओ दण्ड छल । दोसर लडका सेहो अपन चुप्पी आ गम्भीरतासँ एकर सहायता देलकैक । दुनू खूब मित्र अछि ।

—'करबाक देल ?' अखबार नहि पढ़लहुन ? कहनगोवनें कऽ कऽ पूरा ओ इलाका बाढ़िमें घेरायल छैक एतेक लोक तवाहीमे पड़ल अछि ।'

—'किछु तवाही नहि छैक ? बहुत रास सरकारी अनुदान सभ चालू छैक । लोक उठा रहल अछि आ बड़ जोरसँ बाढ़ि पीड़ितक सहायता भऽ रहल छैक ।' ओ आर चुल्ल होइत कहलकनि ।

—'सो' एना भऽ कऽ किएक बाढ़ि रहल छऽ ? खाली 'फला मोहल्लास' सुनलौ जे भूतपूर्व म्युनिस्पीपलटी सभापति कलोक रास वस्तु, टाका जमा कऽ राहत कोषमें देलनि अछि... फेर धीमती फला दऽ सुनतहुँ जे अपन संस्था चलिब महिला संघक कोषमें, ओही बैनरसँ बड़ सक्रिय छथि, स्वास्थ्यक विरोधक खादी राति बिन भाग-दौड़मे छथि, सुनलौहें जे ओ 'कार्यालय' पर्वत छुट्टी लऽ लेने छथि एहि राहत कार्यक लेल सपरिवार समर्पित छथि...

—'समर्पित छथि सरकारी अनुदान मब सभक फाँटा आ बाढ़ि निरीक्षणमे

अवसरक लोक □47



आपल गेल थड़का नेता सबक पाछी। स्वास्थ्य सेहो खूब ठीकठाक छति। अतएव स्वास्थ्य तँ छैक आदमीकेँ अधिक मन:शांति, से पर्याप्त छति। सीजन छैक आ अपन बुद्धि तथा समाजक वैयक्तिक कृपासँ खूब प्रसन्न छथि आ सीजनक पुरा-पूरा लाभ उठवैसँ अपन पति संगेत, मित्र कुटुम्ब सहित खूब व्यस्त छथि। अगिला चुनावमे पतिदेवकेँ ठाढ़ो करलीहूँ।

—‘एतेक बात तो’ किएक कहैत छः मुकुल? किएक हट छः?’ ओकर कोध नीक लगलनि महेश प्रसादकेँ। तैसो पुछलनि—‘उचिते कोध छैक एकर।’ जबाब पन्द्रेश्वर देलनि—‘बहुत धाँधली छैक सीसे। बाढ़ि राहत कार्य नहि भेल, मिमेट आ गीजाक परमिट भऽ गेल। बहुत-बहुत थोडाला आ बेमानी चलि रहल छैक। जे बेचारा बाले बच्चे बाँध कात पानिसँ घेरायल अछि में तँ कागजी बायबी आश्वासन पर खूबै करत जाबत प्राण नहि निकलतक देहसँ। मुदा स्थिति की छैक जे किछु सामान पठाओवों जाइत छैक त उँचकेँ मकानक छतपर छमि पड़ैत छैक चाहे बच्चाक लेल पाउडर दूखे किएक नहि हो। कारण की तँ हेलिकप्टर तँ ओलाहि उतरि सकैछ। सेहो बितरण भऽ जाओ तँ बात। छतवाला महोदय एतेक जे जान हतियऽ ओहत ऊँच पैघ मकान पीटि कऽ ठाढ़ कयने छथि ततिका एतयो लाभ नहि, अर्थात् किछु विस्का विस्कुटो आ दवाइयो नहि? भऽ तँ गेल वर्षमे एक बेर तँ वायदनीक ई महालेत बाढ़ि। नकरा निरर्थक बोना जाय दिवऽ। आ फलस्वरूप वर्ष भरि ओ विस्कुट अवनिहार गेनिहारक स्वागतमे चाह काफी संगे प्लेटमे परसाइत अछि...आ झाड़ूग रुम स्नेह निवहेत अछि।

धिक्कार छैक। मूदा कपनिहार लोकक लेल किछु करबोक कोनो गुंजायशे नहि।

—‘की बात की भेलैक?’ महेश प्रसाद पुछलनि।

—‘काहि गेलहुँ कचहरीमे जे केन्द्रीय बाढ़ि राहत कार्यालय छैक। एक टा पैघ कोठली, बड़का टेबल, कुर्मी सभ आ टेलिफोन। पहिने तँ प्रतीक्षा करऽ पड़ल जे नयी भेटय। फेर एक टा सज्जन पाछोक गेटेक चम्मच प्रकारक लोकसँ घेरायल कोनो दोसर कोठलीसँ अवतरित भेलहुँ। सभ अचितो-अचितो कतफुमकी नकाँ हुनकार्म गण करैत छल। ईहो बात किछु विचित्र आ रहस्यात्मक लुकायल। खैर, ओ बेसलाह टेबलपर। कतहुँसँ टेलिफोनक बीटी बूझि पड़ैए हम अतथा कालसँ ठाढ़ रही, बाजि रहल छलैक। खैर-आब ओहिनेमे एकटा चम्मच उठोलनि चोंचा आ ‘हेलो’ बजवाक कृपा कयलनि।

48 □ नवीन गुजन

ओम्हूरसँ आयः जीपक भाँग कयल गेल छलनि कोनो ठाँव जाहि पर किछु सामान लायिकऽ पीरसँ को दिस बजवाक छलैक। ताहि पर ओ कहलनि जे-‘वो ही जीप हे, दोनो बाहर हे। अभी तो एक घंटा ‘बैठ’ करना पड़ेगा’ एक घंटा में टेलिफोन कर लीजिये।’ भाई राम हो जायदी तो हम क्या करें? सरकार साधन बेसी हे नहीं अब वो वो जीप से इतना बड़ा बाड़यस्त सेबें संभालना...। भाई हम कोई हँ इसमे मतलब नहीं...राहत कार्यालय से बोल रहे हैं।’ चोंचा राखि देलनि। बड़ा विचित्र रहि जायल कोश आ विचननसँ बेरा आल चौंछल लागल। मूदा हम तँ गेल रही राहत कार्यमे किछु गल्फ सकिय कार्य करय। ओकरा ई गण भेलैक। वस्तुतः अधिकारी व्यक्ति छलहुँ पान चिबवैत टेबलपर पानक बैस पैघ पतोड़ा सेहो राखल छलनि, ओ टेलिफोन पर जबाब देनिहार व्यक्तिकेँ प्रशंसात्मक भावसँ कहलनि—‘अच्छा कहा। सारे सब जगहपर यही किये रहते हैं। अरे, इतनी सेवा करना ही चाहते ही तो एक ठो ‘जीप’ का इन्तजाम नहीं कर ले सकते? किसी से ले लो। ये खोप ऐसे ही हैं। सरकारी जीप मिल जाती है तो राहत-कार्य कर आते हैं। बेहरे जोग। और यहाँ सरकार की हावा यह कि साथ वो-वो माड़ी मात्र दो जीप इतने बड़े क्षेत्र के लिये...

—‘बैस दूसरी जीप गई है कहीं? क्योंकि पहली काजी की सवारी सरफ गई है, दूसरी?’

—‘सर, उमे जरा पान लाने भेजा है। देख नहीं रहे हैं सूख गये हैं सब। भेरापटी के पास भेजा है।’ आना तो होना इतनि में मैं घंटा भर बाद टेलिफोन करने कहा है।’

एक मन्थरक चम्मच, साहेबकेँ दिखावत कहलनि आ फेर हँ-हँ करऽ लगलाह। साहेब प्रमत्त भेलनि आ खूब जोरसँ पुँहक पान चिबवऽ लगलाह। हमरा तँ जेना, शोषितक घोट पीबिकऽ रहि जाय पड़ल। वर्षा ओतऽ हमरा हुनू गोटेक उपस्थितिकेँ महत्व नहि देलऽ बाहि रहल छल। ओ सभ अपन हँसि-ठट्टामे मस्त छल। द्वारि कऽ हम ओकरा कोठलीमे पैसि गेलिए। एहि बातसँ ओ सभ जेता चौंकात।

—‘की बात छै हो?’ एक भीटा पुछलक।

—‘हम बाढ़ि-रीझल लोकनिक वास्ते किछु करऽ चाहैत छी।’ हम ‘साहेब’ केँ कहलिये, आ आदेश लेबाक मुद्रामे डाढ़ऽ लेलहुँ। —‘हमरा काज दिवऽ।’

—‘साहेब समेत सभ गेटे हमर एहि बातपर गुरहि-गुरहि कऽ देखऽ लागल। फिर साहेब किछि बिनस होइत पुछलक—‘आप किस संस्था के हैं?’

—‘जी मैं। कोनो संस्थाक नहि छी हम।’ हम कहलियेक तँ जेना हमर ई गण ओकरा सभकेँ बड़ अनोन कुसयनी, अमसीहोत।



— 'संस्था के नहीं हैं, तब फिर कैसे करेंगे कार्य ?' ओ पुछलक ।

— 'किएक, हम असकर नहि कऽ सकैत छी ? काज करवा बेल संस्थाक होयब जरूरी छैक को ?' हम कनी एक्ये स्वरें कहलैएक ।

— 'सो तो हे भाई । जरूरी हे । हम आपको किस रूप में काम सोप सकैत हैं ?'

— 'एक टा कार्यकर्ता, एक पृथक्क रूपमे, आर कोन रूपमे ?' हम कहलैएक ।

— 'नहीं भाई, हम ऐसा नहीं कर सकैत ।' लखन केर ओ हमरापर जेना 'कृपा' करैत सहायुभूतिमें मुखाव देवऽ लगल— 'आप ऐसा क्यों नहीं करते, किसी संस्था से जुड़ जाइये और काम करिये ।'

— 'असम्भव । हम कोनो संस्थामे नहि जुड़ि सकैत छी ।'

— 'तब फिर, कोई अपनी ही अलग एक संस्था बना डाखिए । सुविधा रहेगी ।' ओ आमां मुखाव देलक ।

— 'युवा हे अलवत्त विचित्र बात छैक जे हम चाहि रहल छी एना कार्य करी आ अही मुखा रहल छी संस्था बनवऽ ।' ओ अयलहुँ हम ।

— 'लाचारी हे । हम आप को कैसे रेकोगनाइज करें ? आप ही बताइये । हम आपको कैसे, किस आधार पर मानें ?' ओ खूब गम्भीर स्वरें पूछि रहल छलाह ।

— 'मे हम अहाके' की बता सकैत छी हमर एतये कहब अछि जे हम एहि परिस्थितमे अपन किछु सेवा देवऽ चाहैत छी ।'

— 'हम बूझैत हैं आपकी भावना लेकिन हम लाचार हैं ।' ओ वजलाह आ जेना हमरा पर दया करैत आमां कहऽ लगलाह— 'अच्छा, आप तो विद्यार्थी लगते हैं, ऐसा करिये, आप अपने कालेज से लिखा कर ले आइये प्रिन्सिपल से ।'

— 'जी नै । हम परीक्षा दऽ चुकल छी, कालेज छोड़ि चुकल छी । हमर एहि उत्तर पर ओ किछु चिन्तित भऽ गेलाह आ फेरी किछु सोचऽ लगलाह ।

— 'अच्छा, एक काम करिये । आप किसी बड़े आदमी से प्रमाणपत्र ले आइये तो की काम...

विचित्र बात अछि महाशयजी, हम चाहैत छी काज करऽ आ अही हमरासँ बड़े आदमी' तकवा रहल छी । स्वाभाविक छलैक जे हमरा स्वरमे आव उत्तेजना भरि गेल छल । हुनक मुख-मूठालें खुलायल जेना कि ओ तवापि हमरा पक्षमें किछु आर सोचि रहल छथि ।

— 'अच्छा, आप एक काम करिये, आप नेहरू युवा केन्द्र सेही एक प्रमाण पत्र ले आइये । वह तो आप ही जैसे युवा के लिये हे ।' हम तँ खोला कऽ आगि होइत रही । तँपो किछु सोचैत बिबा भेलहुँ ई कहैत जे— 'देखी, कोशिश करैत छिएक एक बेर ।'

नेहरू युवाकेन्द्र पहुँचलहुँ तँ अधिकारी महोदय पैच गाँधियामें रोटी भरवा रहल रहथि, जे रोटी कचटा मोहल्लाक लड़की सभ पकोने रहैक । विभागीय केमरा में तन्हामें खऽ कऽ रोटी भरवै धरिक पूरा दृश्यक फोटो घींचि रहल छल आ फोटोमे नीचा जयवा बेल लोक वेजैत रोटी छोड़िबा आँचर वा ओड़णी ठोक करऽ लगैत छथि । फोटोग्राफर काय-कोणसँ अधिकारी समेत एहि दृश्यक फोटो उतारवाने अपस्यात छल ।

हम एक बिनट समय देबाक याचनाक संग जखन अधिकारी महोदयकेँ अपन उद्देश्य कहलियनि तँ ओ खूब गंभीर भऽ गेलाह । हुनकर ई गंभीरता ताहि सीमा छरि बाड़ि गेलनि जे ओ बड़ दार्शनिक मुद्रामे अपन असमर्थता बसबऽ लगलाह ।

— 'देखऽ वीआ ! हमरा ओतज्जें जे लोक राहत काजमे संलग्न अछि तकरा सभक तँ एक टा निश्चित सुधी छैक । आज आरौ एहिर्स बेसी लोकक बारमे तँ हम एखन नहि सोचलहुँ अछि । अन्यथा तँ 'रईत-लिखत आदर्शवादी उत्साही युवक छऽ, तोरा तँ अक्सर भेटवेक चाहैत छवऽ । तँहि लोकनिक सद्गुण युवाक बेल तँ नेहरू युवा केन्द्र छैक । परन्तु हमरा बड़ अकसोच भऽ रहल-ए... एखन तत्काल ... तँ... ।' हम घुरि अयलहुँ ।

महेग प्रसाद चुप आ उदास भऽ गेल छलाह ।

— 'आब अहाँ कहूँ कि जतऽ सही काज करवा ले अनावश्यक 'बितावा' लगाइब जरूरी छैक ओतऽ क्यों की काज करत आ कोना ?' चन्नेवरर दुखी आ क्षुब्ध छल ।

— 'आ' दोसर दिस संस्था सभ अछि । रोटी वेजैत-कालक आ बँटबा-कायक फोटो बिचजवावे व्यस्त अछि ।'

लोक जनसाधारणक एहि संकटापन्न ज्ञानक केँ अपना-अपना पक्षमें एहि सीमा धरि भजा सकैए से सोचलो नहि जा सकैछ । पूणा होइत अछि । आदमी, सेवा आ समाज-कार्यक अक्षमें एहन कमीना सेहो भऽ सकैए । तँपो ई सभ बलिये रहल छैक । जिनका भजयवाक छनि से बाड़ि तँ बाड़ि, मुदकि पर्यंत भजा लैत छथि । आ साथ पूछी तँ ओहने लोकक जमाना छैक । 'बैतर'क जमाना । बैतर ! चाहे तकरा नीचाँ काज किछु होइत हो ।

— 'श्रीमती सिन्हा । इलाकामे ककरासँ मुकायल छैक हुनकर व्यक्तित्व । आद-काहि एहि बाड़ि-पीड़ित सहायता कोषक बेल, राहुतक बेल की-की ने कऽ रहल छथि ? एक संस्थाक महामंत्री बननि छथि । परमे लेऽ कऽ धूमैत छथि लोकन सभसँ विस्फी छरि जे ओ दलित महिला वर्गक संकट मे कठिन कार्य कऽ रहल छथि । ओकरा लोकनिक स्थितिकेँ सुधारब ओकरा सभक जीवनकेँ उठावबे हुनकर जीवनक परम ध्येय छनि । आद-काहि हुनक परम ध्येय बाड़ि पीड़ितक सहायता भऽ गेलनिहेँ ।



—है-है, हमर बेटी कहि रहल छल। पछिले दिन तँ ओ ओकर स्कूलमे आयल रहथि, निवेदन करऽ जे अगिला दिन सभ विद्यार्थी अपना-अपना घरसँ कसयें कम छौ-छौ टा रोटी आनय जे कि बाहुिस्त भँचमे भूखल केला-भुटका सबकेँ बाँटल जयतैक आ सत्ते दोसर दिन हँसोथि कऽ जोपने लऽ गेलखिन। आब सोनू कनी १४-१५ सय विद्यार्थी पहुँच छैक स्कूलमे। सय डेढ़ सय अनुपस्थिते होइक तँयो अठारि सय रोटी एकट्ठा भेलैक।

—आरो जोड़ियो महेन बाबू। एक टा बड़ मज्जर पटना भेलैए। श्रीमती सिन्हा जे राहत-काज कऽ रहल छथि तकर सत्ये दोसर उदाहरण नहि भेटत, बेजोड़। चन्देश्वर रहस्यपूर्ण विहँसी ईत बाजल आ चुप भऽ गेल।

—से की भेलैक ?' महेन प्र० पुछलखिन।

—श्रीमती सिन्हा एकटाँआर स्थानीय हाई स्कूलमे सेहो रोटी जमा करऽ गेल छथि। रोटी तँ हँसोथि कऽ लऽ अपलीह। दोसर दिन ओ पुरान-धुरान कपड़ा लेल गेल रहथि। पैड़ कटुके सँ बात छैक। किछु तँ शिक्षक सभ सेहो खूब सहयोग करलखनि और अपना विद्यार्थी सबसँ अभिभावक लोकनि सबरि दिखलऽ ई आपहुँ करबालकनि जे पुरान-पहिरल कपड़ा सभसँ सेहो बाहुिस्त लोकन सहानुता करथि। से बड़ कपड़ा सभ खादि कऽ श्रीमती सिन्हा लऽ जाय आयल रहथि। ओ जीप रोडकऽ बरन्दापर खरो गहि सऽ बसोले हेलीह कि क्यों एक रोटी चिकरैत बाजल—बैड़ आबि गेली। सार कुकराही के। मार...। तावत आरो लोक सभ, विद्यार्थी शिक्षक सभ जमा भऽ गेलैक। श्रीमती सिन्हाक बुझिये मे ने किछु अपलन। परन्तु जखन इस्वा-गुल्म प्रदेसक आ किछु छोटा सभ साध-साध श्रीमती सिन्हाकेँ गरियावऽ लखनि, चौर-वेमान कहलखनि आ तुरन्त भागि जाय लेल कहलखनि तहि तँ हुनका खरडी-खरडी काटि देखनि तँ ओ बड़ चबड़ा गेलीह आ जान पर आफत होथि कऽ त्रीप दिस पड़ाप लखीह। भागि नहि पयैत छसीह बेचारी तँयो दीहसीह कोनो भरहे भाड़ी धरि लते-पेते। बाछसँ हुनकापर जुला-चूड़ी आ हेरा सट्टा लाधल रहलथि। कोनहुना लुइ वऽ जीपमे पिसलीह। इश्वर परिस्थिति बुझि गेलैक जे ओ जीप जन्वीसँ खोलिकऽ भागि गेलैक। श्रीमती सिन्हाकेँ खैर चोट तँ नहि लगलनि कती, परन्तु बुद्धि-बुद्धि आ बेज्जति-बेज्जति भऽ गेलनि। जान बेचाकऽ पड़बसीह।

—अहो, ई तँ बड़ अनुचित बात ! एता नहि हेबाक चाही। बेचारी एक टा स्त्री होइत बाकि पीड़ितक हेतु एतए जान उपाधिकऽ मेहनति कऽ रहल अछि लोक तकरा.....आखिर स्कूलक शिक्षक लोकनि कतऽ रहथि जे विद्यार्थी सभ श्रीमती सिन्हा सँ ई व्यवहार.....। महेन प्रसादजीक एहि सत्यक सहानुभूति पर ओ कुनू

गोटि एकहि संग विरचित आ रहस्यमे विहंगि रहल छल। तखन चन्देश्वर बाजल—  
'परन्तु श्रीमती समाज सेविका सिन्हाजी कार्य की कपने रहथिन सेहो सुनियी।'

—'की ?' महेन प्रसाद पुछलखिन।

—जे रोटी ओ स्कूल सभसँ जमा कऽ कऽ अर्पित छलीह जाहिमे बहुत रास रोटी तँ अपने गरीब अभिभावकक रहैत छैक, आ अकरा ओ सरकारी जीप पर अति-ऊँचि अनैत छलीह तकरा ओ बाँटि छीक अर्पित छलीह। परन्तु तकर खर्चा ओ अपन मंथा जकर महानजी छथि तकरा खासमे देखबैत छलखिन। समितिक कोषमे जे इन्फ कयने छथिन तकर रेकर्ड दुरुस्त रखैक लागे। ओखिदोक नाटक त होइत रहैत छैक जे समय-समयपर।

—अच्छा, से कयलखिनहे ?

—तहि तँ की ? संयोग छलैक जे ओही स्कूलक एक टा आगश्चक पुषा बिलक केँ ई जानकारी भेटि गेल रहैक। ओ राता-राती एहि सूचनाकेँ प्रमादित कयलक आ ओही श्रीमती समाज सेविकाक कपड़ा जमा कऽ वऽ जाय लेल अवैया रहनिये। ओ तैयार छल। ओ हूथि देखलनि। रेखाङ्कलनि।

भला सोचय क्यों ! ई राहत-कार्य किछु लोकक व्यवसाय नहि तँ आर की ? ओ भुङ्ग होइत बाजल।

—ई बात सत्यमे सत्य छैक कि व्यक्तिगत ईष्या-द्वेषसँ त नहि ?' महेन प्रसाद भँका उठोलखिन।

—व्यक्तिगत ईष्या द्वेष नहि। छीकै छैक। सुनैत छी जे ओ कि समाज सेविकाक ओहि संस्थाक अध्यक्ष सेहो कोनो बड़ पैघ पदाधिकारीक स्त्री छथिन आ जानोप राजनीतिमे खूब सक्रिय भितकर बरदहस्त छनि।' मुकुल बजल।

—स्वयं श्रीमती सिन्हाक घरमे नियमित कयटा नेता लोकनिक आयत-गैत रहैत छनि। तकर लाभ ओ खुब उठबैत छथि। स्थानीय प्रशासनिक सुविधा पदथा लेल आ ककरो आनक्ति करवा लेल, राहत काजक लेल, अपन 'समिति'क लेल अनुदान ऊँचमे। आर आब एहि चीजनमे तँ ओ एही सभ समाज-सेविकाक औचित्य के देखबैत देखिबैत लवडा रहल छथि। स्वाभाविके छैक जे ई काज नेता लोकनिक सहयोगे प्राथमिकताक संग कयल जा रहल छनि।

—'ई छथि श्रीमती समाज सेविका। आइ काहिह बाहुिस्त सभक सेवा कऽ रहल छथि आ पुजी बड़ा रहल छथि, पाईक पुँजी, सामाजिक प्रतिष्ठा आ राजनीतिक पवित्र पुँजी.....।' चन्देश्वर बाजल। महेन प्रसाद हा चुप रहथि हतप्रभ। मुकुल सेहो चुप रहल। आब चन्देश्वर सेहो।



सौम साहे सात बजैत हेतैक। किएक तँ रेडियोसँ प्रादेशिक समाचार भऽ रहल छलैक। आ, ताहिमे मुख्यतः ईहे समाचार कहल गेलैक जे फलां सहरक धीमती समाज सेविका सिन्हा एकसरे एकेक किबटल रोटी बँटवावक, एतेक रास कपड़ा बँटवावक साहसिक आ आदर्श कार्य कइलनि अछि। किछु निजी संस्था सभक चर्चा कयल गेलैक जे सरकार आ जनताक मदति कऽ रहल छैक। अन्तिम ई संस्था सरकारक काज धूलक कऽ रहल छैक।

समाचार सौम गोटे नुनि रहल रहल। तौनु एक बोसराक मुँह तकैत। महेश प्रसाद अपन मंजीम आ ओ दुनु अपना-अपना हाथक अखबारसँ मच्छड़ उड़ा रहल रहल।

तखन चन्द्रेश्वर कहललैक—‘अजूका’ इंडियन नेशन देखलिनैक अछि?’ महेश प्रसाद धुँही जौलीलखिन—‘नहि। ओ पूछ उमड़ा कऽ हुनका सोझाँ कऽ गेलकनि। अह्मर छैक। लालटेन मंगवा कऽ ओ पढ़लनि जे ‘राहुल कार्यक्रम’ सफल संचालन आ समाज समाज सेवा लोकनिक सेवा भावना एतेक पैघ बाढ़ि समस्याक एहि विभीषिका समाधान प्रस्तुत कऽ देबामे सफल भेलए।

महेश प्रसाद अखबार समेटैत चन्द्रेश्वर के आपस कऽ देखलिन आ चन्द्रेश्वर फेर ओहि अखबारसँ मन-मन करैत मच्छड़ उड़वऽ लागल।

—तखन की करै जवऽ?’ महेश प्रसाद समझ किन्तु पराजित सन क्रमे पुछलखिन।

—की करबै? चन्द्रेश्वर निसाँस छोड़ैत बाजल।

—पत्रिका निकालबै। मुकुल अकस्मात उत्साहमे बाजल।

—पत्रिका? ताहिसे?’ महेश प्रसाद पुछलखिन।

—एहन असामाजिक तत्व सभक कच्चा चिट्ठा छाबि-छाबि कऽ लोकके चेतवैत रहबै। एतवा त कैए सेबै।

ओ संवुष्ट होइत चुप भऽ गेल। चन्द्रेश्वर चुप छल। महेश प्रसाद किछु क्षण चुप रहैत फेर कहलखिन—‘बैजाय नहि।’

## मुर्दा मुर्दाक भाग्य

हमरा लोकनि जवन अस्पताल पहुँचैत रही, आ रिक्का अस्पतालक हातामे बेठिन छल कि गड़िय सब-बाधा, बाड़ी डार बाटे बाहर आँके रहल छलैक। जाल। एक्टर कफन ओड़ुओल, टहका हरियर बांसक चचरी पर निबिचन आपस मरल मनुख। स्मोको भऽ सकैत छलैक, पुच्यो। पाछाँ-पाछा ओहि मृतक परिवारक लोक सब गोआकुल। मुदा नवत लोकसँ डेर धरैत जकाँ—पाछाँ।

रिक्का पर बीमार पवित्री—हमर बच्ची—के एहि दुखसँ डेर भेल हेतैक। हम दुनू गोटे एके बेर सोचलियैक आ कौनो तेहन बात सोचऽ लगलहुँ जे ओकर डेरा-यल मोलके आन दिस कऽ धरिँक। यद्यपि मनमे धुक-धुक लागल रह्य जे अस्पतालमे छैक, लगले कोभी अने मुर्दा नहि भेटय आ ई दुखिताहि छोड़ी आर डेराय लागल।

ओहुनो ओ बेशी डेरायल रह्य। हमरा लोकनि अपने डेरायल रही। जे किछु लक्षण ई नयका प्राणघाती रोग मस्तिष्क-ज्वरक सुनल-बुझल छल, सँह बुझाय लागल तँ दुबड़इत ओकरा रिक्कापर लादि कऽ अस्पताल लऽ गेल रहियैक। हम एहि दुआरे घबड़ा गेल रही जे हमरा विश्वास भऽ गेल रह्य जे वैह डेर धरिँक। यद्यपि सभहक ई विश्वास छलैक जे ई रोग एखन बिहारमे नहिये जकाँ अवलैक अछि। पटनामे एक-आध टा घटना भेलैक अछि। ताहि पर स्वास्थ्य मंत्री आ स्वास्थ्य विभाग समेत राज छानोक पैघ-पैघ डाक्टर लोकनि विचार-विमर्शमे लागल छथि। मुदा भागलपुरमे ई बीमारी एखन नहि पहुँचलैक अछि, से लोकक विश्वास रहैक। तँतो जेँकि मनमे धुक-धुक बनले रहैत छैक लोककेँ तेँ माही चिन्ता-आशंका दुआरे हमरा लोकनि घबड़इत ओकरा अस्पताल लऽ गेलियैक। खूब माय-दर्द रहैक काहिहूँ तँ, बोखार आ देह टटावब। संगहि एकटा रद्द सेहो भऽ गेल रहैक ओकरा।

अस्पतालक हातामे प्रवेश करिने कालक ई दुख भेल। मन आर कोमादन करऽ लागल। ई एना किएक सभसँ पहिने सोझाँमे मुरदा भेटल?

खैर! ओकरा इमर्जेन्सी आ आउटडोरमे देखाओल गेलैक। डाक्टर जांच कइलखिन—बिछाओलपर सुताकऽ पेद, जीहु, आँखि आ पुछताछ।

पूजा बड़ा, नहि घबड़इयवाक आपवाहन दैत खून जांचक मुसल दैत दोसर रोगीमे व्यस्त भऽ गेलाह।



खून जीवऽ लेल बेलाक बाद रिक्ता पर पक्षिनीके लऽ कऽ वाली बबाद कीनैत डेरा चल जायि, नाही कार्यक्रमक सङ हमराजीकमि अस्पतालसँ बाहर होयबाक उप-  
क्रम कयलहुँ तँ एकटा दोसर सब बाबा उतरवरिया बार्डमे—पछिला सँ किछु दोसर  
प्रकारक सबबाबा ।

लाज ककजमे सजाओल कुल आदिसँ विशिष्ट बनल । पाछाँ-पाछाँ धूप जैल ।  
लोको सब साधारणतः सम्पन्न जकाँ । सबक अकुतिपर कुत मिलाकऽ एकटा सन्तुष्ट  
भाव । लोकक कारिख कतहुँ नहि । प्रसन्नता सम्पन्नताक सब लक्षणसँ भरल-पूरल ।  
बाबा-बाबा मेहो । यद्यपि ये कार्यक्रम अस्पतालसँ बाहर मुख्य सङ्कपर रहैक । सब  
बाबा-बाबाबला अनमन नहिना ठाढ़ रहैक जेना बीडबला मैदानमे प्रतिपोगी सब  
फटवका छुटवाक प्रतीक्षा मे साकांक्ष रहैल अछि, बीडिकऽ पहिने पहुँचबा लेल ।

पूरा अर्थी खूब भक्ष्यतासँ सजाओल रहैक आ अपरसँ बसक संजप जकाँ बना-  
ओल रहैक जातिपर रंग-रंगरंगक पूल सब बायि कऽ लगाओल रहैक । खूब नहीबला  
ओछाओल आ भवमयी सकियापर ओहि सबक मात्रा भऽ रहल छलैक । यद्यपि एखन  
कोनो धूम धड़का रहैक नहि, मुदा देखलसँ एतदम दुसाहम जे सभटा धूप-छड़िका  
जेना मुरदा मुँह बयले चुप छैक आ जे घड़ी मे बाजब शुरू कयलकैए ।

यात्रामे सब स्तरक, वर्गक लोक । मोन जुलुस जकाँ रहैक । भरिसक सभसँ  
पाछाँ जे दू नीम टा फिएट-एम्बेसडर सब ससुरल अवैत रहैक सेही सब डाक्टर सभक  
नहि, एही भव्य सबबाबाक संग रहैक ।

ओहि सबकेँ सङ्क्रमे मिलिते एकाएक घड़ीघण्ट टमटनाय समर्पक आ बँड  
बाबा मेहो आसन्नत घरि आवाज लठबऽ लगलैक ।

कन्हापर समझाक क्षीरा जकाँ लटकौने एकटा मुंशीजी-प्रकारक लोक अपन  
हाथ दऽ कऽ ओहि क्षीरी तँ एक मुट्ठी तुर, लावा आ पाठ निकालि कऽ सङ्कपर छीटि  
देल्कै आ जेना छोटस महमपर पड़बा सब लुछनैए, तहिना तंग-धरंग गरीब गुरबाक  
इच्छा सब सङ्कपर खसैत-बडैत ओहि पर सपटल आ पाठ लुटलक । अपना तुरक  
कोनो छौड़ा सङ्गे सगडा कयलक, फेर सबबाबा संगे आमाँ बडि गेल एहि उमेदमे जे  
अगिला बेर मुंशीजी पाइ मुट्ठीतैक तँ ओकरे हाथ लगलैक पाइ ।

सबबाबा बडि रहल अछि । घड़ीघंट जाजि रहल अछि । बँड बाबा आसमन कऽ  
रहल अछि, आ अनाथ छौड़ा-छौड़ीक टोली मेहो बडि रहल अछि अर्धक संगे । सबक  
एक-एक मुदा आशासँ जगमग-मिल्लइत ।

आकि फेर मुंशीजी क्षीरीमे हाथ देलबीक आ सब जेना साँस रोकि कऽ तँवार  
भऽ गेल । सबक डेगो बगल जाइक आ मालिकक हाथमे रोटीकेँ वेचैत कुकुर जकाँ  
सबक आखि मुंशीजीक हाथ पर लागल रहैक ।

मुंशीजी फेर मुट्ठी लुटलक आ सब छौड़ा सब एक्के छाम लपटल । ओकरा  
ओ छललैत, ओकरा ओ । केकरो पता नहि छलैक जे आखिर पाइ ककरा हाथ लगलैक ।  
असलमे पाइ नाम मात्र रहैक । एकबेर मे संभवतः मुंशीजी दू चारि टा नवका  
दुपडआही लुटलैक आ भरि मुट्ठी तुर आ लावा ।

एहि बेर एक टा छौड़ा पाइ लुटलक । साहस आ क्षीणता मे तनक जान  
देल्कैक जे खूब जोरसँ खसि पड़ल आ ओकर कप्पार सङ्कपर बजरि गेलैक । कारण  
अखने ओ लुटाओल पाइ लुटऽ कि ओही सङ्गे ओकरा पैर पर इ-चरिटा छौड़ा मेहो  
कूदि गेलैक । थप, ओकर कप्परसँ गोमिन बडऽ लगलैक । कुदा ओकर मुनल मुट्ठीमे  
एक टा कुनडभरि आवि गेल रहैक । ओ मुट्ठीमे दुपडआही पायिकऽ प्रसन्न रहल ।  
कप्परसँ टघरैत खूनक ओकरा कोनो फिकिर नहि जेना ।

ओकर संतो सबक आखिमे तयारि ईप्सा रहैक जे वृषवाही ओकरे हाथ गामि  
गेलैक । ओ छौड़ा देहून परत धुरा लाइलक आ कप्परक गोमिन पोछलक । फेर  
दुपडआहीकेँ पैरक जेवनेमे सन्तुष्टाकऽ आखि यहीमे मुंशीजीक सङ्गे फेर अनमन रोटीक  
प्रपाशामे कुकुर जकाँ बडऽ लागल । उठल—मुट्ठी आ नजरि मुंशीक सोडा दिस अ-  
वेत सङ्क पर ।

आखिसँ ई धूम आ कानसँ बाजाक, घड़ीघंटक एवं हल्का-मुल्का दूर होइत  
चल गेल । खाली विमागमे ओहि कप्पर-लुटलाटा छौड़ाक चित्र जमल रहल जेकरा  
देहूनमे धुरा लागल छलैक, कने छिलापल छलैक आ कप्पर कूटि गेल हाथमे लुटलाटा  
दुपडआही रहैक ।

एहि बीच तेसर सबबाबा देखावल । मनमे एक सङ्क लेल चिन्ता भेल, मोन  
पाइऽ लगलहुँ, कोनो महामारी तँ नहि फैलल छैक ग्रहरमे । ओना, किछु दिन पूर्व तँ  
रहैक पसरल, मुदा आइ काहि तँ नहि ? तखन एके दिन एतनी कालमे एतेक एतेक  
सबबाबा कियेक ? आखिर ओखइ की भऽ सकैत छैक एकर ?

अस्पतालक ओही द्वार बाटे एकटा छोट पर मुर्दा राखल चारि कन्हा पर बाहर  
निकलैत । पूरा सँपनो नहि । पूरल घड़रिमे ओ मुर्दा कतना माथसँ मुट्ठी धरि  
साँवल । दुनु पपर उचारे ओकर ।

आहि चारि कन्हा पर ओ रहल, से सभटा करीब करीब तँवा हाथगई आ  
फाटल संजी तथा मेल चिकनद गनछा बसा लोकसभ । सब लोकसँ टेहिआयल जकाँ ।  
पाछाँ-पाछाँ एकटा ब्रासीय स्त्री, गन्दा पड़िया आ तूना छिट्ठातन केककेँ सभमे, खलिये  
पयरे, कनैत-विलाप करैत अवैत । एकटा पुरुष ओकरा मागबना रेल । ओ चिकरैत  
मुर्दाक पाछाँ-पाछाँ चल अवैत । जेना कय रातिक जागति हो । ओकरा कतलो ने होइत  
रहैक । ओ यथामाध्य मुर्दाक सङ्ग चलबाक लेटामे लागलि रहल मुदा चारु लोक



किछु बेसिए तेज चलि रहल छल । एहि आनामे कुत छी मोटे । चारिटा कन्हा देनिहार आ एक टा कनिहारि, एकटा सन्ध्या देनिहार बस ।

पुरना जोरवाला छाटपर पुनू पपर उधार मुर्दा । बरारी बिल तेजीसँ बिबा भऽ जल्लक ।

की करीक द्विविधामे एक क्षण ठाढ़ रहिकऽ फेर हम झकपर दिस गेलहुँ । रिपोर्ट लेल स्वागत रहल । लाबल वू टा परिचित मित्र भेटि गेलाह ।

खूनक आंचक रिपोर्ट एक बजे बेत । तखन बजैत छलैक वारह । एक घंटाक समय । टाका डाकघरसँ माने तऽ आबै । एक टा त्रिफाक दोस्तघाट कोनिकऽ अखन आबऽ सकलहुँ तँ पोने एक बजैत छलैक ।

अस्पतालक सीमा एहि बेर जे अववावा भेटल ते दुइमेटा कन्हापर । स्थिति ई छलैक जे कोनो ना दुइमेटा छोक मुर्दा लेने आ ओकर कचरी मेडा जेना-लेना बनाओल गेल रहैक । मुर्दाक वहार कय ठाम फाटल-बोटल हरियर चदरिक कफन, कय ठाम दह उधार आ सभसँ बेसी ई जे मृतकक मुँह उधार । ताम मावक कपड़ा रहैक । एहि अववावाने माव दू टा लोक । हलाण, हकमत आ चिनइतार्य असोथकित जकाँ शय लेने आ पुनू निराधार एम्हुर-ओम्हुर देखि रहल रहल । भरिसल एहि अति अभावक अववावाक कोनो सर-सम्बन्धी नहि रहैक । ज्यों ते कनिहार, नेक्यो प्रबोध बना । दू टा पीड़ित अश्वल-दुस्वर फाल आ बेडंग बगल चचरी पर माव उधारले गेल ।

हमरा देखवाक साहस नहि भेल बेसी । मन कोनादन विराएसँ भरऽ लागल । तँ फुतिपेसँ बढलहुँ जे रिपोर्ट ली । देखिबऽ किछु कहय डाक्टर तँ से बुझैत चली डेरा दिस ।

गेलहुँ तँ पता लागल जे जांच कनिहारि डाक्टरनी साहेब कतहुँ गेल छथिन । रिपोर्ट दू बजे धरि भेटल । लाजारी घुस पड़ल आ पुनः डाक घर दिस बिबा भेलहुँ ।

अस्पतालक हाता सँ बहरें सड़क धरकऽ डाकघर दिस जे डेग बढावहुँ तँ बयें डेग पर घनगरहा गाठक तरमे एकटा कफनमे लेपटायल वरख आठ-नवैक वच्चा उत्तरि-दिशि फुटपाथ दिस कऽ राखल आ ओकरा अगल-बगल बहुत रास गवका पाइसब फेकल देखावल । अयनिहार-नेनिहार ओहि शिशु मुर्दा पर पाइ फेकने रहैक ।

राखल शिशु-मुर्दाक ठीक कातमे एकटा बूढ़—एकमात्र लोक बैसल । ने कसैत, ने बजैत । माव बैसल चुपचाप ।

ओ बूढ़ओहि शिशु मुर्दाक पिता सेहो भऽ सकै छलैक, पैस भाइ, पिस्सी, बंधी ?

मुवा, ओकरा बहुत लमसँ देखवाक साहस नहि भेल । काते-कात भुजुरैत काल एकटा बात अवश्य आपल माथमे जे ई बुडवा कानि किएक ने रहल अछि ? एकर आर लोक सभ कतऽ छेक ? एहि वच्चा केँ कतबा काल संजुक कालमे पाड़ने रहलैक । पाइ लऽ कऽ ई मुर्दा की करत ?

काते-काते आगौ बडिकऽ एक क्षण ठाढ़ रहलहुँ । एखनी सड़क पर तुरक छांट-छोट टुकड़ी सभ मामूतियी बनाजसँ अधिकाऽ एम्हुर सँ उम्हुर कऽ रहल छलैक । फूल सभ पर रिकवा, टमटम, लोक धलि गेल रहैक से पिचापल, सड़कमे सटल... । कोनो मोटर भुजुरैत ओकर बसात सँ तुरक टुकड़ी उड़िआत आइ ।

बेर-बेर घड़ी देखैत एय अग्य कयटा विभागो विचार, लर्क-चितकै करैत जखन पुनः दू बजवाक कम से अस्पताल दिस चललहुँ तँ लम्बावतः अस्पतालमे पयर देखवाक साहस आ धैर्य नहि छल । एतेक कम समयक भीतर एतेक-एतेक रंगक शय-यात्रा देखिकऽ मन खूब उद्विग्न भऽ गेल छल, मुवा रिपोर्ट आवश्यक छलैक तँ आम्हो जरूरी छल । तँ अपेक्षाकृत आर्थिक जमीनमे गाड़ने अस्पतालक अहातामे पैसलहुँ । लजीब-अजीब वातावरण । नहिमो चाहैत कानमे ककरो आतंताद, ककरो छाती-पाड़ टकासी पड़ैत रहल । डाक्टर-नर्सक बाँटबाक स्वर । दुर्गन्ध करैत घाव पीजुक भरल लाल-पीसर तूर आ पट्टीक कपड़ामे आ दवाईक दुर्गन्ध सँ व्याप्त वातावरण मे फेर प्रवेश करैत हुदय खूब कमजोर भऽ रहल छल ।

अस्पतालमे प्रवेश कयल कि एकटा कारी माटि-धूरासँ लेटायल कम वयसक पुरुष अस्पतालक दुमि पर रीदमे चित्त मूलतः देखलियैक । एतेक प्रचंड रीद मे एना भऽकऽ कोनो मनुष्यक मूलतः रहल स्वभावतः आश्चर्यजनक रहैक । ओतेक नहि सोचैत आगाँ बढली आ खूनक रिपोर्ट लेबऽ गेलहुँ ।

रिपोर्ट बहुत छानवीनक बाव भेटल तँ से छैत हम निकलहुँ आ अस्पतालक अहातेमे क्वार्टर बला ओहि सक्कधी डाक्टरकेँ पुर्जा देखीलियनि तँ विरक्ति आ उपेक्षासँ विदा करैत कहलनि—‘आज नहीं ; डेरा में नहीं । वहाँ का काम वहीं । (अर्थात् आउट डोर अस्पतालक कार्य अस्पताल मे) कल सुबह आठ बजे आइयेगा... घर में कैसे चले आते हैं आपलोग ?’

एहन सांघातिक बीमारीक अवेजा भँ जबरामल सब मस्तिष्क लेने हम काहि आठ बजे धरिक लेल अपमानित अनुभव करैत विदा भेलहुँ । आइ यदि फीस दऽकऽ देखौने रहितियैक तऽ एना नहि ने पुरवितय । यद्यपि कोनो डाक्टर अस्पताल मे जाठ बजे नहि बैसल । कहै थेल हमरा कहि देलक आठ बजे अई लेल किन्तु हम



जन्त ही जे ओ ओहि समय पर कयमपि ने रहन । कए बेरक अनुभव कह्यै । रोगी मन टाहि-टाहि करैत रहत डाक्टर बाबू कोनो पता नहि ।

हम हाथ, चित्तन हेने ओखिके डेगल आगो जमीन पर, बाट पर गाड़ने अस्पतालक हातासँ निकलऽ लगली तऽ नहियो चाहैत मैदानमे घुरा बला लोक दिस मजरि गेल । हमरा मने जे ओ लोक रीद में उठिकऽ आव कतहु छाहरि में भल गेल हैन । मुदा आश्चर्य भेल जे सुतल रहल आ ओही मुदाने निश्चिन्त, ओहिना चित्त ।

मगत में एकटा डमटम ठाढ़ रहैक आ पोस्टमार्टम होयबला अस्पतालक कोठलीक देवालक छाहरिमें पाँच-छः टा डमटम खिसा बला जकाँ लोक सब बोड़ो घुँकैत चिगित ठाढ़ रहैक । घ्यान्ग गेल ओ सब गप्प करैत रहैक—मानम नै, फवनी अथवा डाक्टर बाबू आब कखनी एकरऽ पोसमारम करत । भेलऽ । आरकऽ पूरा दिन एहूमें चलत गेलऽ । की घोड़ा के चियवई आब की घरऽ में जाइकऽ देखि खाइ लग ? अतिहार चित्तन आ दुखी छल ।

तखने वेखलियैक जे एक-दू टा डाक्टरनुमा लोक आ एकटा पुलिस संगे पुलिस-इन्स्पेक्टरनुमा लोक इनबनायल निकललैक तँ ओकरा पाछाँ ओ पाँचो छओ ठाढ़ लोक सेहो अवलैक ।

ओ सब लोक मैदान दिस आयल । आ ओहि चित्तन पड़ल सुतल लोककेँ पेरिकऽ ठाढ़ कऽ मैलैक ।

हमरा बेगी देखबाक छैयँ नहि छल । अत्ती-सँ-जखी अस्पतालक हातासँ निकलऽ लगलहुँ तँ जेना पयरे नहि बडप । तथानि अस्पतालक हातासँ बाहर भेलहुँ आ सबक पर अयली ताबत मजरि गेल किछु आगो बामा दिस ओहि समठगर थड़क गलक नीचाँ जगऽ हास-हास छरि एकटा अपंग दाही-मोछ आ सटल बला जीभखी बैसैत छल । ओकर मुँहा लोकक भाग्यक देख बला काँच नोनमें उठा-उठाकऽ ओकरा स्त्रीक हाथमें घऽ दैत छलैक । ओ लोकक मान्यक पड़ित छल । तखन ओ अपंग कनाहू जीभखी तरमे पजैबा दऽ कऽ ओठंगा कऽ राखल जीभाल बबसा में सँ कोनो-ने-कोनो स्टीन मुलवी छलैक मिरल लोक केँ । बक्तामें तिकाविकऽ दैत छलैक आ लोकमें दाज-दखिया लैत छलैक । टीक ओहीठाम उज्जर खिचिटी कपड़ा सँ झपेल ओहि बच्चा मुर्दाक बगल में धूप-चाप जात बैसल लोक—बच्चा-मुर्दाक अंगल-वेगल अतिहार-नेतिहार लोकक फेफलाहा पैसा सबकेँ समेटि कऽ गनि रहल छल । □

## बाप-बेटा

निश्चित एक टा गाम । गाममे कोनो स्कूल नहि । जे डाकघर, ते पक्की सड़क । बाहर मधुबनी सेहो दूरस्थ । गाम बजार के सभ मौसिम में बड़ कष्ट । जाड़ पमी वा भदवारि में ते आधीर, समस्या भ' जाइक । कमलाक बाढ़ि तरेक अवैक जे भरि गौआँ केँ पड़ाइत बाट नहि सूजैक । खेतमे लागल फसिब सब बहा जाइक । दरबजे-दरबजे बाढ़िक पानि हुलकी दैत रहैक । आड़नि सँ छ' क' कोनहुँ टा सीधा हुलुक बाहर सँ आनब पराभव । लोक केँ अन्न अछैत उपास पड़बाक परिस्थित आबि जाइक ।

भरि गामक विद्यार्थी केँ भरि-भरि ठाढ़ पानि देलैत कोस भरि चलि कऽ मधुबनी स्कूलमें पड़ऽ जाय पड़ैक । विद्यार्थी सब एक भोर जे स्कूल जाय सँ जखन सौम वेण घजल भऽ जाइक तखन पुरि कऽ गाम आबब । घर आवि कऽ जे भेटैक से कोनहुना दू कडर खाव आ हाकी पर हाकी छोड़ैत पाठ पाँचिते पोषिते लालटेण बिबियाक कातहि में निगमसँ ओषड़ जाय । पोषी पतरा ओहिना एसरखै रहि जाइक । धाकनिमें एतबो छैयँ नहि रहैक जे पोषी सब केँ सरिया क' रखि ली तखन सूली । इएह खिस्सा गामक सैकड़ पंचानसे परिवारक रहैक । असोरापर आ आंगनमें पडिया वा कमल ओछाओल लाहिपर असोथकित विद्यार्थी हाकी छोड़ैत वा सुतल ।

रमानाथ सेहो गामक आने विद्यार्थी सब जकाँ मधुबनी जा कऽ काटशन स्कूलमें पड़य । ओकरामें छोट दू भाय बहिन एक टा बहिन एक टा भाय । ते दुनु एहन स्कूल में नहि पड़ैक । पशनि बहिन जागकी दाढ़ कपड़ेर अपन बाप लग जिद्द ठानऽ जे हुकूम पड़ब पऽ । मुदा ओतेक दूर आ क' बेटीक आतिक पड़ब संभव नहि रहैक । गाम में कोनो स्कूल छत्रक कहाँ ?

एक दिन रमानाथ पोषी घोषेत, हाकी पर हाकी छोड़ैत पडियापर ओलहि मैल छल आधीर बिबियाक करैत टेमोक अरिषर प्रकाशमें बहिली जाइत रहय । भाय भातक ओखिआओतमें रहैक । बीच-बीचमे चुहिले तरसँ जोर सँ कहैत जे सुनि नहि रहिहै बीजा । भावस लगचिया गेली । जे बड़ो ते उतरलैए । मुदा रमानाथ के ओहि दिन बड़ पक्की बुझाइक ओ भापक बात सुनितहुँ सुतऽ जकाँ लागल । तबतहिमें ओकर बाबू आंगन अछैत पुछलनि—“आइ बूनि पड़ैत अछि जे रमानाथ बेसी पक्कन अछि । सोजे रति ओथाय लागल । बेसी पड़ाइ भेलैक अछि आइ की ?”



—'बाबू, जानकी किएक नहि पड़तैक ?' जबाब मे रमानाथ एह पृष्ठलक पिता सँ ।

—'कोना पड़ओ ! माममे तँ कोनो स्कूल छैक नहि ।' ओ कहलथिन ।

—'तँ ओ हमरा संग मधुबनी नहि जा सकैत अछि ?'

—'कतहु होइ से । लोक की कहत बेटी जाति के मधुबनी पढ़ावथ तऽ ?' ओ लाचारी देखीथिन ।

—'पढ़ओ कोनो अध्यातु बात छैक बाबू ?' ओ कहलकनि ।

—'से तँ नहि छैक हौ । परञ्च बेटीक विषयमे ओएह बुझबाक चाही एहि समाज मे ।'

मुदा रमानाथकेँ अपन पिताक बातसँ संतोष नहि भेलैक । ओ गुम-गुम रहल ।

ताबत पिता ईलचीपरसँ लोनामे पानि डारि, असीरासँ ओलती दिख पयर कऽ कोअऽ लगयलह । तखन रमानाथक पटिपार आनि एक कातमे बेसल, अगोछा सँ हाथ पयर पोछऽ लगयलह ।

—'बाबू जी, आइ हमरा विज्ञान मास्टर साहेब बेंचपर ठाढ़ कऽ देलनि ।' रमानाथ किछु दुखी स्वरें बाजल ।

—'किएक, बेंच पर कियेक ठाढ़ कयलखुन ?' ओ पुछलथिन ।

—'किताब जे नहि कीनल गेलथ एखन धरि ।' ओ कनी रोषमे बाजल । कैर पुछलकनि — 'किताब कियेक नहि कीनल गेलथ ?'

—'हाथपर सँप्या नहि आपल से' । आवऽ दैह हाथ मे तँ किन देबहु ओ भरोस देलथिन ।

—'अहाँक हाथमे रुपैया कियेक नहि अछि बाबू ?' पुछलकनि ।

—'आइ ई सब की पुछैत छह तौ ?' ओ कहलथिन ।

—'बाबू जी, अहाँ मधुबनीमे घर नै कीनि सकैत छी ?' ओ पुछलकनि ।

—'से कियेक ?'

—'मधुबनी कतेक दूर छैक । हमरो एकटा घर नहि बना दऽ सकैत छी अहाँ ? मधुबनी राखि कऽ नहि पढ़ा सकैत छी अहाँ हमरा ?'

—'कत' सँ बोआ ! मधुबनी डेरा राखथ कहीं संभव होयत हमरा बुते ?'

—'से कियेक ! आ रमेशक बाबू बुते कोना होइत छनि ?' ओ पुछलकनि ।

—'ओ सब धनीक छनि ।' कहलथिन ।

—'आ हमरा लोकनि !' रमानाथ पुछलकनि ।

—'गरीब ।' पिता जबाब देलथिन ।

—'अपना सब गरीब कियेक छी बाबू ?' ओ प्रश्न कयलकनि ।

—'बेटी बारी नहि अछि, उपजा बारी नहि अछि ने, ने बाहरे कोनो कमीआ अछि, तँ । कहना कऽ गुजर चरैए । कहना कऽ पढ़ा रहल छिय ।'

—'रमेशक बाबू के बेटी प्यारी छनि ?' ओ पुछलकनि ।

—'अबसे थिने । ओ तँ जमीन्दार छथि, दू सए बीघा सेतक जोतदार, गामक सबसँ धनिक लोक । हुनका धनक कोन कमी ?' कहलथिन पिता ।

—'हुनका एतेक सेल आ धन कतऽ सँ आबि गेलनि ?' ओ जिज्ञासा कयलकनि ।

—'बहुतराख उपजा बारी होइत छनि । जीमोक गाछ बिकाइ छनि । बड़का बड़का बँसबाड़ छनि, खरहोड़ छनि, से सब बिकाइत छनि । बड़का बड़का पोखरि छनि लकर मखान मौठ हजार हजार टाकामे बिकाइत छनि... ।'

—'मुदा ई सब अहाँ के कियेक नहि अछि, बाबू ?' ओ बीचहि मे टोकलकनि ।

—'सब के नहि ने रहैत छैक एतेक रास वस्तु ।' कहलथिन ।

—'सब के कियेक नहि रहैत छैक सब किछु ?'

—'एहि बुझारे जे मात्र किछुए गोदस वपन धनक बले, अपना जमा पूजीक तागति सँ अलकर वस्तु जात के बखन कऽ नैत छैक । तँ बहुत मोकक हिस्साक वस्तु मात्र किछुए पोटेक कब्जामे चलि अवेन छैक । आनक धन बित पर कब्जा कऽ बेनिहार स्थिति धनिक बनि जाइत अछि आओर जकर धन बित आनक कब्जामे चलि जाइत छैक से लोक भऽ जाइत अछि गरीब ।' पिता खूब ज्ञान भऽ कऽ ओकरा खुलओलथिन ।

—'धनिक केँ सब लोक बड़ मानैत छैक के ?' ओ पुछलकनि ।

—'हँ, से कियेक ?' ओ पुछलथिन ।

—'रमेशो तँ हमरे जगमे पड़ैत अछि । ओ अपन काएटा पोथी डेराय लेलक अछि । मास्टर साहेब ओकरा बेंच पर ठाढ़ नहि करैत छथिन । कहियो नहि । ओ तँ दुए डेगपर डेरा रखने अछि । टहलिक कऽ मजाले थनि अबैए स्कूल । हमरा तँ पयर बड़ बूझात रहैए । आ तँयो बेंच पर ठाढ़ होअऽ पड़ल ।' ओ दुखी भऽ कऽ बाजल । पिताक आकृति कोअ आ लाचारीसँ उदास भऽ गेलनि ।

—'ओकरा किछु कहथिन से घर भर नहि छनि ? धनिकहा सँ सब डेराइत अछि ।' पिता किछु भूलाक स्वरमे कहलथिन ।



—'कभी लेल डेराइत छैक लोक-अनिकहा सँ ?' ओ पुछलकनि ।

—'कुसा देखह कहिह । आइ मन बड़ थाकल बूझाइत अछि । कनी एक रती पड़ऽ वैह ।' कहैत पिता आहो ठाम कातमे पड़ि रखलथिन ।

—'अपना सब कहिधा अनिक होयब ?' ओ जिज्ञासमे पुछलकनि ।

—'से किएक ?'

—'स्कूलमे हमरा बड़ जोर सँ भूख लागि जाइत अछि ।'

—'खा कऽ जे जाइ छऽ तइयो ?' ओ पुछलथिन ।

—'मे तँ मधुबनी गुमतीए सग पचि जाइत अछि ।' हमरा पाइ कही रहैत अछि । अहाँ कही वैत छी पाइ ? कए टा विद्यार्थी त अपना मंगमे जलखे जवैए । खूब खाइत रहैए । तहि त जेजीमे पाइ रखने रहैए । कीनि कीनि कऽ चिन्तिया नदाम कि बिन्कुड खाइत रहैत अछि । हमरो बड़ मोत होइत रहैत अछि, बाबू ओ ।' बेटाक ई बात सुनि कऽ बड़ कचोट भेलनि हुनका । मुदा ओ किछु बजलाह नहि ।

—'बाबू ओ, अपना सब दिन एहिना गरीब रहब ?' बेटा अनचोकाहि पुछलकनि । हुनकर ध्यान टूटलनि ।

—'नैन । सब दिन कतहु एहिना गरीब रही ?' ओ बुझओलथिन ।

—'कहिवा भरि रहब ?' ओ पुछलकनि ।

—'हमरो लोकनि सब दिन गरीब तहि रहब । हमरो सबहुक दिन फिरत ।' ओ बुझओलथिन ।

—'अपना सबहुक दिन कहिवा फिरत ?' ओ पुछलकनि ।

—'फिरवे करतैक दिन । देखहुक नैन ।' ओ कनी खोझाइत कहलथिन ।

—'कोना दुई धियै त अहाँ ?' ओ पुछलकनि ।

—'हमर बाप कह्यो छलाह ।' ओ गान्त स्वरे कहलथिन ।

—'की कहने रहथि ?' ओ पेर पुछलकनि ।

—'कहने रहथि जे दुखक दिन बीति जाइत छैक तँ सुखक दिन अवैत छैक ।' ओ कहलथिन ।

—'कहिवा ?' रमाताथ पुछलकनि ।

—'जल्दीए ।' कहलथिन ।

—'तीनो कहिवा ?' रमाताथकेँ पिताक उतरसँ संशय नहि भेलैक ।

—'जहिवा ती खूब नीक जकाँ पढ़ि-लिखि कऽ पंच भऽ जयवह ।' खूब बुझमुक जानी कऽ जयवह सखन ।' ओ बुझओलथिन । संगहि संग गाम भरिक लोक सभमे सेल भऽ जयतैक सखने ।'

—'भरि ओहीमे सेल कोना कऽ भऽ सकतैक बाबू ओ, एतैक जगड़ा-जाँटी होइत रहैत छैक से ?' ओ चिन्तित होइत पुछलकनि ।

—'तखन जगड़े ने रजतैक अपनाये । जखन सब लोक पढ़ि-लिखि जयतैक, सब गोटय बात केबूझऽ लगतैक, सब के ई अधिकल आबि जयतैक जे जगड़ा केला सँ की लाभ, बल्कि एकमे रहलासँ लाभ छैक, तखन सभटा झंझटि खतम भऽ जयतैक ने । जगड़ा-कसाय तँ वस्तुए लऽ कऽ होइत छैक ने हजो ? से जखन सभके जाहि वस्तुक बेगता छैक से भेटऽ लगतैक, कबरो सँ वस्तु जबरजस्ती छीनल तहि जयतैक, हड़पल तहि जयतैक तँ अपनाये जगड़ा बत कियेक हेतैक ?'

—'से कोना हेतैक बाबू ?' ओ पुछलकनि ।

—'जेना भरि दोलमे इनार तँ एकहि टा छैक । सभ ओहीमेसँ पानि भरैए श्रमता भरि । कहीं ककरो सँ जगड़ा होइत छैक ? एकहि इनार सँ अपना फहरति भरि सब पानि भरि लैत अछि । दोनराकेँ अधलाह कहीं लगैत छैक ?' ओ बुझओलथिन ।

—'तखन लोक किएक ने बूझैत छैक बाबू ?'

—'जगड़ा तँ एहि दुआरे मे होइत छैक जे गाममे दू-चारि मोट केँ बखारी-बखारी धान राखल रहैत छैक, ओहिमे सुड़ा लगैत रहैत छैक आ दोसर दिश गामक बेसी लोकक धिया पुता जपासँ पर्यन्त पड़ैत रहैत छैक । एको मोती धान नहि दैत छैक । तखन जपासँ पड़ैत लोककेँ तकलीफ होइत छैक आ तामस उठैत छैक । तामस उठैत छैक आ तखन मोत मे लड़ाइक भावना होइत छैक । ई सब विषय पड़ला गुनजा पर बूझै मे अवैत छैक ।'

—'पढ़ि-लिखि लेलासँ जगड़ा सब धान्त भऽ जाइत छैक ?'

—'अबब्ये किने । शिक्षा भेटैत छैक तँ मनुबखक आबि खुजि जाइत छैक मनमे विवेक अवैत छैक तखन ओ सभटा बात आ परिस्थितिकेँ नीक जकाँ बूझऽ लगैत छैक । आ जखन मनुबख अपना बीचक बात आ समस्याकेँ ठीकसँ बुझि गेल तँ झंझटि किएक ठाढ़ हेतैक ?' ओ बजलथिन ।

—'छीक से लोक के कोना बूझऽ अवैत छैक ?' ओ पुछलकनि ।

—'जेना क्यो दुखित पड़ल । डाक्टर बजाओल नेताह । आला लगाकऽ औष कयलथिन । रोगक लक्षण पता लगा कऽ ओहि रोगकेँ छोटयबाक औषद बेलथिन । रोगी औषद खयलक आ रोग छुटि जाइत छैक कि नहि ? आवसी तिरोग भऽ जाइत छैक कि नहि ?



—“मुझ अपना नौआं सब बुझित कहा छथि ; सब नीके ना छथि ?”

—“छथि रोगी । रोग की छैक मे बुझलहुक ? गरीबो, अज्ञानता आ अपना स्वायंमे आन्दूर भऽ कऽ अहिमे मतभेद आ लगवऽ ।”

—“त एकर कोन बयाह ?” ओ पूछलकनि ।

—“जानी बनव । विद्या पढ़व । समाजक दरिद्रताकेँ लोक-लोकाक विभेद केँ खत्म करव । अपनाहि सुख आ मुनीतामे लटकल नहि रहि कऽ अपन दोलबैया-नौआंकेँ सुख मुनीताक नेहो द्याल राखि कऽ जीवन वापन करवाक स्वभाव बनौलामे । बुझलहुक बातकेँ ? पूछैत पिता आमा बजलधिन जे ‘विद्या सब किछु बुझा-मुझा बेत छैक मनुष्य केँ’ । कोनो समस्याक जड़ि कतऽ छैक आ की छैक से बुझा दै छैक । नीक जकाँ पढ़वऽ लिखवऽ त अपन बुझि जखनहुक । तोहँ मन लगावऽ पढ़ैत रहूँ ।”

लावत भावस भ’ गेल रहनि । स्त्री ओलहिम सोर कयलधिन तँ बाप बेटा दुनू मोटय उठि कऽ साथे गेल गेलाह । लग जइतहि जेना नाकमे कोनो मध पैसि गेलैक । रमानाथ बुझलकैक । आपनमे कट्टीलक चाउरक मध खीड़ैत भात रहैक । भात पर लेसाइके दालि । कोनहुना भात रानि कऽ दू-तीन कर भीड़ैत, घट-घट धानि पोथैत ओ बैसल रहल । नाकमे गरम भातक भभकैत भाव लगेत रहैक । छुच्छ भात आ खेमाइके पमिसोह दालि । ओ बैसन होइत लठल आ हाव धोअ लागल । माय-कपड़ो कतलधिन लाय, ओ नहि बैसल । ओकर मोन फेर देन रहैक ।

ओ अतडा-पतडा कऽ सूतऽ लागल । कोनक काज धरि बेकटा कयलक । निम्न नहि होइक ।

कए मास पत्रिभुका एक डा बात मोन पड़ल छलैक रमानाथकेँ । एक दिन ओ रमेशक आँगन गेल रहल तँ रमेश खाइत रहैक । आपनमे मकलीआ चाउरक भात आ छोकलावा दानि आ नीमन तरकारीक मुगन्धि जेना ओकरा सीसे वेहेमे पैसि गेल रहैक । भरि आपनमे मुगन्धि पसरल रहैक । एह क्षण से ओकरा नाक आ मोनमे पैसि गेल रहैक । ओकरा आश्चर्य भेल रहैक जे एहन सुन्दर खेनाइ के पर्वल रमेश छोड़ि कऽ उठि गेल रहैक जे “तँ नीक लवैए ।” उठैत काल दूधक भरखो वाटी ओकरा पएर सँ लागि कऽ उठैत गेल रहैक । मुझ एकाँ रती अकसोच नहि ।

रमानाथक मोनमे सँह दालिक समकक स्मृति पैसि गेल रहैक आ भूख सँ ओकर आँत ऐठल जा रहल छलैक । निम्न नहि भऽ रहल छलैक । कएटा आन-आन बात मोनमे गड़ऽ लगलैक अपना आँखि आ हृदयमे लखन ओकरा अपना आ रमेशक फकी आर देखार वृक्षा लखलैक । रमेशक कपड़ा-लत्ता, जुता-पैताजा केहन सँधल आ मुन्दर रहैत छैक ? लखन कि ओकरा अपना एकहि टा पैट-हाक सट पर

काज चलैक छैक । पएरमे जुता पर्वल नहि छैक । ओकर छोट बहीन आ माय मिसमेर गुनल रहैक । ओकराह लोकनिकेँ कहाँ छैक नीक कपड़ा-लत्ता । ओकरा मोन पड़लैक जे बाबूकेँ पेशे तँ फटने चिटल बम्ब आ मायक बेह पर तँ ओ कहियो अहि धरि दड़ नुआ देखनहि नहि छैक ।

ई बात ओकरा बड़ खराब लगलैक । एतने नहि, लखन कि रमानाथ अपना धरम फराक रघुनाथ कवाक धिया पुता दऽ सोचलक तँ हुमको नीकनिक ओएह हाल । लखन परशुराम भाइक परिवार दऽ सोचलक, जयानन्द पंडितजीक परिवार दऽ सोचलक, सगना आ नेपला दऽ सोचलक सबहुक बच्चा बिसडी पहिरने । कपड़ो बकरी चरबैत गुजर करैत, क्यो कोनो बाबूक महिमवारी करैत जीवैत अछि, दू-कर भेटैत छैक खायक । एकहु टा छोड़ा स्कूलक मुँहो नहि देखने होयत । माय खवासिनीक काज करैत छैक । बाप हरवाटी घानिहारी करैत छैक, जाइ गयो घुन्ये वेहे कटैत छैक ।

एकर उनटा, गाम भरिमे माय किछुए पर छैक जे केहन सुखमे रहैत अछि जे इच्छा होइत छैक से खाइत पीवैत मजामँ जीवैत । आर कथलाहा गीने गीआँ त कहना कऽ धिक्कीर करैत ।

—एता किएक छैक ? एकहि गामक लोक सभमे बेसी धरीमे नीक किएक ? आ हु-चारिए टा लोक धनीक कोना भऽ जाइत छैक एहि प्रश्न पर सोचि-सोचि कऽ ओकर बात मसिष्क धोर-धोर होअऽ लगलैक ।

रमेशक बाप भरि दिन पान जई दकईल, दयानमे गतरंज पसारने हुमी ठट्टा करैत रहैत छथिन । आइ धरि कहाँ कोनो काज करैत देखनिअनि । तँवो केहन मजाने सब वस्तु भेटैत रहैत छनि ? हुमर बाप ओनेक भोरे सँ खटैत-खटैत प्रश्न देने रहैत छथि तँवो हुनका बड़ बहुत त सुखी रोटी । माँक-माँक रोटी खाइत-खाइत जानपर आकत । भात जे भेटबो कयन तँ ओएह कटौलडा चाउरक भभकैत भेल ।

जेर रमानाथकेँ ओएह मोन पड़ि गेलैक रमेश आहुनक समकीआ भात दानि, नीमन परकारी, देराबल दूध । एक बिस मनमे पसरल ओजक ई मुगन्धि आ दोसर चिम भूखे ऐठल जा रहल आँत ।

ओ करोट पर करोट बदलैत रहल । रानि जेना खोत बाइने हुइक । ओ घामे नहा गेल आ बेह परलक मुदराहो गंजी के खोलि क फेर सुतवाक जेपटा करा लागल । गुषा ओकरा बुझावत रहलैक जेना लखिवायक छैक, जे घड़ी ने ओर भेलैक । कथन जेवैत भोर ? □



## रखवारी

जहन हुआ बहि रहल छलै, ओहू नामने तेहन किछु होएब अवश्यभावी छलैक आ पुरान अनुभवी लोक, जेहो किछु आब बचल छथि, नाकमे नोसि मुड़कैत आ तरहसी-पर तमाकुल थपकैत बेर-बेर ई चर्च करैत छथि—जे गामक दया बिन-दिन खराब भेल जा रहल अछि। जानि ते भगवानक की इच्छा छनि ? कहां होइ छलै एहन दंगा-फसाव ? मामूली मतभेद किछु भेलो कएलै तँ पंचैतीस बाहर धरि महि जाए पड़ैत छलैक। कोनो दलानमे किवा बेसीस बेसी दुर्गस्थानमे तय तमकीया भ' जाए छलै। हुनू पक्ष शान्त। अपन-अपन काजमे लागल। मामिला-मोकदमा तँ केजी घुसाक द्वारे सोचिती नहि छलै।

आब तँ पंच लोकनिक ओ हाजत रहल नहि। उचिते ते। जखन पंचैतीस मुँह देखिक' मुंगवा परसल जेत तँ निसाफ की जाएत ? आ जखन निसाफे नहि भेलै त' कधी पंचैती, की कोट कचहरी ? पहिने पंच लोकनि एना नहि करथि। उचिते। लोको पंचैतीक शरण जाइ छल। आबुक पंचैतीक हासनि सएह। गरीब लोक जेवो कए करओ ?

एक तरहँ प्रलान करैत शिवनन्दन चौधरी अपन ताहिहा दलानक आमा छुट्टीक स्थानपर सबि डोरीक बेल्ट सन यताक', खड़ाम जहिरने उहलि रहल छलाह आ क्षिति ओ रहल छलाह।

जेहन गामक वातावरण आइसो होइ छैक, कचिया हाँसुपर जान बड़बाब' जाइत-जाइत घुघुपा पूछि देखक—“कोन बात भेलैए काका ? केर किछु भेलै कि गाममे ?”

—ने तँ की ! हम बताहू भ' गेलोहि रे ? आब से की पूछै छै, जे किछु भेलैए। रातिए पछवाड़ि दोसरे नै बकि गेल रहे ? तूँ सँझरातिए मूर्ति रहल छलै की ? ओ मुठभिन।

—सत्तो। काहिहू खेतसँ माथ बड़ टनक छल, से बिन सेने-पीने पड़ि रहल छलहुँ। सेवो की करिहहुँ, ई मडुआ रोटी करिवथी खेबाक इच्छा, इच्छ कोन ? ओ बाजल आ जाए लागल।

—से की कहै छ'। एखन तँ बुझ' जे समस्त गाममे सएमे पंचानवे अरक जिनगी बचा रहल छै, इएह करिकवा अन्न, मडुआ।

बड़ घुणा करै छलहुँक तूँ सब कमका पाँक काटिपर अहुरसँ धान-उपजाक'

खएवाक जमानामे। ही ! एएह मडुआ मेना-भुटकाक जान बचीने छह। देखिहक अगिला साल केर सगर बाध मडुआसँ पीछल रहतहु। उपाये की ? एना कही ताने साल इहवरक कोप देखलहुक ? कवनो चुप पाति। कवनो घरतीपर एत'सँ ओत' धरि बहारि फाटल। एहनमे एएह मडुआ कि अलुआ। हपसि-हपसिक' खाउ, ने तँ तेना भुटकाक संगे मरि जाउ। शिवनन्दन बजलाह।

—नै। आब काका तेसरो एकटा ब्राह्म छै। ओ बाजल।

—से की ही ?

—रघुनाथक पूरा परिवार जकाँ गाम छोड़िक' कमाइक लेल पंजाब बलि जाउ। ओ बाजल।

—ने ! धनुकटोलीक मेहो कनेको परिवार ने कबि मेले सिनीमुडी, जलगाइ-गुडी, आसाम ? काका जोड़लनि।

—मुदा जे कहियो काका, मडुआ रोटी खाइथो' अपन मडैया आ एहि साइके' छोड़िके जेबाक मौन नै करै छै। जानि ने कोना लोक नाम छोड़िक' ओतेक दूर चलि जाइए। हम तँ भरि दिनक हेतु कोन भरि मधुवनियो बलि जाइ छी तँ मोन टांगल रहैए। ओ बाजल।

—ने की करबहुक ? केओ कि सबसँ गाम छोड़िक' जाइ छै ?

—की करए ? गाममे खेतमे सोमि नै भेटि पवै, लगातार रोटी पड़ए लगै कवनो बाहिमे सब दहा जाय। आबिक सोसो तेना भुषसँ मरए लगै तँ मनुष्य की करए ? मरबासो नीक नै छै जे कलहु बलि जाए। जान तँ बचतै। ही जान छै तँ जहान छै। शिवनन्दन काका बजलाह। आब तँ बड़लोक सोच' पड़तै। ओ बड़कोटा निसाम घोड़लनि।

—हम तँ काका नै जेवै। चाहे किछु होउ। गाम छोड़िक' जेवै ?

—कहिया धरि नै जेवै। कोडीक मडुआ जहिए सघती ताही दिन सोच' पड़तो। गाममे जीबाक आम कोनो उपाय ? ओही पुरता रेट पर मजुरी। आब सेहो नहि। तखन ? शिवनन्दन पुछलकै।

—कोन उपाय ? ओ चुप रहि गेल। सरकार मजदूरी बढ़ेलकैए। जे राखि सकै छथि से आब रजिते ने छथि जे हमरा लग काज नहि अछि। आब निज काज ? उपाये की ?

—नै छै। तखन तँ दू-चारि-दस लोकक गाम छी—ई गाम। हुनके रहत। आब एहि उमेरमे जखन हम मोचि रहल छी जे कलहु निकलि चली एहि गाममे तखन तौ तँ एखन जुझल छह। माघपर कर्जा आ परिवार छ। समय अछैत नै सेतब' तँ ने ऐ पार रहब' ने ओइ पार रहब'। शिवनन्दन चेत्तीनीपर ओकर थड़ आर मुफि गेलै पेट दिमक'।



"अच्छा काका ! कतलु वर्गवा अपने मे बिवा भ' जाय खेत विस । कचिया केर पड़ले रहि जायत एहिना ।" ओ हड़बड़इत जय तामल तँ चिकनमदन पुछलखिन, "तोहर माथक टनकक एखन की हूय छह ? ते तँ कहुने नै केनह ।"

—अरे, पेटक जवारा नय छीक' ई छै काका । एखन लगैए जे छीक अछि । ओ धर्म्य आ विवशनासँ मुसफिदाइत लीजनासँ थक गेल आबू ।

ओम्हएँ पछवर्गइ टोनक एक गोटे तैत दित जइत अमरलै । जिवननवन जाका चित्तामन सङ्गम खडखडैत दहलैत रह्यहाह आ कातिह रलिक पछवारि टोनक मगड़ा आ धनुकाक सम्बन्धमे सोचैत रह्यहाह । एक दिन आर एही गाम छोड़एवला तय पर धनुका बाजल छल जे कतलु काक लोभम कारणे गाम छोड़िक' जाइत छथि । ई साँचिक' जे ओहिठाम खूब लोक मजदूरी भेटत, ते लोक जेत' लोक जक' खाएत रहिरल । ताही लोभम जाइए सय । मज्जा लूटै ल ।

—सेहो की अधलाह छै ? जे अछि जे खूब मुखसँ, शान्तिसँ आश' नै चाहत, जखन ओकरे सोसाँ किछु लोक आराम आ तृप्ति-शान्तिसँ जांचैत छथि । हुनकर बहुत-बेडा लोक पहिरैत-ओड़ैत छति त' ई सब देखिक' सभक भ्रष्टा होइत छैक जे 'हमहूँ' सभ तँ एहिना रहि सकैत छी, अपन-परिवारक संग । आ एह बातमे जत'सँ कतलु वाद मुझैत छै लोक ओहिपर चलि पड़ैत अछि, बाह्य गाम छोड़िक' महर वा प्रदेश । ई त' एकवम स्वाभाविक बात छै । लोक नै आछै छै । एकरा रोकल नहि जा सक' छै । राकल जेबाको मे चाहियेक । ए पर धनुका चुप रहि गेल छल । कतक कालक बाद जांचल छल—कहुँ त' छह सौलहो आना-सत्ते काका । मुदा तैयो हवय नहि मानैए गाम छोड़बाक खेत । आना तँ त' बुझित छह जे जेहो पन्द्रह कट्टा खेग ठाकुर बाबू बटाइ देने छलाह सेहो ओ ऐ बेर छोड़ा खिजनि तँ ऐ बेर स' ओहि छोड़को सन उपजा-बारीक बाधा-समाप्ति । की कल' आ ते जमीन ओ अपने आवास, करिय । सेहो नहि । परलो पड़ल रहि नेजनि । मुदा हमरासँ छीनि नेजनि । ओ दुखी छल ।

ई सब एखन आर चलैत धनुका । आश' तँ आर तेओसँ सोचबा बुझबाक जरूरति आबि गेल छैक । शिवभग्न बाहु ई सब सोचैत जा रहल छलाह कि ओम्हएँ नवीन आयल आ बहुत फाँध आ निरदाम बाबाए खामल—ई जमु जे आछ, बड़का जाति दहो अछि । ई तँ खापी ओकरा सभक संग रहिते नै आछ ओकरा सभक संग एके धारी-वाटी मे बिगड़ खाइए आ एकसँ एक पड़पड़ करैत रहेए । ओ तँ धनुका-बादव सभसँ मिलल अछि आ जाइत-नजुरक खेलाक काज करैए । ओ तँ एहू कमनीस भ' बेल आछ जे मात्र ओकरा सभक चौकड़ी मे उछित बेसैत नहि अछि, ओकरे सभक धारी मे भोजनो करैए, सोटांमे मणिओ बिबैए । कहुँ अना एतेक तैणिक वंशित रहथि

ते हुनकर बेडा केहन अजाति भ' गेलनि । ऐ दुआरे, ते जे पूर्व छै, पड़लक शिखरसँ नै ओ । ओछ-फुटैत धरिक बिचार नै । ओ भाषण जकाँ शाइने जाइ छल ।

—नै पड़लक-लिखलक से तोहर बाज लोक छह । बिधा तँ बहुत जरूरी छै जीवन आ लोक समाजक हेतु । हरेक मनुष्यक हेतु । मुदा पंडितक धेरे भेला तँ की हेतु ? ओहो मजदूर अछि गामक मजदूरी क' लोकम पिलबैए, कोनो पंडितक क' क' जेबैए नै । आ ओकर सब सभो सेहो मजदूरी क' क' जीवन पिलबैए । ते दुआरे ते मात्र ओकर वृत्तक परिलक्षित एक छै, काजसँ दुत्तक जावियो एक छै । जन-जातिहारक जाति । ते अलके किएक ते दुई छहक लो' सभ ? कुमक जरूरी छह । पंडितक बेडा भेने ओकरा जीवनमे पढ़वा लिखबाक को अवसर भेटल । बाबो नै पंडितक, पुरहिताइसँ कोनो तरहें गुस्सा करै छलखिन । सोन नै छह, ववाइय बिना त' भरि गेल । एही गाममे । सब जने छै । तैयो एतेक दिनसँ जातिक विचार ? एहि जुममे ।

तो सभ एहन सय करै छह—एतेक धर्ममन्त्रो । ई देखिक' अजबे लगैए । ओ अपन कथक-काहुँ दखैत बजलाह—बलिक लाज होइए ।

—बाह, छै जाहे मुखे, वरुषा नै बालुमक छै । ओ केर अएह एक स्थान केवक ।

बहो कुतक छह तोहर । हम फलकलामे 25 साल जीवन बिजीने छी । कतेको समाजमे लोक तरहक लोकक बीध घुमल-फिरल छी । ओत आब एहन पचो नै होइ छै । ओत आय लोक सभमे असली जेतना आबि गेल छै, ते' कमसँ कम जाति के ल' क' ओहिठाम कोनो मतलब कि जगड़ा-फताद भरितके देखबहुक । हँ, अपना वर्ग के ल' क' छै ।

—मने ?

—एह कि जेना—कल-कारखानामे जे मजदूर काज करैत अछि, ओकरा सभक हितमे जे बात छै, तकरा लेल सब मजदूर, संगठन दलक' आ एक भ' क' लड़ैत अछि आ जीवैत अछि । अपन अधिकार त' क' छोड़ैत अछि । किएक त' एहिमे सम्पूर्ण मजदूर वर्गक आओर समाजक इक्ति काज करैत रहैत अछि । ओकरा सभक मिल-मालिक आ सरकारके सुकए पड़ैत छैक । जखन कि ओहि संगठनक मजदूरमे कोनो एकहि जातिक लोक रहैत छथि ? मुदा ओत' ओहि संगठनमे हुनक अपन अपन कोनो जाति नै होइछ हँ सभक उद्देश्य एक रमाछि भेने सभक स्वार्थक जाति होइत अछि । आ ई बात बुझक चाहो । किएक तँ गाममे रहैत हमरा आव कतेक प्रय भ' गेल, हमरा आव ई बात साफ-साफ समेत अछि जे गरीब सभ जन-विहार सभक जितनी ते' नै जगा' पड़ल कि एक त' आहूँ राजनीति ओकरा सभसँ भटका क' छोड़ि देने छै । कखनो जातिक नामपर लड़बा देल जाइ छै, त' कखनो प्रय कि कखनो भाषा-बोलीक नामपर ।



जखन कि ई सभ समस्या बनीटी अछि । समाजक किछु स्वार्थी लोकक मनगड़ुल समस्या । लोक सभकेँ बुझक चाहिऐ ।

—बनीटी मानै ?

हो । बापा आ छमे चाटिकेँ मनुष्य जीवन रहि सकै छै ? जीवाक खैल चाहिऐक दाना-पानी । नकर पत्ते नै ।

नवीनक बेहरासँ सगे सजे जेना ई तर्क ओकरा मनकेँ स्वीकार नै भ' रहल छलै । ओ कनेक सकल रहल फेर डेग साइत पूव दिमा मे चलि गेल । भरिसक मुलाब जाक पर दिस ?

एखन छोड़वेकाल पहिने ई छटना घटल छल कि तावत पश्चिम दिसक एक पेरिया पर दू-तीन युवक गप करैत जा रहल छलाह, ओकरा शिवनश्वर काका मुनि सकथि—ई शंभूआ छी बाबनटोलीक जामुस । दोस्ती रखैए । मुदा जाति-पाति नै मानैक इंग रखैए । ओना अछि इहो कहुर जातिवादी आ ओकरा एकर सबक भेटक चाहिऐ । ओहना ई संभव होना छै जे ओ अपन जातिक सेवास दोसर जातिक संघ दै । नकर ओकरा उएह सभ जाति बुझि क' बापाकीसँ हमरासभक बीच पटौलक । भरिसक ई सोचिनो जे ऐ जातिक बहुत लोक ओकर दोस्त छै आर ओ ओकरा सभक लेल डीक-डीक जामुसी क' सकैत अछि । ओ सभ सचय बहुत साफ नै तथापि कोशिस कएलासँ सुनवा जोग बजैत गेल छलाह ।

शिवनश्वर फेर मोचमे पड़ि गेलाह । कहैत बिचित्र छै एखन असली रंगताल ? शंभू स्वभाव आ परिस्थिति दुनूमें ओकरा सभक बीच उठै-बैसैए ओ कोनो जामुस नै । बरि ओकर जाति-विरादरीक लोक ओकरा मूख आ छोटा लोकक संघ-उठब-बैसबाक कारणेँ घृणासँ देखैत छथि आ जानिबोही मानैत छथि । ओ गरीब सेहो अछि । सेबाक-पहिरबाक साधन भरि नहि । तँ अपन जातिबला सभमे ओ साथसँ एएर छरि तिरस्कृत अछि । पड़लक लिखलक नहि तँ कतहु कोनो नोकरीयो नै भेटि सकै छै । ओहना कतेक मोटे त' पड़ल-लिखल अछि । तकरे सभके कोन नोकरी भेटि रहल छै आधार-विचार पूजा-पाठक अभ्यास सेहो नै छै जे लोक ओकरा वायक स्थानपर पुरहिताइ लेल स्वीकार क' लेथि । मुख्यमे जखन कम उमेर छलैक, एक पैघ लोकक कैक महीसामेस एकटा पोसिया ल' क' पोसैत छल । पीठपर बैसि क' लरावए । घात काटि क' आनय-सुआवय आ दूध दूहिक' बेचय । कतेक भनेक खर्च निकति बर्ब छलै । पंडितजीकेँ सेहो मददि भेटि जाइ छलन्हि । ऐ तरहें वृत्त साँझ दूधक आमदनीसँ ओ परिवारक थोड़ेक आर्थिक मददि क' दैत छल ।

एक दिन जखन महीस शक्ति भेल त' शंभू जान उपछि क' ओकर सेवा कयलक । जत' तत' में दोसर गामक बाध धरिमें हरिपर घास काटि-काटि क' अनेत

छल वा महीसकेँ खुआक पोसैत छल । ए मेवासँ महीस बेस दूधगरि निकललैक । बिप्लै पाड़ीए तरे । इहो खुगिएक बात । जखन बस बितक बाद महीस शुद्ध भेलै आ बृहल जाए लगलै त' एक मशीनिया बालटीन भरि क' दूध ! लोकक आँखि फाटि गेलैक । ई छोटाका छोड़ा कमाल के सेवा केवल महीसक । ओहि बेप समस्त गाममे ककरो महीस एतेक दूध नै दै छलै । आ एकर समस्त गाममे कतहु जनसामे कतहु ईधामे चर्च भेलै ।

महिसिक मालिककेँ सेहो कहां मुक्त भेलै । आ ओकर मोचमे स्वार्थ भरि गेलै । ओ कोनो तरहें महीस पोसिया छोड़ा सेवाक योजना कारण बगलाइ जाहिमें महीस पोसिया छोड़कए अपन बरबज्जेपर आनि लेथि । मालिक अपन पछमे जखन चाहे छै, त' नकर अनेक रस्ता होथ छै । नै किछु कुरलै त' इएह आरोप लगल' कि दूध बेचामे ओ गड़बड़ी करैत अछि—बेहमानी करैत अछि, तँ महिसिक हिसाब क' क' ओ छोड़ि दै महीस । चाहे हमरा अपने दूध कीन' पड़ैए । तँ मालिक महीस छोड़ा गेलाइ । ई बात सुनि क' ओकर बाल मन धकसँ रहि गेलै । ऐ बेर ओ सोचलक जे दूधमें जे पाई जमा करल जाहिमें एक आर महीस कीनल । छोट सन महीसक घर बनायत आ ओकर भाप के कूटि-पीसिक' जे गुजर कर' पड़ैत छैक, बाबूके बेराम खुल्लो पर स्थान क' क' जे घरे-घर पूजा-पाठ करए जाय पड़ैत छनि, ताहि सवमें छट्टी भेटि जेतनि । मुदा ई त' दोहरे मप सोझाँ आयि गेलै । ओ भेट करए गेल महीसक मालिकसँ भ' कथा सुन' पड़लै—देखबामे छोड़ा छै आ हमरमें चालाकी । दूध बेहमानी करै छै ?' मालिक ओकरा डपटलक ।

—जानथि भगवती ! मालिक एक वृत्तक बेहमानी नै करै छी । अहाँ अपने दुहवा लेल कक अपन पारमे । शंभू देखनिवाँ करै बाजल ।

—किछु नै ! हमरा आव दूध दुहवाव' पड़ल ओड़िठाम । ई नै हेतौ, हमरा कैक मोटे कहलक अछि बहुत दूध होइ छी महीस के । हमरा पारमे सबटा राखि क' बेचै छै । महीस आव' हम अपनहि राखब । हिसाब भ' जेती तोहर ।

ओ फेर किछु कह' चाहलक त' मालिक डपटि देखनि आ कहलनि—पुरहितजीकेँ कहियहुन भेट करलाइ सोचमे । काहिइ महीस हम अपन घेर पर ल' आनब । मालिक उठि क' हुँवलीक भीतर चलि गेलाह । ओ छोड़ा सगभय कनिने अपन घर पहुँचल डीकसँ किछु कहियो नै सकल माए-बापकेँ । मुदा ऐ चोटक बाद ओहि दिनमें ओ बधल' लागल ।

जी जानक पैहननिमें पीठपर वैमि-वैमिक' जाइ बरसातमे पसर चराक' पोसल गेल तुलाक महीस जे बेहमानी क' क' ओकरासँ छीनि लेल गेलै आ गाममे किथो एक शब्दो मालिककेँ नै कहलक जे अहाँ ई अन्याय क' रहल छी, ऐ सेनाक संग आ पबैती



तक वै बैसाएस जा सकनै । तयने ओ खुलनक जे गाममे आव ओकर अपन कियो नै छै । माय-बाप सेहो खुशीसकै—“जाय रहौ, मायिकक वस्तु छलै ओ ज' गेलै । ऐमे तू की क' सकै छै ? हमरा भावमे नै छल ।”

—बाह, पाल-पोस त' हम केतौ । गामिन भेल, विश्वास हमरा ओहिठाम । जैनिक धर्म खुशीसकै, हम । परेसकै हम । त' हमर बेमा नै भेल । हमरा भावमे विश्वास नै ? अहाँ के मोन नै जे कहत आपन रहण ई मर्याद । कसोद हामि जेबैत रहबि न' अही कहलियनि जे हमने वेदाके द' दिपौ, चरण, पोसल, पोसल रहत । तखन उदै रहबि ओ महीय, आ जखन मोटा देखबि, दुधपरि अ' गेलनि त' खीस भ' गेलनि आ मुठे हमरा नीय आ बटमान-बनक' महीय खीसबा क' न' भेलस । भावनी अकर एकर उच्च देखन ।

एही बीच जवन धनुकटोरीक किछु छोटो सभसँ जे ओकर खंभुरिया छलैक महीस चरबैत ओकरा सभसँ ओकर संपर्क कइलैक त' एक राति एक गोटक बाप कहलकै—सभ, हमरा दूदा महीस अछि, एकटा तोहो पोस । हुनू हमरासँ नै सम्हरण छभू बापसँ गप केल । ओ मानि गेलनि ।

जोपर दिन महीस दशअक्षर आबि गेलै । आब इहो एकटा भयानक गप भ' गेलै । कतहु होइ ? धानुकक महीस कतौ ब्राह्मण भेला पोसिया लै ? की पुन आबि गेली ? आ धानुकक एहन सहस ? ओ एही खासि समस्त ब्राह्मण टोल के नीचा देखबए जाहैत अछि आर किछु नहि । आ पुरहित महीस पुन आपस करबि । एक आन्दोलन मन जनि पड़त आ सभ के ऐ महीससँ हाथ धोअ पड़लै । महीस पुराव पड़लै ।

—ई किंचि छै नै बाबू ब्राह्मणक महीस पोसु त' ओ खोलिक' लइ जायत जे ई वदमान अछि । धानुकक महीस पोसु त' एहू सब मोटे कह' लगलाह जे ब्राह्मण भ' क धानुकक महीस पोसल ? की खराबी छै ऐ मे ? आ फेर ई सब के होइ छनि एना बजनिहार ते आ अहू—बिष्ट मानि ले छी । ओ बापसँ लक' कौसक । ई सब की हमरा सेनाइ दइए ? एकी लौकिक रोटी जेनै छी हम ए बजनाहर सभक ?

—समाजमे रहि क' मान पड़ै छै बिटा । एखन तौ नै खुशवीही । पैघ हेमे त' दुखवीही । ओ बेवस शान्तिसँ बुझौबनि ।

—मुदा ऐ तखे हमसँय बीता होयब ? हम त' पहिले भरि जायब बाबू ।

—एना किए वजै छै ? एखन हमर पुरहिताइ जे अछि । पिता भरिस देखबिन ।

—मुदा अहाँ दुखी छी । कहिय छरि जीयब ? तकर बाब ?

पुरहितसँ ओ एकएक चीज कहलैत जे अपन पैघ बेटाक सेहो एक मामूली प्रश्नक बक्षस ओ के द' सकलाह आ भुव आ अभायसँ बक्षसक' एक बिल ओ एतेक पैघ दुनियाँक सत' बलि गेल तकर पतो नै लागल । ईउ बरिस बाद ओकर एक पोस्टकार्ट एलै जे ओ

बुझीहीमे भनसीसाक काज कर' लागल अछि । अंगित) मामसँ दू टा ठोका भास-नासि ओ हिनका पडैतनि । एखन वरमाहो ठीक-ठीक समय नै भेल अछि । सेनाइ-भरिसेट छोट की आ मुनैले एकटा अछिआओन सेहो भेटल अछि । भोर आ लोकमे जाह सेहो पोसैले अछि । कवड़ा सेहो अगिला माममे देत'ह ।

ई सब कथा शिवगानन समेत छथि आ ओहि संभूक अनुक-सागति सेहो । सभू आसी भसहायता आओर अभावमे सेना-सेना जुआन भेल अछि आ गामक बुधा मजदुरक एक कर्मिणाओ सबसँ अछि । ओ गामक राजनीतिक संतुलित क' राखि सकैत अछि । ओ संगठन गठित रखैत अछि आओर गामक कहनो राजनीतिक गतिविधिमे ओकर महत्त्व-अग्रगण्य एक प्रभाव होइछ । त' लोक ओकरा जल्दी छोड़ए नाह । ओ भाविकीन छि जे ओकर सभसँ विश्वास नहीस छनि-तेन रहथि । ओही ओकरा प्रत्यक्ष क' राख' चाहैत छथि, आ आइकाहि ओकरा प्रत्यक्ष दशअक्षरपर जाहक लेल पूछल जाइ छै । एहन नै जे ओ कतबुसँ उपद्रवी, उपद्रवी बुधक भ' गेल अछि । मात्र समय आ जीवनक अनुभव सभ, गामक परिस्थिति-सभ ओकरा एतेक अक्षित द' देने छै जे ओ आव बलक डंग बुल' लागल अछि आ कतोक आल ओकरा दिमागमे काक भ' गेल छै । ओ नामक राजनीति बूझि-गेल अछि आ अपनाकेँ तकरे अनुकर गड़ि गेल अछि ओ ।

रहरतौ, बाल-बेवातकेँ ल' क' गाममे लगइ होइत रहैत छैक । कबनो आरि छोटि बेलापर, कबनो कुसिपार लोड़ि-लेला पर कबनो भाज-जालसँ जवात चरा लेला पर । ऐ सबकेँ तसकौयानि ओ कुशल मावित भेल अछि । ओ एहिना गाममे अष्टयामक व्यवस्था केना होइ, भोज-भातमे, शिव विजलीक ऐ गाममे केदमिकस कोना जराओल जाय, मे सब धरि ओ बहुत उत्पराता आ कुशलतामे करैत अछि आ लोकप्रिय अछि ।

बुधियाओ सेहो ओकरा निरादर क' रखैत छथि । एहीमे हुनका अपन वदमान आ अविवक्ष्य चलाय सुरक्षित लकैत छनि । ऐ तरहेँ सभू गामक जामित व्यवस्थामे सत्यपूर्ण बुद्धक अछि । मुदा विवादास्पद एहि मान्यमे कि ओ आजुक एहि युगमे तत्पूनी क्षममे बखत जतिक राजनीति बलि रहल अछि, जखन ओ जाति विरोधी राजनीति किण्क-क' रहल अछि ? दोसर जाति बलक एखने किण्क बखैत रहै ? ई आरोप ओकरापर ओकर तथाकथित स्वजातीय सभक छैक । आ दोसर जे लोक छथि, मे भने हुनका लथ तकर धर्ममे प्रमाण नहि छनि, तथापि सभू केँ जायूस मानैत छथि ।

सभू भरि गाममे विभाजित विभागमे दुनूक विरुद्ध अछि । आ ओ एहि विठम्भतकेँ बुझैत अछि । मुदा जेहन तत्पूनी भाताकरण गामक रहैत छै ताहिमे



ओकर कोनो उपयुक्त आ ठोस जवाब न भेटे नै छै जे ओ लोकके वास्तविक स्थिति आ अपन मोन बुझा सकए ।

गामक राजनीति: उपरसँ जंभुके मान्यता देइयो क' भीतरसँ ओकरा बारेमे ई विश्वास आ संदेह दुनू पक्षक मोनमे बनीने रहैत अछि आ एहिमे लोकक स्वार्थ सिद्ध होइत छैक । जंभु एहि बातसँ सेहो अनभिज्ञ नहि अछि । मुदा ओकर अपन बुद्धि ई कहैत छैक जे जातिवादी संघर्ष विस्तृत थोड़ समयक हेतु क्षणिक अछि, आ ओहिमे वम नहि छैक । जाति दुइटा होइत छै—'धनिक आ गरीब' ब्राह्मण अथवा आर्य, मुदा ई सभटा एकोजोना छै । ओ अशिक्षित, शिक्षित सब लोकक सौझी पड़ोसी गामक एक बड़हीक उवाहरण रहैत अछि जकरा कोनो महान ब्राह्मण सेहो आदरसँ नमस्कार करैत अछि आ वरचस्वा पर बैसाक' गौरव अनुभव करैत छथि । कोना ? जँ जाति किछु छै त' ओतेक धनिक प्रभुत्ववादी रहितो ओ निम्न जातिक अछि, ब्राह्मणक घर ओ कोना बैसि सकीए ?

दोसर दिस अपनहि गामक ओहि ब्राह्मण भिन्नमंडाके देखबैत अछि जे खाद्य-अखाद्य सब किछु पांग' आ खेवाक लेल आचार अछि । ब्राह्मण दोनसँ ल' क' मूतहर टोल धरि भीख माँगत अछि आ कमाल त' ई अछि जे अधिक भाषा आ अणत्व ओकरा ओही दोन सभमे भेटैत छैक । जखन कि अपन ब्राह्मण टोलमे घेरी लोक वनकारिण, ईत छैक ।

ओ ब्राह्मण अछि भीषमवा । ओ की अछि ? ई सब तच्छ राजनीति छी । जे तीन साँठ पाँच साल धरि देशपर राज्य कएवा ले' जमगैब अछि, आ जखन गरी छिनय लगीत छैक, तखन जनम छै ई जाति सँघर्षक राजनीति । शिवनन्दन सेहो एहि तथ्यकेँ नीक जकाँ जानि गेल छथि ।

ओ बड़बड़ाइ छथि तबीनक सग मोन पाछि क' आ फेर दइत लगीत छथि ओही बेवैनीमे । मुदा एकर आशंका हमका बनल रहैत अछि जे ई बात एकबै नहि अछि । राम एकाएक किछु अधिक गान्ध आ नंभीर वास' लागल अछि, आ एहन जखन जाग' लागल अछि त' किछु जे किछु भेलैए । से किछु बहुत बेसिए अधवाह भेलैए । हुनक आशंकाके अनुभवक एक परिपक्व परंपरा छलनि । से धीर होइत-होइत अंदाज खानि गेलनि । किछु लोक बाध दिससँ भागल-भागल एलह आ कोनो तरहेँ दम लेल बजनाह—'बड़ अंतर्ध' भ' गेल । दुखहरणकेँ गारि देलकै । 'अएह सुनलकै, चौकल—दुखहरण ? ओहि गरीब ब्राह्मण लोककेँ मारि देलकै ? के ? कोना ?

हकमैन सभदिया बाजल । बड़बधात वला खेतमे ओ कोदरि पाड़ैत छलाह तखने उपर-पर सँ एक सँ गोटेक हमेसी एलै । घेरि लेलकै । पहिने नाठीमे डेंगा देलकै तखन भीडारिमे खण्ड-खण्ड क' देलकै ।

—की ? हुनकर मुँह खूजल रहि गेलनि ।

—हँ । ओ कहलनि ।

—मुदा किएक ? के छल ओ सब ?

—कहावनि मुखियाजी अपने हँसिरीक आगू-आगू छलाह, आ मारनिहार के हुकुम उएह देलनि हँसिरीके । बेचारा दुखहरण विकरैत रहल, छटपटाइत रहल जे किए मारि छै हमरा ? हमर कोन अपराध अछि ? की गलती केलीहँ ? मुदा जबाबमे केओ कहैत रहल ई बाधन बाँधि ने पावो । खण्ड-खण्ड क' वही आ गाड़ि वही एही ठाम । आ एएह भेलै । बेचारा जंभु सेहो मारल गेल ।

—की जंभु ? से कोना ? एक गोटे अनहद पीकीत पुछलक ।

—गेल रहए ओकरा सभकेँ धुसयए । पला नपल तँ बीड़ल-दीडल गेलै । कह' लगलै किए झगड़ा करै छ' ? दुखहरणकेँ किएक मारल आएल छह ? लहीपर हँसिरी वला सब कहलकै—'एकरो मारि दे । जातिभाइ के सवति करए आपन अछि । हँसिरीमेसँ एक गोटे बाजल—हम कहै छनिमो मे जे ई सार सेहो एतेक दिनसँ हमरा सभक पक्ष लेवाल हंग रचै छल । भीतरसँ अछि पक्का जातिवादी । कटुर अछि । बाधनक जामूस छल । हम नै कहै छनिमो ।'

जंभु जोरसँ मुदा बिना उत्तेजित भेने बुसेलक—'दे भाइ ! बात त' दुनक तो सब । विश्वास करह, तो सब, तौ सब जकरा मारि रहल छिही, तकरा किए गारि रहल छिही ? ई गरीब की बिमाइलकीए तोरा सभक । ई बहुत सज्जन आदमी अछि । ई कोनो लटपट नै रहैए बेचारा । अपन लेल कोहि रहल अछि ।'

—ई हमरा जातिके गारि पड़लक ।' एक युवक लाठी उठबैत जोरसँ बाजल ।

—ई से नै क' सकैए । एकरा बाद धरि केओ गारि पड़ैत ने सुनलक किछो । तोरा संवेह भेलीए जे ओ गारि नै पड़ैत हेतो । 'जंभु आत्मविश्वासक संग नेहारा करैत बुसाव' जाहलक ।

—ई पड़लकै । आ हमरा जातिके गारि पड़लकै । हमसब एकरा नै छोड़वै ।' ओ महि मानलक ।

से एक दिस दू बेहथियार लोक-दुखहरण आ जंभु दोसर दिस लाठी-फरसा गिंडात नेनेए लोक । मारि खाँग गेलै । बरहाम निरपराध दुखहरणक लहाम खाँसि पड़लक खेतमे ।

ए घटनासँ पूरा हल्ला मचि गेलै । आ उत्तेजनमे ओ सत्तेक' जातिवादिताक उत्तेजनाक रूप ल' लेलक कि बाध अस्तित्वक हेतु ई फैसले क' लेब उचित हएल जे गाम हुनकर अछि कि हमरा सभक । रहू कि भूखि भूख । तब चितक बकसकस ई नीक अछि जे तब क' लेल जाव । आ दू जातिक खेतमे पंच अहुर जकाँ संगठनात्मक निर्बंधक



पड़ल कथन जाय लागल । आपसमे तनातनी एक-एक सय वादिक पाति जकां बहैन जा रहल छल ।

ई सब किछु जांत अहिमे जनमि रहल छल । आ ओही दिनक आसकामे, आओरो गंभीर शंभु पुष्क लोकनिके, जाहिमे दुनु पक्षक लोक शामिल, छलाह । पहिला राति एक बसक केने छल जाहिमे तय कर' चाहै छल जे अखलमे जातिपातिक रूपमे जे हुन आंगसी भेदभाव आ अकारण बदलाक भावनासँ तमसा रहल छी ते उचित नै अछि, भेदलोकिनि आ एकरा झुलक चाही हमरा सबके । नामक के नै जर्नल छे ओह आबमी के ? किवा गिराईल केलक ?

दुखहरण जेहन पुरुष छल गारि नै द' सकैत छल । ओ बहुत तरहे बुझएवाक कोशिस केलक । दोसर ओ एहन बेबी केले तँ ऐ बातके देहा देही मानक चाहियै— गारि पड़लक तँ हुनका सबहुक सोसा नापी मांगय कहल जाइत । जातीय दंगाक रूपमे एकर समझान धरामसभक हेतु बड़ महम पड़ल आओर अथलाह असर हुएत । गारुपर आफत अछि जायत । अहाँ सय बृद्ध पतिस्थितिक मंशीरला, विकटता आ भयंकरता । अखस केओ प्रपंची असुखार्थी ई अकबाह उड़ौलअ अछि । एकरा पाछु कोनो बड़का गजबड़ी छै भाइमव । बेति जाइ जो ।

मुदा जेना कि आसका छलै, ओकरा मुँहपर तँ नै परीक्षमे मुखियालोकनि अपन जमसाधारणसँ ई मनसा लेलनि जे शंभु आखिर अपन जानिक पक्ष लेलक । ओ हमरा सभक हमदई नै अछि । आ तखन निर्णय करबामे सफल भ' गेलाह । निश्चय भेलै ओकरा मारल जाय । चाहि जे होइ ।

ते रातिजला गपक कतेक-ममेक सूचना शिवनन्दन कका के छलनि । ओ मोने मोने शंभुक खूब प्रसंसी कयने रहथि जे ई बड़ उचित सौक । पर ई कोशिस केनक अछि ? मुदा जयन ई घटना घटि गेलै तँ हुनका बड़ छुक्का लगलनि । जेना विश्वासो मे होनि । ओ ओहि व्यक्तिकेँ पृष्ठलपिन—मुखियाजी अपने रहथि हँसैली ल' क' ? ओ कहलक हु गोटे कहै छथि, अपनहुँ छलाह । एक डू गोटे कहै छे— अपने नै छलाह ।

बृद्ध शिवनन्दन कका झुंझा उठलाह 'ई तँ सोल मटोल गप भेल । अहाँ डेरल किए छी । साफ-साफ कह ।' ऐ पर ओ व्यक्ति सेहो झुंझा उठल—बैराएव किए ? हम ऐ जमेनामे नै पड़' चाहे छी ।

शिवनन्दन कका सोचय लागलाह, आखिर एहि घटनाक जड़ि की छै ? तुरत ओ किछु बुझि नहि सकलाह । ई केहन जातिक-झगड़ा कोन उद्देश्य ? ताहपर दुखहरण । ओ बेचारा तँ गौ मुसल जाइत अछि, नाममे । ओकरा सय एहन अन्वाय ? माथ घुमि गेलैत विभाग 'सोचि-सोचिक' फिरीसान भ' गेलैम । तखन एकाएक हुसका मोन

पड़लनि । जै, लगभग मास दित पहिने मुखिया दुखहरणकेँ जो खेत बेचि देब' कहलै रहैक । मुखिया चाहै छल जे ओ दुखहरणक खेत 'कीनिक' अपना पेटोदमे मिला खेत तँ अंतर प्योउ रैय भ' जेतैत । ओहीरद आदिक उदवस्थाक करत तथा खूब लोक फसिल लेल करत । मुदा दुखहरण कहने रहैक इएह ओकर आहार छै, धियापुताक जीवन छै । ओ जमीन नै बेचल । मुखिया पहिने तँ नरमोसँ केर धमकी देन कहने रहै जमीन बेचि देब', ओकरा पिछि देब' । दुखहरण रैयी नै मानयकै । हम अपने परिवारक आहार बेचि देब' तँ रहब कोना ?' ऐ पर मुखियाजी तमसा गेलाह । ओ धकर भाव स्वभावतः दुखहरणक गप्प बनि गेलाह । आत कोनो बात नहि मुसलनि दुखहरणसँ बदला लेबाक त' इएह जातिकेँ गारि देवाक बात ओकर अपराध प्रचारित क' क' अगम सनायक जनमत प्राप्त केलनि आ एक निर्वोपक संघ एकेक रैय अन्वाय क' देलनि ।

ई समस्त बात शिवनन्दनक माथमे एकाएक घुमि गेलनि । आ ओ दुखहरण ओ शंभु के बारेमे सोचिक' व्याकुल भ' गेलह ।

दुखहरणक गहास खेतमे पड़ल छल आ हँसैलीक संग सभ ओहि ठामसँ भागि गेल छल । शिवनन्दन चिन्तित छलाह । अब एगो एकरोसँ भवानक सिलमिला आरम्भ होएत पुनिसक । समस्त गावक तजारी । अहिमे सभ वृत्तनाह । य दुखने ई छल हुनका लोकनिके । ई पुनिसिया सधे जाइतल आ घामुक बा यदय नै वृक्षत । ई सबके वृत्तन एकरा सभकेँ सभ किछु गुअदगर लगे छै । एहने गिउ होइए ई सय ।

तखने हल्ला भेलै जे शंभु मरल नहि । ओकर प्राण बुधने छै । ओ बचि सकैत अछि । मुखियाजी आ अन्य किछु लोक पतनुकात ल' जेने छथि । जीता पुनिसकेँ ते घटनाक कोनो खबरि एखन घरि नै छैक ।

शिवनन्दन कका बुझाचीयोमे ललकि उठलाह—रे मुखियाहा सब ! जे बोलि सक्थै छी तकरा तँ बँचयबाक उपाय कर । अस्पताल ल' जाही । अपन शंभुक उमेरक संग ते नामक उमेर जाइत छी । चुलै जो ।

तखन किछु गोटे ताफल आ जोशमे खेत विम पड़ललाह खाट-भाट क' क' । मुदा एहि घटनाक पश्चात शिवनन्दन कका सेहो अपन जानिमे जातिओही घोषित क' गेल गेलाह । □



## एकटा रह्य सातु बेचनो उर्फ रस्ताक खिस्सा

जेना कि होइत छैक । सभ छोट-पैघ शहरमे । मास-डेड मास पर । कएक बेर छओ मासपर । यदि कोनो घाना-प्रभारीक अवधी होइत छैक । तब प्रभारी सत्ता सम्भरैत अछि । जेना कि होइतहि रहैक छैक । तँ छोट कि पैघ शहरक भीवटियाक पूरा कम उनट-मनट भऽ जाइत छैक ।

सड़क कतवहि सँ टांगल ताड़क डमकीला आ फाटल-चीटल प्लास्टिक बला छाहिरि कमल चरक भ्रम पर, तोड़ि-फोड़ि कऽ फेकि-फाकि बेल जाइत छैक । आ चौबटिया पर एक कतवहि मे बैसल भ्रमर बुढ़ा जुता सीबैत-सीबैत एक आछे एंड खा कऽ अपन छोट-छोट रेजकी सन-सन रंग-बिरंगक चमड़ाक टुकड़ीबला मैनहा जोरीके हुबहु कऽ दूति-ठासि कऽ बन्ध करैये आ लत्ते-फत्ते अपन सबटा जुता मरमतिक सराजाम समेटि कऽ पड़ाए कोनहुँ भान ठाम । '...वा बत्तीक जाकरीके' पटिया जकाँ पज्जा गेटल पोशापर विद्या कऽ कोनो रेडीमेड कपड़ा बला छोट छिन कपड़ाक दोकानके एकहि मोटरीमे बाहि कल-जोड़ि कऽ ठाढ़ होइत बात विदीड़ि कऽ मोहरावऽ लयि सोझाँ हाकिमके जे खाँका हाफपेट, चौड़ा वेस्ट आ मोट-मोट जुता-पैतावा पहिरने भारि ठोड़ समाकुल दुसरे बंदा भंडैत खूब जोरसँ सिबबैत रहैत छैक—'रो हरमजदा सब, ई सड़क छिये कि सुजायब बजार ? एना जे तोरा सब सड़कके हाट बना कऽ घेने छै' से सार सब थल, भरि राति सड़के हाजतमे तखन सोझ हबै' । चल...वहाँन...

—'हाकिम'.....।

—'चोड़ मावर'.....। किसका ओकर से बोकात किया है ? बताव.....।'

ई रश्मिदार आवाज सभटा अनुनय-विनयके प्रचण्ड विहाड़ि जकाँ उड़ा-बुढ़ा कऽ तहल-तहल कऽ आइत छैक । अवधि ओहि चौबटिक चमर मोची, गनी, रेडीमेड दोकानदार, रामप्रसाद, भूला-भरड़ी बेचनाहरसँ तऽ रिक्शाबला सभक लेल आ सातुक दोकान धोति कऽ बैसनिहारि कमली मायके ई अनुभव होइत छैक जे एतऽ आब गुजर नहि । आब कतऽ गुजर ? सब अपना-अपनी कऽ चीज वस्तु समेटेक उपक्रममे चिंतित, उदास आ हिराफल भोजिपायल क्रमे एक-दोमराके देखैत किछु-किछु करैत-थाहैत रहैत अछि । सोझमे दू-तीन मोटे खाँकी हाफ-पेटबला मोटेल तमाकुल भुकरैत हाकिम सभक गारि-कण्ठवि आ ऊँच-स्वरसँ, अनेरे भ्रम होइत रहैत छैक जेना कोनो जबर टुक पर बालु लवायल होइ आ म चीबे बाट पर भंगि कऽ चीकार कऽ रहल हो । हाकिम सब प्रत्येक चेतनीकेँ सार...वहाँन...बासनी दैत उगलैत रहैत अछि ।

— 'तुस्त भागो । टिरेफिक जाम करता है । बाग के जमदारी मे धस गया है । जहाँ एक्के ठो एसीडेंट हुआ कि सभ चले जाओगे भीतर सार लोगन ।'

सोमे चौबटिया साक । अनमन ओहिना दृश्य जेना बीच-बीचमे दू-चारि दिनक बेल हाडिग पार्कफ सोझमे पटना जंक्शनक रेल प्लेटफार्मक उत्तरवरिया खासी जमीनक भऽ जाइत छैक जाहि ठामसँ खानाबदोशक टोल अपन तम्बुक, सिगरी उखाड़ि कऽ कतहु बड़ि गेल हो । देखलापर उखड़ल खुट्टी सभक भूर, फूटल बर्तनक टुकड़ी, बिधरा सब, बोड़ीक घोंघ टुकड़ी, केशक थोका, कोयला आ छातर, घोडाक लीव, दू चारि बाना जाजर-गुहम पर धुधकल कीआ...ई दृश्य, कोनो पैघ छोट सड़क चौबटिया' वा सड़क कातक भऽ सकैत अछि । मुदा हमार खिस्सा भागलपुरक अछि । ओना खिस्सा शुरु भऽ गेल अछि पहिने पौनिक पहिने शब्दसँ । मुदा आब नियऽ असल खिस्सा ।

मभसै हड़बिरडो । पहाड़ि लागि गेलैक । किछु लत्ते-फत्ते पड़ावक, किछु सामान समेटैत कात घरा गेल । ओकर दुटलाही बेंच आ छिट्टा पविमा, गिलास, चाढ़ चीनीक डिब्बा आ बुधक डेगनी सब टुकपर लदा गेलैक । फुटपाथ भेकिम । सभटा टुकपर लदा कऽ धानामे जमा होलैक—कमली मायक सातुक पविमा सेहो आहिपर हरिवर लाल मेरबाई धौल छलैक । स्वाभाविक छैक जे ओ चौबटिया करीब-करीब मुदघट्टी बनि गेलैक । पौने मिनटक भीतर बसल गृहस्थी मुदघट्टी । कमली मायके' बाँचर घेने ओकर चारि-पाँच वर्षक बेटी डैरायल ठाड़ि ! आदके सकदम ।

—'हाकिम साहेब, येहे हमरऽ जिनगी छौं । ई सत्तू । घुराय देव । हमरऽ थाल बूतक मरो जवतै'..... । मोड़ पई छियो ।' कमली माय अनुनय कमलकैक ।

—'पोडन हरामजावी । इहे डटा कऽर देव । गैरकानूनी काम करती है और मुँहों बलाती है । चलऽ घाना । आजे बुझाई'.....।'

कमली माय तकर बाद बौक बनि कऽ ठाड़ि ।

तहिना चमर मोची ठाड़ ।

तहिना रामप्रसाद भूलाबला ठाड़ ।

तहिना रेडीमेड कपड़ाबला गनी ठाड़ ।

तहिना चहबला ठाड़ ।

तहिना बुद्धिया सपरिवार, जे सफाई-तफाई कऽ कऽ तुरते अपन सड़क कात-बहिक खोपड़ीक सोझाँ बैसि कऽ हुक्का छैनहि छल कि ई काँठ भऽ गेलैक । सभटा उजाड़ि-पुजाड़ि कऽ बराबर कऽ देखकैक । तँ ओहो सपरिवार बतोर कल जोड़ि कऽ ठाड़ । जेना राज दरबारमे पेची होइत रहल होलैक कहियो ।



खाकी हाफ पैट बना हुंटरधारी घुट्टा पैर बना हाकिम सभक सोझा ई कचहरी लागल छल । लोक, टमटम, रिक्का-गाड़ीक आवाजही ओहिना छलैक । सब जखी जामान हुक पर आवन गेल । किछु पड़ाव सभटा छोड़ि-छाड़ि कऽ से हाकिमकेँ बड़ बुधियार लोक बुलवलनि । जिनो जमा जेवैक थोड़-बहुत सम्पत्ति छोड़ि कऽ, भागि गेलाह हाकिम सभक वशमे बुधियारी छलैक । जसो भैलैक आ हाकिमक जवाबदेही किछु नहि । ओ तँ सभटा निजी सम्पत्ति भेलनि हाकिमक । बाटि-बूटि खपताह । एहिना राज चलैत छैक ।

खैर ! ई कचहरी कतवा आग तकल विशेष जानकारी नहि, मुदा घंटा भरिक बाद आदामपूरमे घंटाघरमे मिलनाहर सड़क हुंटरधारी मुर्खपट्टी बनि गेल आ घंटाघरक छहरदेवालीक बेरामे बयो कचहू नहि । मानुक बुधियावाली ने कबली माय, ने आन बयो दोकानदार । निरबद्ध सब क्रम । तबना निरबद्ध जे पूर्व-पछिमे गेल मुख्य सड़कक कातमे किछु दूरस्थो अस्पतालमे जे रोगी किकहारि काटि रहल छलैक तेहो पर्यस्त मुनल जा सकैत छल ।

एहि घटनासँ बहुत रास लोकक दैनिक जीविका आ घर छिना गेलैक, मुदा ई सब तेहन धातूनी डमर भैलैक जे जनना जनार्दन मे से ककरो आपत्ति करवाक साहस नहि छलैक । ओना विरोध करवाक साहस तँ गैर कानूनीधो रहलैक तैसी ने करैत बयो प्रायः । आ एखन तँ सहजहि दुँकिक नियमक खिलाफे रहैक विषय । खैर, कतोक भद्र लोक तमाकुल चुना कऽ हाकिम सभकेँ खुशीक आ सलाह जारि कऽ बीड़ी छरीलकनि आ नैतिक समर्थन भे कइलनि जे — एहि दोकानदार सभक नजरो जनताकेँ बड़ कष्ट छैक । अगैरे वाट छेकने रहैत छैक । “कलौ दिन फिलम वेषय जाइत एकटा सभ्रान्त दम्पतिक रिक्का घक्का लागि गेलैक” तँ “कलौ दिन एकटा इसकुलिया बच्चा पिचा गेलैक” आदि समर्थनकारी गवाही बयानसँ हाकिम साहेबकेँ मनोबल बढ़ाओल जाइत रहल । हाकिम मनोबल मारि-कसतिक मावाकेँ ओर जोर करैत रहलाह आ सभटा अपराधीकेँ तेना दुतकारैत रहलाह जेना ओ सब जीविका लेल दोकान नहि कयने रह्य, ककरो हस्या कपने होइक ।

फेर कोना की भैलैक—घंटाघर चौबटियापर मे बहुत मोटेकेँ नै बूझल, मुदा दोसर दिन डीक अपना समय पर, कब तँ नहि, मुदा छिनायल दोकानदार मे सँ दू-तीन टा अपना-अपनी कऽ ओतऽ उपस्थित छल । पुरना चमरु मोची । एक कात बैसल मन्दुआयल, चित्तामन । भूनायला, मितायल बीड़ीकेँ सोंटने जाइत जेना ओकरा एहि बतक पते नहि होइक । ओ तेसर कमली माय ।

घंटाघरक चकुराबला चौकता सीढ़ीपर उत्तर पट्टीमे बैसलि रह्य । चुप । वेटीकेँ तीचेमे एकटा कइलाही कपड़ा बिछा कऽ सुता धेने रहैक । जेना किछु ने सोनैल,

बहुत किछु सोचैत ओ दृग्ग बैसलि रह्य । एना भऽ चुनवाव बैसलि चिन्तित भूनामे ओकर गोर-नार-मुँह जँच दाँत रहलो उत्तर स्निग्ध चुना रहल छलैक । दंत कि गांठे बस, सएह बजैत रहल हेनैक ।

घंटाघरक चौबटियापर पदल बाबू रोड दिसन एतहि आकाशवाणीक गाड़ी ठाढ़ रहैत छैक । बाबू मव आवि-आवि कऽ चढ़ै छैक आ जाइत छैक । कचहरी विसरै एकटा बड़का बन टाड़ रहैत छैक सबीर कालेजक । ओहो लोक सबसँ भैया छैक आ खुश कऽ तिलकामासीबला रस्ता धऽ लैत छैक । तकर बाबू एएह छोटा-छोटा दोकान आ ताहिपर गरीब गुरुवा वर्गक सहिष्णुकी भीड़ ।

आइ किछु नहि । ने चाहक दोकानपर, ने कपड़ा दोकान पर । ओहि बाटे सवारी नऽ जाइत सब रिक्काबला एक नजर ओम्हर देखैत बड़ि जाइत । भरिस्क चुनहुरियाक भोजनक कोनो आन जगह सोचैत जे कऽ जायब चाय लेल ।

कमली मायकेँ एहि स्थितिमे बैसलि-बैसनि बड़ी काब भऽ गेलैक । एसीक मास । तुरन्त छठपटी भऽ जाइत छैक । सुनति वेटी करोट बदललकैक फेर ओकि टाकि कऽ ओकरा सुनौलक । आ किछु बल सोचने होयत कि ओकरा लगमे एक रोडे आबि कऽ टाड़ भैलैक—मायक गमछा चोलि कऽ मुँह कपार पोछैत । लग आयल आ पुछलकी—“की होन्होँ कमली माय ? आव कि लोककेँ भूख नै लागै ?” कमली माय चोकलि आ ओकरा देखलकैक । भरि आबि तोर । हवोइकार । मुदा चुप ।

—सोझा मे टाड़ पिछपाम फकैठ भुवा । आकृति कचहर, केश सौटल । एखनहुँ पसेनासँ भीजल कपार । एक रस्ती थकमतायल बिहूनी आ कम्हापर राखल गमछा । भयस पचोभक छल मे ।

—“की बात होले ?” ओ खूब सिनेह आ चिन्तासँ पुछलकै । रस्ती मुड़ी नुका कऽ जेना अपन कतनाह रोकवाक जेण्डा कयलक । जबाब किछु नहि देलकैक ।

—“बात की होले ? बतावऽ नी ?” ओ किछु गंभीर भऽ कऽ लिमियाइत जकाँ पुछलकैक । रस्ती चुप रहलैक ।

—“बड़ा मोझिकल बात । पुछै छियो जे होलऽ छी की ?”

—“दोरियो भर सनुआ छोली कऽ जय गेलऽ । रच्छकवा ने । एक्केटी, भहि की केँ तँ खिलने छलिए ।” ओकर स्वर कणममुँह छलैक ।

—बुझबिब । फूट जेकिप । बड़ा हरमजवा होइ छै ।” ओ युवक कोधकेँ मोहनुना जति कऽ आयल ।

—“सादऽ कोय नया बहली होइ कऽ अपलऽ होत जाइ की ? देखि तौँ कमली माय एकदमे बेकूक छऽ । आवे एतना दिन होम गेहूँ दोकानीपर बँठलें, अभी तक भी तौँ कयन्हें एतना डरी कऽ रहै छऽ हे ? मुँहमे बोली नै छी ?” ओ युवक कभी मोहित जकाँ छलैक ।



—'बोली ? तनी टा तें बोललियै जे हमर बच्चा भुखे मरी जयतः' ..  
एहना खराब गारी देलकऽ खच्चड़ ने जे.....'

—'गारी ?' युवक चौकैत जकां पुछलकै ।

—'नै, अच्छत-पूत ! अपना तें माय-बहिन छै ने हाकिमकै । आरु तो' ..  
.....' कमली माय जेना क्रोध आ विवशतासे अनुरोध करैत बाजलि आ चुप भऽ गलि ।

—'हम्म की ?' युवक पुछलकै ।

—'आरु दिन तें बेसोखें बेसी दुः ख जे छली तोरा खाव ले आई मे । कास्टू की होलही ? अयबे म करलै । अयलऽ रहतिथऽ तें हम एतना नै नी.....' ओ कानऽ लागलि एहि केर ।

—'बड़ बड़ी कऽ लगली काने । औरत जात ! बड़ा मोश्किल । अरे कानवारां जीवन चलै छै । लगली काने । औरत जात । रे जतना कानली रहबे ओतने आरु कनेतौ लोचऽ ।'

—'हम्म औरत जात.....'

—'बूची मरऽ । औरत जात । की होलै । हाथ मोर नै छी ? औख-कान नै छी । औरत जात । तोरा सिनी जनम भर एहने भोगबे कही ई छियी । ओ बीचहिमें कहलकै तमसा कऽ ।

—'की करतियै हम्मऽ ? तोरा नै आना छली' कास्टू तें कही बीजिहैऽ ।

—'कहू दीनहे' । केना भला । काल आठे बजे एक ठो सवारी निजी गेलै चम्पा जगरऽ के । फेर क पूरलै चारु तरफ, बिपहरी माय अस्थान, जैन मंडिल । कहीं-कहीं तें..... होय गेलै देरी भूख खूब लागि गेलै । सोचलियै हिल्ले खाव लीं । ओ एकदम चुप रहि कऽ जेना अकसोख करऽ लागल ।

—'आरु-हम्मऽ की जानऽ गेलियै जे हे सब काह होतै । चलऽ अयतियां ! कफरी बापके मोकर की ?'

—'हमरे करमऽ के लिखलऽ । आरु की ?'

ओकर एहि बातपर युवक चुप भऽ गेलैक । ताबत हवाक एकटा तेज झोंक लठलै आ रिक्शा युवकऽ लगलै । युवक दोड़ि कऽ गेल रिक्शाक अक्रमे ससारिकऽ रस्सी कसलक, एक कात कऽ ठाऽ कऽ कऽ आ फेर घुरिकऽ चलि आयल ।

—'तबऽ ?'

—'हम्मऽ की कह्यो ?'

—'बाबऽ सजुआ नै सगैबही की ?'

—'कहीं से ?' सरधआ हाकिम नै सत्यानास करी देनकऽ । ओकरो दिनकर दिमानासे सत्यानास करबे करलै । एक ठो अवसा के जेतना सतावै छै ?'

—'दिनकर दिमानास के फूरसत नै छै कमली माय जे हुनि तोरा वास्ते हाकिम के कुछ करतै । बेकफी नै जयतो' तें एहने तंग करनो' ।

—'बड़ा मोश्किल । तें हम्मऽ औरत जात की करऽ-गारियै ?'

—'कानऽ । की करऽ गारियै ?' ओ क्रोधित रहैक । फेर माय होइत कमली के देखैत पुछलकै—'एकरा की होलऽ छै ?'

—'होतै की रान तें कुछ तयने नै छै । जानिये-बूमी कऽ सुताय देने छियै । जामली रहतै तें कुछ खाव ले मांगबे करतै ।'

—'तोराऽ बुझा ? बाप ?'

—'जेना मालुमे नै छी' । देखे जरी जाई छऽ । कहिया तें चलऽ गेलै हमरा छोड़ी कऽ अपना वेटा सब कन । हमरऽ के छी यहाँ है दुनियामे ?' कनेक सोइछि कऽ बाजलि आ उदास भऽ कऽ चुप भऽ गलि । ताबतहि खूब जोरसे एक टाटुक हीनै जेनकैक से कसली छिटि नेनैक ।

युवक के बुझल छैक सब किछु । ओ थोड़हि छठल आ विद्रा भऽ गेल । गले बुझलै छलैक तें पुछलकैक की ? किचबिचबै गेल ?

मिनट पाँच के बाद ओ खसीफावाग वाली सड़क कातक गहरीय मुक्तक सोझाँक छोटका होटल मे सँ थोड़े मुरहो-कचड़ी कीनने, दोनामे लेने पहुँचल आ छोड़ी के देख कहलकैक — 'ये ।' छोड़ी ओ घायबे रहैक । तपसि कऽ जैत बिहुँसलि आ खाव लागलि ।

—'तो' केन्है तें खाव छऽ ?' ओ कमली माय के पुछलकैक ।

—'हम्मऽ की खयबऽ ? हमरऽ भूख मरी गेलऽ.....'

—'धुत ! भूख मरी गेलऽ । खानी । जेना बेटे मरी गेलऽ होय ।' युवक बजलै । आ तखन जेना ओ बलजोरी फाँकऽ लागल ।

—'छिया, एहना खराब कहने बोलै छऽ ?' ओ तमसाइत बजलैक ।

—'तो' ? खाइत पुछलकैक ।

—'खयने छियी । आइ तें विचित्र होलऽ । भोरे-भोरे लखना तें तेना जिद्द छनी देलकऽ जे चार बड़ा विस्तुद आरु चार गिलास परमेसर कने चा पीयै पड़लऽ । बड़ा बेज्जान छै लखना । मानवे नै करलीं ।' कमली माय खाइत रहलि ।

—'आइ की करबै हम्मऽ'—ओ पुछलकै ।

—'मे की ? जे करै छलहे, मे करबे ।'

—'बैठे देतऽ जैन ठाँ सजु लै के ?'



—'ओकरा बाप !' युवक कहलकैक—'मस्ती कर रहे' एक ठोरा सुधाई बितिहऽ तखनीये ओकरा सिनी के । खैर आबऽ की ? फेर सँ नुरु करै लै लाग्य ।'

—'आर पुनी ?'

तै पर युवक चुप भ' गेलैक । छोड़ी खसनामे मस्त छल । खायस भऽ गेलैक तँ अम्यस्त भाव सँ उठि कऽ एक कात छुरछुराहत कल पर गेल आ आँखुरे-आँखुर पानि पीलक । फेर बौड़ने घुरि आबल । युवक समझलै हाथ मूह पोछि देलकै । ओ बितिले रहल एम्हर ओम्हर सकल जेना समाधान लगे पातमे खसल कुँजी रहैक जे तकला पर भेटि जयतैक । अनचोखहि वठल आ कहलकैक कमली माय चलऽ । अभी हमरा साथ चलऽ ।

—'माय ने ! कहाँ ? तोरा साथे हम्मे कहाँ जयबी ?' ओ डरायलि पुछलकैक ।

—'जेना डेरयकड़े जेना बाय छिकी हम्मऽ । हरजा की छै एकरा मे ?' ओ पुछलकैक ।

—'बाय केहूँ रहवे तो ? आर हरजा छै नै ? हम्मऽ तोरऽ के ? तोरा साथे जयवहो, लोगे की कहतै ?' ओ डरायलि कम-सजायलि बेसी छलैक ।

—'तोरो ! बड़ी डर । की कहतै ? आर केहूँ कहतै ? हमरऽ रेवसा पर आखिर जनानी सवारी बैडै छै कि नै ? भाड़ा दे दिहऽ तो' ।

—'जनानी सवारी आर हमरा मे कोय फरक नै छै की ?' ओ बजलै । युवक गंभीर भऽ गेलै । फरक तँ छै ।' ओकरा बाव एक सण बुन चुप रहल ।

—'कहाँ लै जयतिहो हमरा ?' ओ जेना मोलायस होइत पुछलकै ।

—'आवे तऽ ओकरऽ बात की ? कहीं कामे वास्त ली, सैर करावय बला तँ हम्म के तोरऽ ? हम्म की कमली के बाप छिकी ?' ओ बुझी छलैक ।

—'तोरा छराप लागी गेलही । गंगा माय किरिया हम्मे से घोड़े कहने छलियै ? तो तँ वलही गोस्ताय गेलहे । हमरऽ तकदीरे छै फुटलऽ ।'

—'फेर वहे तकदीर । बड़गहीं भाय ई तकदीर ओ भी मजब बात छै । करतौ ई कोय भला काम नै, लेकिन आवमी अपनऽ दोकान दोरी काम-धंधा छोड़ी कऽ रटते रहतऽ । तकदीर...'

—'आर की ? तकदीर नै तँ की ? हमरऽ की कसूर ? कमली बाप अस्सी कोस गाम सँ लानी कऽ यहाँ पटकै देलकऽ । पेटमे है अभगलिया के घरी देलकऽ आर कलक अपाय कऽ छोड़ी देलकऽ ! एतना बड़ऽ । एतना बड़ऽ शहर । कोय कहीं अपनऽ नै जान-पहुचान नै ! जनानी जाल ! हमरऽ की कसूर छै ? केहूँ अच्छा तँ हम्म गाममे माथिके कत चौका-बलत करि कऽ गुजारी करे छेली, बड़ा दुलार सँ, बड़ा मनाय कऽ झूठी लानी कऽ समुद्रमे छोड़ी देलकऽ । हमरऽ कसूर की ! कोय कहीं नै । अकेली । जोरत

जाल । इ बुककी जिम्मेवारी । अकेले रहलियौ नै कहिया नै धरारी घाट जाय के धौनो जइतियो संगामे । हमरऽ की कसूर ?' ओ कतनपुह भऽ गेलैक ।

—'तकदीर नै तँ आर की ?'

'युवक के संपूर्ण खिरसा गुरु तँ अंत धरि झुलल छैक । जखन-जखन ई मीनो तकलीक मे पड़ैत छैक तँ कोनो साथे खिस्सा दोहरवैत छैक । युवक धैर्य सँ मज्जत मुनैत छैक । ओकरा मतक तागति बड़बै तेल बखे बेर मुमय खिस्सा फेर-फेर मुनैत छैक । बर भेटनो सवारी छोड़ि कऽ । मुदा जहरतपर चेतवैत मेहो छैक । एखनो सैह भेलैक ।

—'ऊँ तब मानतिहो' । लेकिन कमली माय, ई बतावऽ जे अभी तक तँ जिन्दा छऽ, बेटी भी कए जरिस के होय गेलही, ई सब केना होय ? बतावऽ तऽ ?'

—'घन तों, तोरऽ उपकार हम्म...' ओ फाटऽ लगलैक ।

'छिः छिः । हमरऽ ई कहला नै छेलऽ । हम तँ ई कहलियौ जे आवमी अपना तागवसँ आर जहाँ, जे लोक सिनी के बीचमे जीवै छैक ओकरऽ तामदसँ जीवै छै, बड़ी छै आग । बूझऽ तँ वेहे तकदीर । लेकिन तो' जे दोकानी पर बैठलहे से के कहलकी ? तोरऽ बाप-माय ने दोकान करले छेलहीं कहियो ?'

—'कहियो नै ?'

—'तो बैठनी । जहरत होय तँ । खराब की छै । लोक के-मजूर रिक्सावाला सिनी के ओकरा कोय घर नै ओकरा खयके खिलाना आर अपनऽ बेटी के परवरिस करना एकरासँ बड़ऽ आर की बात छै ? ई बात तऽ तो' खुदे करी रहनी छऽ की कमली बाप करी जाय छी तोरऽ ?'

कमली माय चुप छलैक-किछु उपकारसँ, किछु बितारै ।

—'आबऽ तँ मेहो आसरा खतन ।' ओ हताकलि बाजलि ।

—'केहूँ ? केकरऽ की बाप के लवैलऽ छै ई पंढारके चौराहा ?'

—'सब उजाड़ी-पुवाड़ी बेलकै तँ आवऽ की !'

—'फेर बनी जयतै सब कुछ । आर कुछ अच्छे हालत होय ।' जेना किछु मोन पाड़ैत ओ कहलकै—'बाव छो' कमली माय, जगह बड़े छैक, लेकिन तो' एकदम शुरूमे घाममे बैडै छली सन् लैके—'हे यहाँ, यैन ठी ।' कमली मायक आँखि ओकर आँगुरक संकेत बिस गेलैक आ चमकि जेना उठलैक—'सते ई बात ओ कोना बिसरि गेलि छलि जे एकबेर आरी एहिना भेल रहैक आ तकरा बाव ओ छाहरिमे जगह पावि गेलि छलि ।

—'ओके छै । एक दू दिन आर एहने चलतै । फेर... ?'

—'तेकरऽ बाव ।'



— इतिजाम होना चाहिये। अबरी कुछ बख्ता अंसट आरु अच्छे इतजाम होना चाहिये।

—की कर रही? आरु तोरा जरूरत की अंसट करे के। तो तऽ दोकान करे ने छऽ रिक्त बला के की बिना?

—'की बिना? हमरऽ रसोई घर उखाड़ी लेतऽ कोय त हम्मे बैठल रह्ये? है सत् दोकान, चाह आरु बिल्कुट दोकान, यैह सिनीमे रिक्त बला, ठेका बला मजूरऽ के रसोई घर। तँ हमरा सिनी के रसोई मे रहने तँ खर्च कहाँ? रिक्सा खीचवै सागवपुरऽ मे आरु छ'प के जवब आरु हाट?' ओकरा स्वरमे कोय आ मंजिल जकाँ भरल बुरादत छलैक। एक अण ठहरिकऽ ओ फेर बजलैक—'अभी सबके, हमरा सिनी सब के ई बात मालमे नै छै कमली माय।'

—'की?'

—'है हमरा सबके रसोई घर उखाड़ी बेलऽ गेल छै। मालूम होतै तँ सब एक जुट होतै। एक जुट होतै तँ फेर दोकान खोलै ले छिये ले होतै। नै दिपऽ ठीक एहीन ठी—कहाँ भी दिपऽ। दैतै केना नै? आखिर हमरा मजदूर गरीब गुरखा के गुजारा करे के कुछ जगह चाहिये की नै? हमऽ की देश के सोच नै? हमरो सिनी के त जगह चाहिये।' ओ समतमायल छलैक।

—'तबऽ जगह छिनये केहँ करै छै हाकिम सब?'

—'बढ़ानी करै छै। ई बढ़ानी ओकरऽ ऐही बास्ते चली जाय छै जे हमरा सिनी मिलि जुलि कऽ नै रहै छियै। अपनामे समझा करी नै छियै।'

—'केना बहुत मिलि जुलि कऽ? सब तँ अपनाऽ हिसाब लगावैमे लागलऽ छै। हमरा बेखबर करै छै हाकिमे तँ सब खैनी जमाय के दै छै ओकरा सिनी के हाथ पर'।'

—'नै छै अकिल कमली माय। बुझतै आनने। बलि बुझना चाहिये है बात-बिचार जे आइ तोरा गारी बेलखी, काल्ह ओकरो जमानी बेटी के दिपऽ सकै छै।'

—'केना। बुझतै सब ने?'

—'बुझतै। बुझतै लग लागतै, सबके एकट्ठा होयले लागतै, एकजुट। एक जुट होनामे केना ई जे हमरा सिनी यदि तैयो, कहीं कमजोर पड़वै कि दोसरा मोहला आरु इलाका के हमरे एहनऽ लोक सब हमरा साथे आवी कऽ हमरा बास्ते लड़तै। लेकिन कोय भी लड़तै तँ एकऽ के बास्ते नै कमली माय। अपना एहनऽ सबलोक के पहिने आधमे एक जुट होय ले आगती लक्ष्मिमे है हाकिम भी तोरा पर जुलुम बंद करतौ।

नै तँ एहने चलतऽ रह्यौ। आइ तोरा पर, आत हमरा पर, परम् लखना पर। सब पर।'

—'लेकिन हाकिमे तँ लाठी भाँजी-भाँजि कऽ डराय घमकाय छै, गारी पड़ैछे ओकरा कोय डर नै छै?'

—'डर नै छै केहने कि ओकरा ई बात मालूम छै जे हमरा सिनीमे आधमी एकता नै छै, हमरा सनी मे पड़लऽ लिखऽ कानून के बात जानै वाला कोय नै छै। अपनी हमरा सिनी तकदीर के मानिकऽ सब कुछ लाठी-मुता मही नै छियै। ऊ सब जानै छै जे हमरा सब ओकरऽ कुछ नै बिगाड़ सकै छियै, केहने कि मेन जोखने नै रहै छियै। यैह बात।'

—'तो ई सब केना जानै छहो? के बतावै छौ?'

—'कोय-कोय पमिजरे सब। हम तँ रेबना भी हाँकी छी आरु बुझयलऽ पड़लऽ लिखलऽ पमिजर छऽ तँ ओकरा तँ कुछ-कुछ पुष्टि कऽ सीखै भी छियै।'

तावते एक टा मैल कुरता-घोली बला मजदूर युवक के मोर कयलकैक—देशबन्ध कि चोट्टि टाढ़ भऽ गलैक। प्रणाम कयलकैक आ बोझल ओकरे बिभ। फेर किछु गप्प भेलै। युवक घुरि कऽ कमली माय लग आयल आ कहलकैक—'दस बीस मिनट मे आवै छियौ। पासे सँ हिमका पहुँचाय करी कऽ। हिनीये हमरऽ गुलली, कमली माय।' ओ कल जोड़ि प्रणाम करैत ई जानकारी देलकैक। अनायासे कमलीयो मायक कल जोड़ा गेलैक। ओतऽ सँ ओ सज्जन प्रणाम कयलखिन। युवक झटकारि कऽ गेल। ओकरा ओतहि रहै भेल कहि कऽ हुनका आदरपूर्वक रिक्सा पर बैसीलक आ खूब उम्माह सँ पायडिल चलीलक। स्टेशन रोड पर बड़ि गेल।

करीब पंटा भरि मे ओ घुरि अयलै। आ खाली अपन गुनजी दऽ गप्प करैत रहलैक जे ओ कहैत छथिन निडर बन, एकजुट होइ जो। बात बुझहीक, अम्माय नै तहै। देखहीक, दुनिया बबलतौ। गुनजी के कपो ने—बाल मे बच्चा। मकड़ा बच्चा ओकरे। भरि लभरक मजूरक परिवार ओकरे। ओ जेना गुनक चर्चा करैत-करैत बिभोर भऽ गेल। कनेक कालक बाद बाजल 'गुनओ सँहै बोली छै। अपना मे मिलि के अपना मणि लै की जिला अधिकारी कन जो, तँ मुने छौ तँ कमिशनर कन जो। ओहो नै मुने छौ तँ एहीमठौ चौरहा पर परिवार के परिवार बैठी जो। हिले नै। लाठी तँ लाठी, बन्नुक आरु मिशिमन सँ भी अरे नै। कहै कि हमऽ केना रहियऽ? हमरऽ परिवार केना खलऽ वहाँ? तँ इतजाम करऽ, हम्मे काम करै वास्ते तैयार छियौ। हमरा सब तैयार छी। हमरऽ इतजाम घराबऽ।'



सोम में कोनहुँ-कोनहुँ तरह से सबके एकट्ठा कपल गेल आ केर बैसार भेल । छोटे मोटे सही, भीड़ भेलैक । खाली वदी बड़ा भारी सम सेहो दहलैक कऽ चल गेलाह । सब तय करैत गेल जाहि मे मुरही भुपनी बोकानदार सँ लऽ कऽ रिक्सा ब्राइवर धरि छल । आ सब एता बेर-बेर अपन दोकान बनामब आ उबारल कपलक समस्या के पहिल बेर एतेक मनीर भऽ कऽ सोचलक आ तय कपलक जे ई भोचनाइ बन्द होयबाक चाही । तुरन्त सब होयबाक चाही ।

सब पहिल बेर एक रंग सँ एतेक उत्तेजना आ निर्णय लेबाक आवाजमे मे एक ठाम जमा छल । भोरे ओ प्रबंधन वित्तिक । जिला अधिकारी, कमिश्नर ओरऽ जइतक ।

भरिसक सैह किछु बात भेलैक । बंदाधर चौराहाक एहि बेरक ई सफैया जमीन फूट चैकिंग, नव रूपेँ सोझाँ अयलैक । एतऽ धरि लम्बा चार जकाँ छाहिर कऽ ओ छोटा बोकानदार सब, अपन-अपन दोकान लगीलक । चास कलक व्यवस्था करैक गेल आर तकरा बाद कएटा जिला पदाधिकारी, थाना प्रभारी, पुलिस अधिकारी सबक बदनीयो भलैक, मुदा ओहन अन्धवर्ण फूट चैकिंग नहि भेलैक । आम कोनो संसद होइत छैक कि सब मधुमाछी जकाँ लुधक जाइत छैक ।

ओइ दिन कमली माय सातुक दोकानक कात मे सूतलि रहथ । रमी बड़ तीख रहैक । लोकक आवा जाही कम । खनिहार सब लगभग जा चुकल छलैक । एक आध टा कीड़ी सोटि रहल छल । आध धरत रिक्सा आ जायत, लाही कम मे बैसल क्यो तमाकूल चुनबैत, क्यो माय नाव मे झरकी सँ बचवा वास्ते रमछा के सम्हारि कऽ लपेटैत ।

कमली माय नै खयने रहथ । भूख बड़ी काल सँ लागल छलैक । ई कऽ लीस तँ खा लेब, छिपली ओ कऽ राखिने दिथैक तँ खा लेब, आवि सोचैत भुखने छल । ममयो तीनक अमलमे भरिसक । एक टा बाबू के छत्ता ओढ़ने जाइत देखि कऽ कमली माय पूछबो कपलकै । ठीक तीन बजे छैक ।

—'कहाँ रहले ई ।' एक रसी चिन्ता भऽ गेल ओकरा । एहि चिन्ता मे किछु कल आरो बीनि भेलैक । केरो ओहो समय घोलि गेलैक । पर एक के जाइत पुछल-केक—साढ़े चारि । आव ओकरा खुब चिन्ता भेलैक—'की होतै ? कहीं रिक्सा तँ नै भस्का लागी गेलै ? मोन तँ ठीक छलै । काहू त डीके रहे । कहीं राती त नै बेमार पड़ी गेलै ?'

सावते एक टा छोड़ा जकाँ रिक्सा वाला आविकऽ कहलकै—'मौसी, जानै छऽ ओकरा तँ रिक्सा साथे घाना मे बन्द करी देल छै ।'

—'आय ? ओ बराबसि । किन्हें ?'

'मामूली एकठो मोटर बत्ता के मोटरऽ के चुनइमे एकरऽ रिक्सा के रिम लागि गेल आर जरा-सा दान लागी गेल । एतने बात पर ।'

—'आबऽ । ओकरा जेल में बंद रहे ले होतै ? के साथ ले देतै ओकरा ?'—कमली माय जेना दुवक रिक्सावाला वास्ते नहि, अपन बेटी कमली वास्ते छटपटा गेलि हो ।

—'हमरा जरा देखाव देबहे तौ, कहाँ बन्द छै ?' कमली माय बिपत्ती कवलकै ।

—'चिन्ताऽ नी । चलिहऽ । पांच बजे मे । एकठो दुठो टाका भी दै ले होतै वहाँ ।'

—'मिलै ले देतै नो ?'

ओ छोटी तराजू बटखारा सँ तातु तीलि कऽ अलनुनियाँ रिक्की मे बैलकै । ओ सानिकऽ गोली बना-बना भीड़ऽ लागल ।

कमली माय केँ एक-एक छन असह्य छलैक । हवर-हवर पानि बेलकै । संभलनक आ बगलवला के थोड़े काल बोकान देखऽ कहि तंगे लयलैक ।

बड़ साहस कऽ जखन घाना गेल त बड़ जोमाड़ सगऽ कऽ ओकरा भेंट करऽ देलकै हाकिम सब । लग गेल तँ बकारे ने फूटलै । कामऽ सगलै । कमलियो फातऽ लगलै ।

—'कँहे काने छऽ ? हे सभ एहने सादक मजाक छै । सब ठीक होय जयतै । चिन्ता के बात बिलकुल नै ।' ओ विहूसि रहल छलैक ।

—'चिन्ता के बात नै ? हम्मऽ मरी रहलऽ छी आर...तोरा...'

—'विचित्र बात कमली माय । आय लोगे कुछ नै कहतौ !' जेना ओ खोजबैत पुछलकैक ।

—'हमरा सँ सैह कहय वास्ते घाना आबी नेली छऽ ! ओइ दिन भी त हमें बाहो लेल कहने छेलियौ ।' ओ कटाक्ष मे विहूसि रहल छलैक । कनेक चुप रहि कऽ पुछलकै—'आइ हम्मऽ तोरऽ के ?' ओकरा ब्यंग पर खूट खोलैत ओ भोड़ल टाका ओकरा दिस बढ़बैत कहलकै—'ई राखऽ । तोरऽ बाँकी छतौ ते हमरा पास । दै ले अयली छी ।' ओ मूड़ी निहुरा कऽ कानब रोकि रहल छल । आ लज्जित छल । मुड़ी निहुरेनहि बजलकै—'आबऽ की होतै ?'

—'कुतछू नै ।' ओ निकटिह हँसलैक । सफैया के हाथमे रीठ ओ बजलकै—'असल दोस्त के काम करने छऽ तौ कमली माय । असल । बस सैह चाभी सँ ई ताला खुसर्था आ हम्मऽ बाहर आबी जयकऽ ।'



—‘सच्ची तऽ।’ ओकरा जेना विश्वासे ने भेल होइक ।

—‘सच नै खै जुठ ?’

—‘हमरा बड़ी डर लागी छै आरु चिन्ता’...’

—‘कोय काम नै करै के, ने चिन्ता करै के ।’

—‘कमली माय आजऽ हमरा फंदा सँ निकलना आवी गेलऽ छै । आबऽ हम छूटे के रस्ता चीन्ही गेलऽ छिये । चलना आवी गेलऽ छै ।’ ओ बड़ उरसाहु मे हल ।

ओ टुकुर-टुकुर अपना दिश तर्कित कमली के गाल छुबि कऽ दुलार कयलकैक आ कमली माय के कहलकैक—‘कोयकऽ खाना तोरे रसोइ मे खयवहों, चिन्ता नै ।’

ओ आत्मविश्वास सँ त्रिहुँसि रहल छलैक आ कमली माय विश्वासक अतिरेक मे कानियो रहल छल आ ओकर सँ मोरो पोछि रहल छल ।

□

## श्याम अंकल एहेन कियेक छथिन्ह ?

ग्रीक गेट के बाजब आ बुआरि पर आबैत आहुटि के निवारैत मीनाक्षी के पूरा विश्वास भऽ गेलैक जे आभंतुक आओर किपौ नहि श्याम अंकल छथि । केवाड़ खोलसक, ओकर अनुमान सही निकल लय । आठ-बस बिनका बेस घनगर दाढ़ी बढ़ौने, मेल चिट कुर्ता-नजामा पहिरने, हाथ मे एकटा साधारण अटैची आ चिप्पी पर चिप्पी सामल पुरतका चणल के धारण केने श्याम अंकल उपस्थित छलाह । हुनकर पैरो छुवैत मीनाक्षी के घिन लगलैय तथामि ओ एहि किया हेतु अपना के तैयार केलक । परन्तु ताहि सँ पूर्वहि श्याम अंकल ‘खड़ा रहू बीआ’ कहैत घर में प्रवेशकऽ एक कात अटैची के ओघरऽवैत सोफा पर धंसि गेलखिन्ह आ अंगठी मोड़ करऽ लागलखिन्ह ।—‘मम्मी के नश देखय छियो ? पापा कतऽ गेलखुन्ह ?’—घर में नहि ककरो देखि अंकलक प्रथम पृष्ठक वाजिवे छलैन्ह ।

—‘ऊ सब थोड़े काल पहिने निकललैय यै । कतेक बाजल बलि ?’ श्याम अंकल खून ओर सँ हसऽ लागलखिन्ह तऽ एकाएक अखियास भेलय मीनाक्षी के—‘जा श्याम अंकल के हाथ मे बड़ी कहाँ छैन्ह ? ओ वयस ई पूछि अंकल के कष्ट पहुँचेल केन्ह ।’ ओ उठल, भीतर घर जा कऽ बेगल घड़ी मे समय देखि आएल आ श्याम अंकल सँ बाजल—‘यह बगटा भरि भेल बलि हुनका दूनु गोटे के गेला । 9 घंटे तक घुरि आवय जाय जेताह ।’—‘कोनो बात नैय । तौ निके छेने ? घर में सब किछु ठीक-ठाक अछि ?’ मीनाक्षी मूढ़ी बोला देलक, ‘ठीक अछि’ कहैत श्याम अंकल घरक सब सामान पर अपन दृष्टि बौझाय लगलाह । अन्ततः भीत पर टांगल कैलेन्डर मे खानरक फोटो देखि कऽ बाजि उठलाह—‘अच्छा बेटी । ई फोटो तोहुर पापा सँ बहुत मिलय छी ने ?’—मीनाक्षी के बड़ जोरक हँसी लगलय ठीक वैह बात पापा एक दिन मम्मी सँ कहैत रहथिन्ह—‘ऐ फोटोक सकल श्याम सँ बड़ मिलय छै ।’—आहि पर मम्मी कहलकय—‘हमरा तऽ अहाँ—दुनू के गप्पक किछु बाहे नै लगय यै । हमरा तऽ ऐ फोटो के आधा शकल श्याम दानू सँ आ आधा अहाँ सन लागल । ऐ गप्प पर ओहो खून जोर सँ हँसऽ लागल छल आ ओकर पापा संजीर भजकऽ बड़बड़ाए लगलै रहथिन्ह—‘पता नैय गवहा कतऽ अछि आइ काहिह ! एतऽ एनो तऽ दू-तीन महीना भऽ गेलय ।’

ई बात मन पड़िते ओ बाजलि—‘पापा अहाँ के बड़ पाद करय छलाह किछुयै



दिन पहिले तऽ अहाँ के खूब चर्चा भेल छल-ए । अंकल ऐ बेर अहाँ बहुत दिन पर एनी कतऽ रही एते दिन ?”

—व्याम अंकल एकटा बौद्ध श्रवण लेलबिन्ह । हुनकर मुलमंडल पर तँ हास्य ओ क्षीमता भाव बिनीत भऽ गेलन्ह । एकरा धरि ओ अंकल के पासियो तक लेल नहि पुछने रहैन्ह । ओ छरफड़ा गेल । उठल, चाहू बना अनलक । चाहुक चुस्कीक संग व्याम अंकलक मुँह पर हास्य धरि आएल रहैन्ह—“अरे, तोहुर तऽ कमलक हाथ छी ! एतेक बहियाँ चाहू तऽ तोहुर मम्मियो नहि बना सकथुन्ह । ओना बूझल छी ओआ ? तोहुर मम्मी के चाहू बनौनाथ हमहीं सीखी गेल छी । मुदा तू तऽ हमरो पुत ।”

मीनाक्षी अपन प्रशंसा सुनि बिजुसऽ लागल । ओकर इच्छा होय अंकल सँ किछु किछु पुछी । पररूप की पुछी, एहि पर ओकरा जाइत रहै । आँटीक बारे में पुछि सकय छल मुदा हुनका देखना तऽ पुन बीति गेल । बच्चा सभ इऽ पुछि सकय छल । ओ पुन तऽ एखन बड़ छोट-छोट हेतय । पीरके सभ तऽ मम्मी पुन भाय लेल स्वेटर आ मौआ बुनि के अंकल के लऽ जाय लेल देने रहैन्ह तऽ अंकल रक्षणा पसारि देने रहिबिन्ह—“हम एखन घर नहि आ रहल छी । बाहर कतऽ-कतऽ उधने फिक्क ?” आ मम्मी कहैत—“कोनो बिबटल-दू-बिबटल तऽ अछि नन्ना जे अहाँ के ठेला करऽ पड़त । एकरा तऽ जेबाक अछिये, चाहे जेना तऽ जाय ।”—ओ ना-नुकुर कहिये रहल छलाह कि पाप बीचे में ठपकि पड़बिबिन्ह—“की जमाना आबि गेलय यै । आब गवहो में बिद्रोहक भावना जाबि रहल छय । दिन-राति ओआ उठवय बसा, एखन कहय यै 'जेना कतऽ-कतऽ उठाएब कोअ ?’

—“अहाँ हिनका आओर पानि चढ़ऽबिबिन्ह ।”—मम्मी समझावत जानि उठल-तऽ तऽ हिनका जाइये पड़ैन्ह, चाहे घोड़ा बनि कऽ लऽ जायि आ कि गवहा बनि कऽ लऽ जायि ।”

“आह-हा ! हम घोड़े ठीक छी । हमरा आशीष जकी गवहा तऽ नहिये बनाउ । ई बेचारा गवहा तऽ अहाँक सेवा में लगल रहैत अछि ।”—एहि पर सभ गोटे हँसऽ लगलाह आ एही बीच अंकलक अड़ मेहो दुटि गेलन्ह ओ पुन ओआ भाय लेल स्वेटर लऽ जाय लेल तैयार भऽ गेलाह । मीनाक्षी के मन भेलय ओही वन भाय के बारे में पुछैन्ह मुदा पुछि नहि सकल । अंकले प्रश्न केलबिन्ह—“एखन तँ की कऽ रहल छल ओआ ?”

—“पड़ैत रही, परतू सँ एखाम जे अछि ।”

—“जा ! तखन तऽ तोहुर बहुत नोकसान भऽ गेली । पड़ गऽ खूब मेहनति तँ पड़ आ नीक रिजल्ट जान । जो...ओ उठ ।”—मीनाक्षी उठि गेल ।

मीनाक्षी अपन रूप में पड़य के खूब यत्न करय छल पररूप मन पड़ाए हेतु

स्विकारे नै होइक । रहि-रहि कऽ ओकर दिमाग में व्याम अंकल नाथऽ लागलिन । ओ देखि रहल छल जे हाइड कमक सोका पर अधलेटल अंकल अखि मुनि कऽ किछु सोचि रहल छल । अखि वन छैन्ह, मुदा गुनल नहि छल । खलाट पर पड़ मैहो ककरन भऽ रहल छैन्ह । ई अंकलो बड़ विविध जीव छल । आदकालि तऽ आरो विविध भऽ गेलाह अछि । हिनकासँ लऽ ने स्नेह कएल जा सकय यै आने घणी । मम्मी-पापा तऽ और हिनका लेल आने छविइ पररूप भता नन्ना आँटी हिनका कोना सम्भारैत देखिब । छोड़-छोड़ बच्चा आ अंकलक विविध स्वभाव, तँ पर तँ स्कूलक नौकरी ! ई तऽ छानि कही हुनको जे कोना सम्भारि रहल छल !! —मीनाक्षी सोचि रहल छल ।

आऽ मीनाक्षीक दिमाग में व्याम अंकलक स्वभाव हिनकोर मारि रहल छलय । ओ चाहय छल जे जानी, व्याम अंकलक स्वभाव एहेन किबै छैन्ह ? ओ सचिबन एके रंगक उदासी किबै ओकरे रहैत छल ? स्वाद नैत उदासी या जिन्गी के नुती पजारैत उदासी, खाँसायल उदासी या हारम उदासी, भिला-जुलाक बस एके तरहक हँसैत उदासी ! प्रसंगवश अपन मम्मी पापाक कुपा नै कोक बेर व्याम अंकलक उदासीक वर्णन कौने अछि । ओ हुनकर उदासी सँ प्रत्यक्ष जुड़ऽ चाहैत अछि । गंभीर उदासी, बड़ल दाड़ी, अन्त व्यस्त वस्त्र आ की-कहाँ वन बढबड़ाएव सभ के नीक सँ बूझऽ चाहैत अछि । पररूप कहियो सफलता नहि भेटलैक । जान भेला सन्तो सभ स्थिति में व्याम अंकल ओकर समीप रहल छबिन्ह । कोरा में लैत कनहा पर बँसवय सँ लऽ कऽ छिस्सा सुनय के गप्प हो या साहसिक चढ़व के, फूकना कीलय के बात रहौ या चटपटी बर्क, सभ समय जायः सभटा स्थिति में ओ हुनको छोड़ने अछि । हँ, एहुर वूनीन वर्ष सँ ओकरा बूझा रहल छैक जे व्याम अंकल ओकरा लेल अनभिहार सन भेल जा रहल छल । ओकर मन उधिया गेलैक । उठल, रैत चुलिहवा पजारि, चाहू बनाबऽ लागल ।

—दोबारा चाहू अनल, लाऽ हमहूँ सँह चाहैत रही । तोहुर पड़ाइ में तऽ हज्जा भेले हेतो ? की करबीही, हमरा सँ सभ के सवखिन हज्जा सहुऽ पड़लैयँ, जन्म खैत माय मरि गेल । लगले बाबू जी से हो चलि गेलाह ! तऽ से हज्जा, खीनू सहोदर भाय के पैतृक सम्पत्ति में हमरा नामे सेहो बखड़ा लगवऽ पड़लैन्ह तऽ सभ के से हज्जा । पड़ाइ में एम० एस-सी बड़ै कलास देने फोर्य कलास के नहि हेबक हज्जा । मोटा-मोटी वैह बूझ जे हमरा जनमिने चाहू दिस हज्जा-हज्जा भेल । तँ तोहुर पड़ाइ में हज्जा भेलौ तऽ कोनो बात नै । जो बाबू पड़ गऽ । नीक सँ पढ़िहँ । परतू सँ नै परीक्षा छी ?” हँ ने सूझी डोलबैत मीनाक्षी चलि गेल ।

कतबो प्रयास करैए मीनाक्षी जे अपन पढ़ाय में ज्ञान सतावी पररूप ओकर मन व्याम अंकल दिखि तँ दोसर दिस घुस्के नै करय । रहि-रहि कऽ बस एक्के टा प्रश्न नाथि

व्याम अंकल एहेन किरक छबिन्ह □ 95



उठे जे श्याम अंकल एहेन किरी छथिन्ह ?' गुन-गुन में लागले छल एतेवे में श्याम अंकल ओकरा लग उतरिबल भऽ कहलखिन्ह—“की पड़य छै बीआ ? हमरा तऽ मने नहि लागैए । एखन कतऽ छी ? जा-कमी ओकरे उलटा कऽ मन बहुटारी ।”

मीनाक्षी हड़बड़ा गेल, ओकरा ठीक सँ श्याम नहि छै जे एखन कतऽ राखल छै । ओकरा मम्मी ओरिया कऽ राखने रह्य छै । ओ ताकऽ लागल-लागल पर रैक पर, अटेसी, पेटी सबटा ताकलक, मुब कती नला भेटलए । एतेवे में अंकल पुछलखिन्ह—“बीआ कोनो नयका कैसेट तऽ नैय एनी ? यदि नय त कती बएह कैसेट गनावे । मन बड़ बेचैन अछि । सुनऽ चाहैत छी ।”

बएह कैसेट माने बेगन अछतर के पूर्वी, फेर रेणमा के 'हाय रम्बा दिल नहीं लगदा ।' पूरा बातावरण जेना कानऽ लागल हो । ओ दोहरा दोहरा कऽ कैसेट सुनऽ लगलाह । ई हुनकर पुरान स्वभाव । फेर बीजे में पुछि बैसलाह—“की बीआ एखन एखन तक नहि भेटली ?”

—“खोजि रहल छी अंकल ।” कहैत ओ जालमारी खोललक । बेगन व मम्मी अपन कपड़ा के बीच में नुका कऽ एखन रखने अछि ओकरा निकालि ओ अंकल के के देलक आ बदला में हुनका सँ भरि-भरि छिट्टा आणोबाय 'गुन-गुन जी', 'इसरो ओरसा तऽ के जी' लेलक । सगाहि हुनकर आवेण जे 'ओ आव पड़ गऽ । परीक्षा छी तोहर । खूब मन लगाकऽ पढ़क बाही ।’

श्याम अंकल भाव-विभोर भऽ सोफा पर बैसि तनयतापूर्वक एखन उधारिकऽ फोटो देखऽ लगलह । ओम्हर मीनाक्षी के मन पड़ाव पर सँ उबिया गेलक । ओ अंकल लग आविकऽ किछु गप्प करऽ चाहलक । झाड़न छम में अचिते देखैवै अंकल सोफा पर चित्त भेल पड़ल अखन के उधारले छाती पर राखि कऽ सुति गेल छथि । हुनकर वृत्तु आँखि सँ नीरक टपार बहल छैन्ह जे आव खुला गेल छनि । स्थिति देखि ओकरा बड़ बलमंभस भेल त ओ सोचऽ लागल परजब ओकरा कोनो साह नहि भेटलक । ओ अंकल के छाती पर सँ एखन उठा, ओरियाकऽ जलमारी में राखि देलक । मम्मी-पप्पा के बावऽ में देरी भऽ रहल छलैक । ओ सुलबाक प्रयास करऽ लागल । मुदा श्याम अंकलक ई अजीब बंग सँ सुति रहबाक स्थिति आ आँखि सँ बहल नीरक टपार ओकर मनोवशा के झकझोरि देलकैक । ओ बेस गंभीर भऽ गेल ।

घर में अचिते जखन दूनु मोटय श्याम के देखलन्हि तऽ दूनु के मुँह सँ एक बंग धरेलक—“ई कखन एलैय ?”—मीनाक्षी किछु जवाब दय ताहि सँ पूर्वहि मम्मी

अंकलक कपार छुबिकऽ देखलक जे कहूँ बोझार तऽ नैय लागि गेलन्हि । आखिर एतेक जल्दी सुति रहबाक प्रयोजन की ? दूनु मोटय अंकलक बिच में सोच-विचार करऽ लगलाह, ऐ गुन-गुन में रहबे करैय जे भोजन लेल हुनका उठबैयन्ह की नहि, तावे में मीनाक्षी लागि उठलि—“कहय छलाह कतेक दिन सँ सुतलहुँ पै नैय, एतऽ नींद आबि रहल अछि-कतेक कठिन स तऽ दू टा स्नाइस खुलिबैन्ह पै ।”

भरि राति मीनाक्षी के नींद नहि भेलैक । कष्टमंछी में अगबे श्याम अंकलक स्वभाव अकुलाहल रहैक । बड़बी टा राति जेना तेना बीसल, भोर भेल । मुदा आदि, रे, बा ! झाड़न छम एना छाती खुल जेना राति में एतऽ कोय रहले ते होय । ओना ई गप्प ओहि घरक लोकक लेल कोनो नवीन नहि रहैक तथापि मीनाक्षी के आठ बड़ कोनादन लगल । ओ जालमारी में एखन निकालि ओकर बिचला पन्ना में साटल पोस्टकार्ड साइबक फोटो जेकरा राति में श्याम अंकल बिहारि-बिहारिकऽ छाती पर राखि सुति रहल छलखिन्ह सँ अपन मम्मी के देखबैत हुनका सँ पुछलक—“मम्मी ई के छथिन्ह ?”

—“ई भोरे-बीरे एखन देखोनाय तोरा की फुरेलो ?”

—“तौ बता मे मम्मी । ई कितकर फोटो छिये ?”

—“तोहर दमा पीसीक” “कियै ?” ... पुछैत मम्मी गंभीर भऽ गेलखिन्ह ।

—“हुम काहया दखबैय तय ! एखन कतऽ रह्य दे ?”

—“ओ मरि गेलखुन्ह बेटी !” कहैत लगभग कानऽ लगलखिन्ह मम्मी ।

—“कहिया मरि गेल ?”

—“तोहर जन्मो सँ पहिने ।”—एहि बेर तऽ हिचुकी बहार भऽ उठलए मम्मी के । मीनाक्षी एहि पर बिनु ध्यान देने प्रश्न करैत रहलि ।

—“मम्मी तोरा बुझल छी श्याम अंकल एहेन किरी छथिन्ह ?”—मम्मीक मुँह पर जेना खूब भरिगर ताका लागल हो । ओ हिचुकि-हिचुकि कऽ हसो टपारे कानऽ लगलखिन्ह । मीनाक्षी एकटा गूढ़ रहस्य में डूबि श्याम अंकलक उबियाएल स्वभाव के जोड़बाक प्रयास करऽ लागलि । श्याम अंकल की रहल हेलाह, ई जोखऽ लागलि । आखिर बिनु कहने कऽ गेल हेलाह अंकल ?—मीनाक्षी प्रश्न केवलक तऽ अखबार पढ़ैत पापा चुप रहि गेलखिन्ह, मम्मी सेहो शांत । लखने ओकरा अकस्मात् कनफुसकी में मम्मी के कहैत पापा के रतुका गप्प मन पड़लए । अंबरदाउन्ड अछि, पका गज किरी ।—ओ झटकिऽ पापा लग आएल आ हुनका सँ पुछलक—“पापा ! अंबरदाउन्ड माने ?”—पापा आँक उठलखिन्ह आ अखबार के तेजी सँ पढ़बाक प्रयास



करऽ लगलखिन्ह । ओ मम्मी लग गेलि, मम्मी ओकरा बुझलखिन्ह—“जि लोकक सेल छिपिकऽ काज करै से माने नुका कऽ ।”

—“काज चोरा कऽ किमैऽ कएल जाय छै ? जे खराब काज होय तऽ एकटा.....”

—“तैं बीको काज कतेक बेर चोरा कऽ करऽ पड़य छै जे सरकार कहीं जहल नहि यऽ विशय ।”

दोसर दिनुका अखवारक मुखपृष्ठ पर ध्याम, अक्षरक एकटा अस्पष्ट फोटो आ भिरपरायीक समाचार छपल छल । ओ एकटा गुप्त सीटिंगक संवर्ध मे महेन्द्र मोहंलाक एकटा गुप्त इलाका मे चारि बजे मोरे पकड़ाएल छलाह ।

समाचार पढ़ि पान अखवार मम्मी दिस बड़ा दैलखिन्ह । मम्मी अवाह ! श्रीमती सेहो खबरे पड़लक । ओ बेसीन भऽ उठलि । ओकर माथ मे कतेको घन्त घुँटिया काटऽ लसलैक । लो मोवाऽ लागल आइ जकर अपन इतिहासक ओकर से छुटल—मैरम तोकै काज लोक चोराकऽ किमैऽ करै से । आ सरकार ओकरा..... ? प्रवक्त मर के उठैने मोताश्रीक डेग कलिज दिसि बड़ि रहल छलैक ।

बच्चे सभटा के नहि, हुनका पत्नीके सेहो ई प्रस्ताव देल जे तब आ आकर्षक लगलनि जे ओ सोझि चौकि उठलौह ।

—“की सत्ते अरुत सभ घूमऽ जायब बाबू जी ? दोसर बेटाके जेना किशाने नहि भऽ रहल छलैक । ओ पिताके बड़ मनोरथमे देखि रहल छल जेना ।—“हूँ सत्ते, तोरा विश्वास नहि होइत छोक ? ओ बड़ दुवारके बेटाके देखैत बजलाह । ओना एहि बीच बेटाक सन आनी बच्चा आ पत्नी सभक अति उपकुलमे गनेन लंकर बाबूक मुँह पर गड़ल छलैक । गनेन बाबू ई अनुभवो कऽ रहल छलाह । अखन ओ अपन बेटाक प्रथम उत्तर दऽ चुकल छलाह तखन हुनका ई बात बड़ अथलाह लगलनि जे अखिर सभ गोटो के हुनकर ई प्रस्ताव एवा विवेक किएक लागि रहल छैक । हिनका सभके विश्वास किएक नहि भऽ रहल छनि । हुनकर मन भीतरले क्षम भरि लेल छलैक गेलनि ।

—“की बात छैक पार्ष्णी ? ओ पत्नी दिस सकैत पुछलनि ।

—“नहि, बात की रहलैक । मुदा की सत्ते चलबैक ? पत्नी पुछलनि ।

—“बिबिध बात अछि । किएक पुछैत छी ? जखन कहलहुँ तैं हँसी किएक खुमि पड़ैत अछि ? ओ अपन खोसाहटि के बसैत बजलाह ।

—“कतऽ जवबैक ? पत्नी कने बिहूँसैत पुछलनि । ओ सोचय लगलाह । ताबत बच्चा सभक उरलाह पलैत पंखा जकाँ एकाएक स्विच भऽ गेल । ओ सभ दम सभने ओहि परिणामक आशंका मे माय-बापके देखैत रह्य कि बस एतहि आबि कऽ मर्य कटि जाइत छैक आ फेर सभ किछु कटु भऽ जाइत छैक । ओकर बादो घरमे सभ घंटी खुल रहलैत अछि । मुन्नी, मुकेश अपन-अपन किताब कानी लऽ कऽ एक दिस बैसि जाइत अछि । बड़का हुनू बच्चा सेहो घरक कोनो कोने मे अलत भऽ अलत अछि । पत्नी अपन मुरमा-ओराक मारिकेर लेल बला दिव्वा आ पुरान कपड़ा निभासैत छनि । फेर कोनो फलक रक्छू कऽ वा डील भऽ गेल जटनके सजगतीमे टोकऽ मे बसल भऽ जाइत छनि । अरुतो अप्पेस बाबू अपन जेबीमे मोचरल-मोचरल सिक्केटक दिव्वा तर्कत बहार करैत छनि आ फेर फकरो बीयासलाह दऽ अजबाक लेल कहि, ‘सिकरेट जखन विना कपड़ा बदलने बैसि जाइत छनि ।

बच्चा सभ एहि आशंका मे स्तब्ध छल । गनेन बाबू एक-एक बच्चाक मुँह निहारैत जेना पड़पनि आ सहृदी दिक बाद एकक रोह आ ममत्व से बिहृतत बजलाह—“तोरा सभके नहि अजबाक छोक की । तैयार किएक नहि होइत छह फटाफट । देरी भऽ जयतीक तैं सभ घोषट ।’ हुनक वाक्य समझी नहि भेल छल कि सभ बच्चा ओही अंदाजमे कुदैत-कुरैत छिरिया गेल जेना सकलन अपन कवाइत देखीना पर मुनर मुनर पंमुआ जानवर ।



सप्रेम बाबू अक्षय अपन बच्चा सबके ई उल्लास देखलनि तँ मनेमन भीजि गेलाह । हुनकर मनक एहि प्रतिक्रियाक बड़ सूक्ष्म लक्षण हुनक आँखि-कोनमे उभरि गेलनि जकरा पत्नी पार्वती चुनि भेलथिन आ लग जाय हुनक बाँहि एकड़ि बनतीह— 'अहाँ एना किएक भऽ गेलहुँ । कोन जरूरत छल घूमऽ जयबाक । हाथमे पाइ अतिरिक्त तँ देखल जयतैक, जेना एतेक दिन नहि, तँ किछु दिन आरौ नहि घुमिहुँ तँ की भऽ जयतैक । ओहुना एकर बुनूक परीक्षा होयतैक ।'

'को भेनैक आइए घुमि छी तै ? भला कहू कतेक दिनसँ कहने छिएक आ एकटा ई छोट-छिन कार्यक्रम नहि बना सकलहुँ । हम एहि शहरमे अपन सम्बन्धीओ सबसँ भेंट करय नहि लऽ जा सकलियैक । बच्चो सब आगिर चाहैत होयतैक जे एहि घरसँ निकली । कतहु घुमि-फिरो । से हमरा बड़ जरूरी बुझायल । चाहि जे होअय । आइ एकरा सब केँ लऽ कऽ शहरवयैक अवश्य ।'

'कऽ जयतैक से तँ निश्चय होयबाक चाही ।' पतिक मध्यमार्थ आकस्मिक मूड बिहृत पत्नी समर्पित भऽ कऽ पुछलथिन । एहिबेर पति केँर तोतरयला । कोनो खास स्थानक नाम नहि कहि सकलथिन ।

ओम्हर उसाह आ खुशीसँ कुदैत बच्चा सब भीतर जाकऽ तैयारी करऽ लायि गेल आ जहिना माय-बापक ई छोट सन विचार विमर्श कानसे पड़लैक तँ सब ठमथि गेल । छोड़पी मुन्नी जे पूछि रहल छल—'दीदी हम कोन काक पहिरव, ओ चुप भेलि अछि छल, किएक तँ ओही काल दीदी छोट पर बाँधुर वऽ चुप रहबक इलाका कमलक । नय मुनऽ दिअऽ । मुनक कपड़ाक जूता पयरमे पहिरि लेने छल मुदा ओहिमे एकराक पीता मायब छलैक । पेन्ट-शर्ट जे मरीर पर छल ओएह पहिरने । दोसर ओहिसँ नीक छलैक नहि ।

दीदी एहि परिस्थिति सबकेँ नीक जकाँ जनेत छलैक तेँ आयकित भऽ गेल जे कोनो आश्चर्य नहि जे ओ सबकेँ तैयार कऽ दिअल आ माय-बापक एहि विचार-विमर्शक परिणाम ई बहराय जे 'आइ आब छोड़ू केर कहियो चलव ।'

एहि आकस्मिक वाधा सँ मुन्नी पानऽ कानऽ पर भऽ गेल । किएक तँ ओकरो बुझा गेलैक जे केर आइ घूमऽ जायब पार नहि लागल । ओम्हर हुनका सबक मन बानमे पड़ि रहल छलैक । मुन्नी अधिकतर माथ पर बाल नुलमे ओघने कचकल रहल छल जे ना कोनो मे कोनो सखेटा तेहन ठाढ़ कऽ दैत छैक जे सभटा बनल बनावल कार्यक्रम बिगड़ि आरत अछि । परन्तु तखने किछु ऊँच स्तरमे निशाक चेतोरी कानमे पड़ल ।

'की जेलऽ ? तोरा सब जहरी तैयारी किएक नहि कऽ रहल छहुँ ?' सबक मुँह पुनः बसरि गेल । केर तेजी सँ सन तैयार होयऽमे लागि गेल । मुन्नी केर मध्यम सम्बन्धी दोहरीजकैक । दीदी किछु असमंजसमे पड़ि गेल । केर बुझलकै—'को हेत ? ओएह

पहिरि ले । खूब नीक लगैत छी ।' ओ ओकरा आमाँ जे फाक बड़ोयकैक से खूब पुरान भऽ गेल छलैक । फलेक ठामसँ ओकर कमीवा उधरि गेल छलैक । दोसर जे ओएह पहिरि कऽ घरमे काज चलदैत छल आ बाहरो जायब ? मे ओकर बाल मन केँ पसिल नहि पड़ैत छलैक । ओ थोड़ेक नाकुर, नुनुर कयलक मुदा दीदीक ई बुझोला पर जे 'कपड़ा सत्तामें की होइत छैक, कपड़ा नीक नहि रहलासे मनुष्य नीक नहि रहि जाइत अछि की ? मनुष्य पोशाकसँ बोड़े चोन्हल जाइत छैक ।' दीदी माँ सँ एहि गप्पकेँ वर्षोंसँ सुनैत आ मानैत आवि रहल छल । मे ओ बहिनी केँ बुझा-मुझा केँ कहय लागल । तो तँ अपने तेहन मुन्दरि छेँ जे तोरा नीक कपड़ा पहिरबाक आवश्यकता नहि । नीक कपड़ा तँ ओकरा चाहिएक जे देखबामे नकपिचनी होअय ।' ओ बुझा-मुझाकेँ ओकरा फाक पहिरा बेलकैक । मुदा मुन्नीक ओ प्रफुलित चेहरा समायने रहि गेलैक ।

'—देख मुन्नी तो' यदि कपड़ा लऽ कऽ दुखी हेवें तँ बुझि जा ! केर ओएह हेतो केँ हजम होइत छैक । बाबूजी दुखी भऽ कऽ घूमऽ जायब छोड़ि देवुन । दीदी बुझेबाक इमे बेसीलकैक—देख हमर कुली किछु छोट अछि । बिचुलका सीअनि छोमि देवऽ पड़लै-ए । अगलाह लगैत छै । तँ की भेनैक कपड़ा तँ छैक । हम एएह पहिरिकेँ बहरायब । मुनेशोक कपड़ाक तँ एएह हाल छैक । मनुक कांड़ाक सेहो एएह हाल छैक, कपड़ासँ की होइत छैक । कपड़ासँ बोड़े मनुष्य बड़का भऽ जाइत छैक वा नीक भऽ जाइत छैक ।'

दीदी बचक हिमावसे किछु अधिके तंगीर आ सोझरायन भाषामे ओकरा सबकेँ बुझा रहल छलैक । आब मुन्नीक मुवाकित देखलासँ साफ पता चलि रहल छलैक जे आज ओ मनसँ जयबा लेल तैयार भऽ रहल अछि । ताबत, एकटा जुताक किता कसने दोसर खुत्रके छोड़ने मुनेज वीड़ि कऽ दीदीकेँ पीछेमे पकड़ि पुछलकैक—'हम सब आइयो नहि जयतैक दीदी ?'—'के कहलबौक नहि जयतैक ? तो' तैयार भेतें ? देख तो' देख नहि केरजें । बकरिबे ।' ओ उसाहित भऽ कऽ चलि गेल । मनु आ दीदी सब अपन-अपन पुरनका कपड़ा मे सँ जोड़िकऽ पहिरि जुलूसक रूपमे विहँसीत माथ लग आयल ओकरा सबकेँ देखि मायक मन प्रसन्न होयबाक बखलामे भीतरसँ दूटि चेलैत । ई हुनक अँखि कहि देलकनि । सरकी बेटी आँखि पड़ब जानि गेल छैक ।

माय रोज पहिरऽ बला साड़ीसेसँ नीक बिछवामे कठिनाक अनुभव करैत छलीह । बड़की बेटी ताकिनेँ कल्लकै—'एएह पहिरि सकैत छै' माँ ! आर कोनो दोसर काजक नहि छैक ।' माय बिना किछु सोचने साड़ी हाथमे लेलक आ पहिरऽ लागल । बेटी हुनकासँ आँखि नहि मिलौलक ।

ओहि घरमे एहिसँ किछु भिलट पहिने नचैब खुशी जेना टाङ्गमे बघोर पड़ि गेलाक कान्ते एक कोनमे बैसल कहि कऽ लागल ।



दू कोठनीक एहि घरमे जेना सब धट्ठा गप्प सप्पस जुटल रह्य । तौओ किछु जोरसँ चोर चोरोनी बँत बिना बजलाह जे—'सबै जे तो' सभ चीपटु करवे' । कतेक बेरी लगेत छीक तैयार होबऽ मे ।

एहि चेतनी पर सब धुतिगर भऽ गेल । माँ बड़की बेटीसँ पुछलथिन—'केस छीक छै ?' ओ साधारण रूपेँ अपने घरमे लम्बा केसक जुड़ी सपेटलनि आ चप्पल पहिरि तैयार भऽ गेलीह । अगला ओहि कालमे नहि भेटलैक । पना नहि कोन बच्चा राखि देखलैक अकरा तकबामे पंदी लागि जायत । ओ अपन बेटीएकेँ अपना बना गेलनि । ओ अधिक काल, बिना अपनाक एहिना काम चला लैत छथि ।

दोसर कोठनीमे गणेश बाबू किछु सोचमे बैसल छलाह । चेतनी दऽ कऽ बैसि गेल छलाह । सबहुक परकर शब्द मुनि उत्साहित भऽ डाढ़ भऽ गेलाह ।

हुनका देखितहि सभ हलप्रभ भऽ गेल ।—'ई की तो' सभ एखनो धरि तैयार नहि भेल छै ?'

—'आबकी, सभ तैयार छैक, चल् ।' पत्नी हुनका आश्चर्यक अर्थ बुझैत कहलथिन । मुदा गणेश बाबूकेँ डकमुड़ी लागि गेलनि । सभ बच्चाकेँ मुड़ीकेँ पर धरि निहारलनि आ केर पत्नीकेँ, आ चुपेँ डाढ़ रहलाह । पत्नी एहि दृष्टि सँ परिचित छलीह । गलेस बाबूक मनक ई हाहाकार ओ कतेको बेरि एकान्तमे मुनि चुकल छलीह बच्चाकेँ सुवल रहलापर ।

—'की बात छैक ? आब कहीं अपने देरी कऽ रहल छी ।' पावेती बजलीह आ बेटीकेँ बादेश देलनि जे ओ केबाड़मे ताला लगावय ।

गणेश बाबूक आँखि जेना बेधेनीसँ सभ लोक पर दीह रहल छलनि—बेटाक परर पर लजरि दऽ कऽ बजलाह—'ई एही बगसमे जायत ?' हुनका स्वर दूटल आ परल छल । पत्नी देखलथिन आ अतण्त हलप्रभ गेलीह । बजलीह—'की कर ई छोड़ा छैक विचित्र । खूब जोर-जोरसँ बान्हि कऽ फीठाकेँ सोड़ि देखलै आ एकरा केँकियो देखलै कहल आ आब एखन... ?' पत्नी विचकतासँ भरि गेलीह । केर एकाएक बजलीह—'मुन्ती कनी तो' अपने जूतामे देखलै, जूता तँ बेकार छीक । भरिसक फीठा होइ ।' आर संयोगवश जे फीठा निकलल से काअक फीठा छल । केर फीठा लगाओल गेल ।

मुदा गणेश बाबूक मुँह एकाएक निमग्न छल जे लगेत छल जेना ओ दुखिताह होथि । ओ एक पिलासँ जल भंगलनि आ शैथि गेलाह । बेटी घर बन्द करवाक बरवाने हुनका जल आनि कऽ गेलकनि । ओ गट-गट कऽ पीबि गेलाह आ निरीह हँसल पत्नीकेँ देखलनि । पत्नी हुनका लजरिकेँ चिन्हलथिन । आ केर ओ दोसर दिखलाकय लगलीह ।

—'कतेक दयनीय लगेत छै सभ किछु नै ?' ओ पत्नीकेँ पुछलथिन ।

—'कतेक दयनीय लगेत छैक ?'

—'छीक तँ छैक । चल् उठ । मुदा आबो अहाँ कहि नहि रहल छी जे जयबाक बातऽ अछि । बीन बाटमे जा कऽ तँ निश्चित कहि करव ।' पत्नी बलाबलथि कँ हलप्रभ करवाक प्रयासमे कहलथिन ।

—'हमर तँ मोन बैस गेल पार्वती । भला कहु, एहि झुँस मे हिनका सभकेँ सऽ कऽ जाहि घर मे जायब से की सोचलैक ।'

—'अहाँ तँ अनेर गप्पमे ओझरा गेली । हम जे जायब तँ अनेर घर छोड़ि जालथ ? जतय जायब मे अपने सम्बन्धी सभ जायब । जे हमर सम्बन्धी छथि तँ हमर हालति अवश्य सुज्ञत होयताह । एहन बहुशीमे एतेक कम बरमाहा, एही पाशमे तँ सभ किछु करव पड़ैत अछि, बच्चा सभक पढ़ाइ लिखाइ, मकान भाड़ा सभटा एही दर-माहासँ । आ दोसर जे कपड़ा लताक कोनो अन्त छैक । कसबो नीक पहिरय लोक मुदा ओहूँ नीक आ वासी कपड़ा भेटि जाइत छैक बजारमे ।'

—'सभटा छीक छैक । परन्तु जीवनमे, समाजमे रहि कऽ एहि गप्पकेँ छोड़ि नहि सकैत छी । कोन ठेकान हमरा आ हमर बच्चा सभकेँ एहि झुँसमे देखि कऽ हमर सम्बन्धीयोकेँ हीनताइ गुनाहनि । तखन उलटै एकटा समस्या ।' ओ बजलाह । —'बाह, सम्बन्धी कपड़ा तँ छोड़ि के चिन्हल जाइत छैक । अहाँ आब ई सभ छोड़ू, उठ ।'

मुदा वो नहि उठलाह । बच्चा सभ ओहिना एहि गप्प सँ आकर्षित भऽ गेल छल । कोनो आश्चर्य नहि जे एहि ठाम अछि कऽ जयबाक कार्यक्रम रह भऽ जाय । किएक तँ एहन होयब कोनो नय गप्प नहि थिक से ओ सभ बाहर निकलि कऽ परिणामक प्रतीक्षा करव लागल ।

—'हिनका सभकेँ एहि हालत मे देखि मोन होइत अछि जे अपन मुँह अपने चोचि ली । हम अहाँ लोकनि केँ नीक सन कपड़ा तक नहि दऽ सकैत छी । हम सभ मनुख सन कपड़ा पहिर कऽ निकलि नहि सकैत छी ।' ओ उत्तेजित होइत बजलाह ।

पत्नी गुझलथिन—'बच्चा सभ की सोचलैक ? उठ चल् । एतेक उसाहसँ बच्चा सभ तैयार भेल अछि । नहि गेलासँ एकर सभक मन दुस भऽ जयलैक । उठ ।'

गणेश बाबू लगभग भवेँ मन निश्चय कऽ चुकल छलाह जे एहि बराने ओ हुनका लोकनिकेँ बाहर लऽ जयबाक गप्प छोड़ि बेसि । मुदा ओहि क्षण हुनका ई मनमे अपलथि जे एहि तरहेँ कोनो ने कोनो समस्याक कारण ओ कतेको बेर बच्चा सभकेँ तैयार करवा कऽ केर बाहर घुमै लैत जयबाक कार्यक्रम रोकि देने छथिन । बच्चा सभ तँ जेना एहि गप्पक लेल अभ्यस्त भऽ गेल अछि । ओकरा सभकेँ आश्चर्य होइत छैक घूमऽ जयबाक गप्पसँ । ई गप्प छीकसँ बुझैत छैब । एक बेर तँ ओ अपने



कानेसें सुनलाधिन । बच्चा सभ अपनामे गग करैत छलनि जे बाबू जीक घुसऽ लऽ नयबाक कार्यक्रम अखन भऽ जाय तखने खुशु । कहैत तँ ओ कतेक बेर छलनि ।

मुनि कऽ हुनका सामस नहि दया अयलनि । ताहि छारे आइ तँ जेना होयत बच्चा सभकेँ घुमपर्वक जखर । बहुरीमे बच्चा सभ आमा आ निराशमे उरैत दुबैत प्रतीक्षा कऽ रहल छल । मुदा ई लोकनि एखनि छरि बहुरायल नहि छलाह । मने करैत छलाह । आब बच्चा सभ लौका रहल छलनि ।

तखन जा कऽ ई लोकनि बहुरायलाह । घरमे लाका जगओल गेल । पार्वती पुर्व सावधानीकेँ ध्यानमे राखि पुछलनि 'पानि भरि कऽ राखल अछि की नहि ? एहन ने हो जे ओतेक रातिकेँ घूरी आ पानिए नधारत । एहि कलक कोनो भरोस नहि ।'

—'समटा देखि नेतिवैक । बर्तन बासन धोल-धाएल छैक । आबि कऽ कोनो तरकुत नहि करय पड़थीक ।' बच्ची बाजलि ।

ओ लोकनि धीरे-धीरे सभक पर बइलाह । बेडा अपन पिताक बामा हाथ आ छोटी बहिना हाथ धपने खुशीसँ चिचिआव लागल । पाछू-पाछू पार्वती ओ दुनू टा बइका बच्चा ।

—'किछु सोचलहुँ कतय जयवाक अछि ?' पार्वती अपन पतिसँ पुछलनि ।

—'बल बस मरिचकपर शिचरि लेव ।' ओ बजलाह तँ बड़की बेटी आँखि याबि कऽ अपन माँकेँ देखलक आ पिताक स्वभाव पर बिहूँसलि । पत्नी सेहो बिहूँसनीह ।

ओ लोकनि पाँच मिनट चललाक बाद बस स्टैण्ड पहुँचलाह । कोनो बस नहि छलैक । एकटा बसक अपवाक समय भऽ गेल छलैक 'बुधहरिआक समय । मभीक मीसम । उमससँ भरल । ओतऽ गाछो नहि छलैक ! कोनो छहि नहि छलैक ते कोनो दोकान आदिक छान्ने भऽ कऽ ओ लोकनि आर लोक सभक संग, प्रतीक्षा करय लगलाह ।

—'तोबैत छी बससँ छोटे बिरकोहरा चलल जाय रामेश्वर भाइ ओतऽ । बहुत चिनसँ नहि गेलहुँ अछि । भेटल छलाह तँ उपरान देत छलाह । मुँकेसकेँ तँ ओ देखलहुँ नहि छलनि ।' एकाएक गणेश बजलऽह तँ पार्वती सेहो उत्साहित भऽ गेलीह ।

—'है बड़ नीक स्वभाव छनि । बहिनो वाइ बड़ सेही स्वभावक छलनि । लोक रहत ।'

आर तखन फेर सभ बस अपवाक प्रतीक्षा करय लागल । लक्ष्मण बीस मिनटक बाद बस अयलैक आ सभ बच्चा बड़ उत्साहसँ ओहिपर सवार भऽ गेल । सभसँ पाछू पति पत्नी । भीड़ बड़ कम चलैक । टिकट कटौलाक बाद कन्कटर बस खोलबाक गेल कटलकीक । बस धीरे-धीरे सगरव शुरू भेल तखने लोक सभ भाबि कऽ बीदान पर लटकऽ लागल । देख कऽ बच्चा सभकेँ अहमे आनन्द अवैत छलैक ।

ओ बस कतेको स्थान पर रुकैत आखिर बिरकोहरा पहुँचल । ओ लोकनि उत्तरि रामेश्वर भैयाक घर दिस चलि पड़लाह । ओ जाइत छलाह बड़ उत्साहमे, तँओ लमैत

छलैक जेना बेगमे उत्साह नहि होअय । उत्साह जेना तेरा गेल होअय । फेर चलैत-फिरैत दस मिनटक बाद ओ सभ बंगला घुमा घरमे पहुँचलाह । खूब खूजल जगह छलैक । बड़ पैघ हाता । पश्चिम लोहानी पुरक ओकरा समझक अपन दम पोंदु गखा गली सन नहि ।

रामेश्वर भैया गणेश बाबूक निमिषीत भाइ छलनि । बिहार सरकारमे कोनो अकसर छलनि । गेट सब पहुँच कऽ जखन ई काफिला रुकल तँ थोड़े काल जेना भीतर जवबाक साहने नहि होइत छलैक । तँही ओ लोकनि धीरे-धीरे अज्ञातमे जा कऽ बरण्डा पर पहुँचलाह । सोर कपअधिन । एकटा चबराती सन आदमी आयल । ओ सभकेँ एंडोसँ मुँही धरि देखैत पुछलनि—'की अछि ? साहेब घर पर नहि भेट करैत छलनि ।'

—'जनेत छी । जा कऽ कहुन गणेश संकर आयल छनि ।' ओ किछु रोपसँ कहल-धिन । ओ ओ धुनि गेल । लगभग दू-तीन मिनटक बाद एकटा संजजन बहुरायलाह । भूट सब बड़ भय । बच्चा सभ तावत ठाड़ छल आ अगुता रहल छल । पार्वती माथ पर झोचर छऽ कऽ एक विंग ठाड़ कऽ गेलीह । ओ साहेब जखन अयलाह तँ गणेश बाबू प्रणाम कयलनि । बच्चा सभ सेहो प्रणाम कयलनि । साहेब जेना अपीकयसँ बिभूत बजलाह—'ओ ! गणेश ! एहुर कोनो अपनाइ भेलऽ ? आबऽ ।' आ भीतर मुड़ि गेलाह । हुनका पाछू पाछू बच्चा समेत इहो सब भीतर गेलाह एकटा भय झाँम कममे हुनका बैसा कऽ ओ आरी भीतर चलि गेलाह ।

नहि जानि कियेक गणेश 'संकरक सपरिवारकेँ' बुलाय लगलनि जे किएक अयलाह ? एतऽ सभ गोटाक आँखि साहेबक व्यवहारकेँ देखने छल आ किछु नीक नहि लागल छलैक । बच्चा सभ जेना बड़ अनुविद्याक अनुभव कऽ रहल छल । ओ स्वयं अपन संदा पयर आ चट्टी समेत ओहि सजल—सजाओल झाँम कममे जयबाने पहरा रहल छलाह, बच्चा सभ तँ आर धकमका रहल छलैक ।

—'बाबू ओ हम सभ किनका ओतऽ आयल छलनि ?' के छलिन ई ? मुँकेस 'अनामक पुछलनि अपन पितासँ बड़ धीरेसँ घुमनुसाइत । मुँहसँ बुझाएत छलै जेना ओकरा विश्वास नहि भऽ रहल छलैक । ओ कोठनीमे चाककात नकैत छल ।

—'ककका ? मुँनी धीरेसँ जेना विश्वास करैत पुछलकैक—हम सभ प्रणाम कयलियनि तँ कनिको नहि कहलनि नौके रहू ?' पिता बेटीक माथपर हाथ फेरैत बजलाह—'कोनो बात नहि ।'

—'बाबू जी कखन चलब एतयसँ ?' बड़की बेटी अगुताइत पुछलनि तँ पिता एकाएक चिन्तित भऽ गेलाह आ बजलाह—'एखने चलैत छी ।'

तखने साहेब फेर झाँम कममे अयलाह आ कनी अक्षमंजस देखबैत बजलाह—



अंगलमे टी० बी० पर बड़ नीक प्रोशम वऽ रहल छै, मे सभ ओकरे घेरने बैसल अछि । ओ बिना मकोचके बेधइके कहि गेलाह । 'ताहि परसै एतेक लोक सभ आबि देख अछि अहीस पड़ोसक । बैसबाक अगइ सेही नहि बौचल छैक कहि तँ अहँ लोकनि ओतय चलि कऽ बैसलौ ।'

—'ओ नहि भैया, एखन हमरा सभ चलिने छी । एम्हर बायल छली । बच्चा सभकेँ नेहो अहुन दिनमें कउने रहियैक लेकिन मौका नहि भेटैत छल । आइ मौका भेटल से घुमऽ लेल निकलली ।'

—'एम्हर आबौ तँ केर आदब कहियो ।' ओ बजलाह ।

गणेश बाबू प्रणाम कयलथि । बच्चो सभ बित मोने प्रणाम कयलक । अहातमे बहुत रास फूलक गाछ छलैक । ओ फूल देखि कऽ बुन छोटाकाक मोन बड़ खुशी भेल छलैक । लोभा भेल छल । मुदा अबबा काल घुरियोकेँ नहि देखलक ओ सभ । जल्दीसँ निकसि कऽ ओ सभ सड़क पर अवताह । आ चलल गेलाह ।

तखने गणेश बाबूक कानमे आवाज पड़लनि मुकेश दीदीसँ पुछि रहल छलैक—

—'दयनीय माने की होइत छैक दीदी ?' दीदी टारि देलथिन । किछु नहि बजलीह ।

—'बाबू ने दीदी, दयनीय माने की होइत छैक ? ओ बोझार पुछलकैक ।

—'दयनीय माने जकरा पर दया आबय ।'

—'दया आबय माने ?'

—'गरीब ।' दीदी कहलकैक आ पुछलकैक—'किएक पूछे छै ?'

—'हम सभ गरीब छी ? ओ पुछलकैक । बाबूजी जे घरमे कहैत छल-थिनहँ ।' आउ दीदीकेँ घटना मोग पड़लैक ।

गणेश बाबू मुनथनि । चलैत-चलैत पत्नीकेँ बेछिका बुनू गोटा अवमानक अनुभव करैत छलाह । बजैत किछु नहि छलाह । आ बीच-बीचमे बच्चा सभहक घोटि पकड़ि कऽ सड़कक काते कात चलबा लेल कहैत छलथिन ।

—'बाबूजी पानि पीयत ।' मुन्नी बजलैक । ओकर मुँह रोव आ पसीनासँ लाल भेल छल ।

—'अबने थोड़े कालमे बस स्टैण्डपर पहुँच जायब । ओतय पीबि लेब ।'

—'बड़ प्यास लागल अछि ।'

—'बस, आबि गेलहुँ ।'

ओ लोकनि तेजीसँ चलय लगलाह । बस स्टैण्ड पहुँचलाह, कल थन्क छलैक पानिक कीनो अवधो नहि छलैक । बगलमे एकटा पानि बेचय बसा छल । एम्हर पाइए गिलास दैत छलैक । पानिक भाव बूझि गणेश बाबू कोषमे बड़बड़यलाह—'अन्तर छै । मुदा पानि देखि बच्चा सभहक प्यास जेना आरो बड़ि गेलैक । गिलास ओना तँ लगभग सभकेँ सागि गेल छलैक । एम्हर पाइए प्रति गिलास पानि, मात्र बच्चे सभकेँ गिलासक बसक प्रतीक्षा करय लगलाह ।

गणेश बाबू पार्वती आ दीदी अपन-अपन मोनमें एम्हर किया पैतालीस पाइए बचलक धक्करमे अपन प्यास खतम कऽ लेलनि । भऽ सकैत अछि-रस्तामे काज दिअम । सम्भव इहो जे बस तसमे कतहुँ काज दऽ दिअय कतहुँ कम नहि पड़ि जाय । इहो संभव भऽ सकैत अछि । पार्वती अपन पति आ दीदी अपन पिताक आवतिसँ बड़ परिचित अछि । एहि द्वारे बुझिबै कदिखन तँपार रहैत अछि, परिलिखनिक मोकाबिला करबाक लेल ।

—'अहाँकेँ अग्रताह लागल ओतय जा कऽ ने ?' पार्वती पुछलथिन ।

—'स्वामाधिक अछि । चिकट अभाव छैक । अपने आपहमें बजौलनि । हम की जनैत छलहुँ जे एहने बाग्रह आ हमर एहने भाइ । ओ क्षुब्ध भऽ कऽ बजलाह ।

—'जाय दिनीक । हमराभे आ हुनकामे भाइक सम्बन्ध भेओ नहि सकैछ । दू भाइमे, माने, मामिओत निसिबौतमे एतेक अन्तर कीना होयतक ? ओ तँ कीनो आन लोक समैत छथि ?' पत्नी बजलीह ।

—'हँ अन्तर छथि । अन्तरकेँ डाढ़ छैक, खतबा छैक । सभ छैक । हम तँ निर्धन छी । मामूली काज करैत छी, कीनो तरहें बच्चा सभहक संग निबाह करैत छी ।' ओ बजलाह ।

—'हमरा विविध लागल जे बहिनदाइ एकोबेर हुनकियो देवऽ नहि अपबलीह । बड़ कोलादन लागल टी० बी० मे बड़ नीक प्रोशम-भऽ रहल छलैक, तँ सँ की ।'

—'छोड़ू चर्चा । आव एकर चर्चा हरयम लेल बन्द ।' ओ संयत कोषमे बजलाह ।

—'बाबूजी अहाँ कहलहुँ जे काका छथि । मुदा ओ तँ एकोबेर पानिओ दऽ नहि पुठलनि । हमरा कतेक जोरसँ प्यास लागल छल । हम सभ तँ नयो अवैत अछि तँ तुरंत पानि दऽ पुछैत छियैक जे भरिसक रस्तामे चलला सँ प्यास सागि गेल होइक । मुन्नी पुछलकनि ।

—'हँ बाबूजी, ओ पूरा घरमे देवालयपर कतहु सरस्वतीओक फोटो छलै एकोटा ? आकि विद्यापतिक, तुलसी दास आ कबीर बाबूक कीनो फोटो छलनि ? केहन कका छथि ?' मुकेश आश्चर्य व्यक्त कयलक तँ गणेश बाबू आ हुनक पत्नीक मुँह पसरि गेलनि ।

—'हँ बेटा । गड़बड़ छलैक । ताही द्वारे तँ ओतय सँ अपना सभ जल्दी बलि अपबलहुँ । आव चधू दोसर ठाम चलैत छी घुमऽ फिर ।'

पत्नीसँ ओ परामर्श कयलनि जे ओ लोकनि अपन भातिज ओतय चलताह । रस्तामे बसल छतरि कऽ मुस्किवसँ एक भिनट पड़ल । ओतय मुन्नीतसँ बैसल । बहुत बित मेंटो जेना भऽ गेल । ओ लोकनि दू बेर घर आबि बुकलाह अछि । पत्नी सहमति देलथिन ।

बस अवला पर ठसाठस भौड़ । तँ ओ ओ लोकनि कहुनाक चबैत गेलाह अपेक्षित स्टाप पर उतरलाह । फेर गेलाह भातिजक घर । साहरसँ सभ किछु जान छल ।



कौलखेल पर आंगुर देलनि । दु-तीन प्रयासक बाद केदार खोलि कऽ जे व्यक्ति बाहर भेलाह ते स्वयं हुनक भाखीजे छलाह ।

—'अरे अहाँ कबका ?' ओ कहलनि ।

—है, हुन सब मोटप छी । आइ घुमऽ निकलतहुँ । बहुत दिनसँ हिनका सबकेँ एक प्रकारे परतारि रहल छलनि । ओ बजलाह ।

—'आइ मै ।' ओ सामान्य बंगसे स्वागत करैत अपवाक आइह कयलनि ।

ओ लोकनि धीरे-धीरे केदार लग पहुँचलाह । आ भीतर जे हुनकी देखनि तँ ओतप ठाढ़ रहि गेलाह । कोठधी कसमकस भरल छलैक । बीचोबीच सब्बा बैसल ।

—'टी० बी० पर हिनेमा चलि रहल छैक ते ! से लोक जमल अछि, आब ककरा बना करिदैंक ?' छाचारी ओ तारतम्य मे पड़ैत, जेना संकोच सँ बजलाह ।

मनेज बाबू आ हुनक सभी जेना आँखिमे निश्चय कयलनि । बच्चा सब एतहुँ ओहिना थोड़े काल असमंजसक स्थितिमे ठाढ़ रहल फेर अगल-वगल भेलऽ किऽ लागल । भातिज बेचारे घनै संकटमे पड़ि गेलाह । की करबि ? बजलाह—'वेणू । एतेक दिनक बाद अहाँ ओशनि अवधो केलहुँ तँओ बैसा तक नहि सकलहुँ ।' ओ क्षमा प्रार्थी मन लगैत छलाह ।

—'नहु-नाइ कोनो गप नहि । हम सबकेँ कहियो आरि जायब । एहन चलैत छी ।' मनेज बाबू जेना भातिजकेँ संकटसँ उबारलनि ।

बच्चा समेत ओ चलय लगलाह तँ भातिज सीढ़ी धरि छोड़्य अवलनि ।

परजब पुनहुँ एतहुँ अनुपस्थित छलनि । पार्वतीकेँ एहि मन्थक अवका लगलनि । ओ वर्षैव किछु नहि छनीह परन्तु भीतरसँ कानि रहल छलीह । की परिस्थिति छैक । हिनकर पैह भातिज ! आइ हिनका लग टी० बी० वा दुनियाँक आन कोनो नीक उपयोगी साधन, की उपलब्ध नहि छनि ? कयब ? नोकरीधोतँ ई पैह बला करैत छनि । मुदा एतेक होया एतेक साधन कतयसँ भऽ गेलनि ।

ओ लोकनि सड़कक काते कात चलि रहल छलाह आ चुप छलाह । बच्चा सब अपेक्षाकृत निश्चय भऽ चलि रहल छल । जकरा देखि कऽ पति-पत्नी अना केँ आर अपराधी आ दुधी अनुभव कऽ रहल रहयि ।

एतेक दिनक बाद तँ बच्चा सबकेँ घुमवाक अवसर भेटल छल । जेन्ना मे पाइ नहि छल तेपो ई सोचि किललहुँ जे बहुतो दिनसँ बच्चा सबके वनोरंजनक लेल परसँ आइर कतहु नहि लऽ जा सकलियैक अछि । एकरा सबकेँ कतहुँसँ घुमा-फिरा अनबाक चाही । आ अवलहुँ तँ पैह सब भऽ रहल अछि । की विविध संयोग छैक ।

—आब अपना सब कतय जायब बाबूजी ? सुन्नी पुछलनि तँ पिताकेँ व्यंग्य सन लगलनि । ओ ओकर मुँह देखलनि फेर ओ अपन पत्नीक मुँह देखलनि आ पुछलनि—आब !

—'हम की कहु !' पत्नी कहलनि ।

फेर थोड़े सोचि कऽ पैह बजलाह—'ओ हजै टहलित कऽ पहुँचय योग तँ दूरी छैक । कमलैक घर पर चलैत छी । ओकरो सँ बहुत दिनसँ भेट नहि भेल अछि । बेचारीक पति कतेको माससँ ससरेव छलनि । भेंटो कऽ लेबनि ।'

बच्चा सब ऊँचि चुकल छल । मुदा जयबाक छलैक तेँ ओ सब ओहीँस जाय लागल । बच्चा सब थानि गेल छल । कखनो-कखनो पति गरनी ओकरा सबक उत्साहकेँ बड़वैत आनू बढ़ल जा रहल रहय ।

ओतप जखन पहुँचलाह तेँ वातावरण मे कोनो फर्क नहि छलैक । ओतहु सब टी० बी० घेरने छल मुदा ओतऽ पार्वतीकेँ दोसरे प्रकारक किछु आर विधिक लगलनि । हिनका लग एतेक पाइ कतयसँ अवलनि । कतऽ ई समपेष्ठ छलाह । खर जे होइक । पहुँचला तँ कमला बैसलनि । अपने लगमे आ अपन पति आ बच्चा सबहुक सङ्ग टी० बी० मे व्यस्त भऽ गेलीह । कुलल क्षेमो नहि पुछलनि जे कोना छी ! कोना अवलहुँ एम्हर ! बच्चा सब कोना अछि !

ओ सब बैसलाह थोड़े काल । बच्चा सब तँ खास कऽ कछमछ करऽ लागल । अगुता गेल छल ।

—माँ चल ते जल्दी । चल ते माँ एतऽ सँ । आ तखन सब उठि कऽ चलय लगलाह । एक गिलास पानिओ तक लेल नहि पुछल गेलनि । ओ सब चोटा गेलाह । निकललाह तँ बच्चा सबकेँ फेर ध्यास लागि गेल छलैक ।

धीरे-धीरे साँझ भऽ रहल छलैक । घुमऽ बला मूड बच्चा सबक भिन्ना गेल छलैक । तँओ अंतिम रूपसँ मनेज बाबूके अपन एकटा अभिन्य स्मरण अवलनि । ओकरा ओ बहुत स्नेह करैत छलनि । आइ काल्हि सचिवालय मे कोनो विभाग मे किरानी अछि । भेंट भेना कतेक वर्ष भऽ गेल । एकहि नगर मे रहिओ कऽ... ओकरो देखिए लेल जाय । मुदा किछु सोचि कऽ अनडा देलनि ।

सम्बन्धी-यात्राक ई अनुभव बड़ विविध छल हुनका सबक लेल । ओ लोकनि पयरे सड़क पर चलय लगलाह । साँझ होइबाक कारन सड़क किछु व्यस्तता सँ भरल लागि रहल छलैक । बच्चा सबकेँ संग मे लऽक चलबामे कते बेसी खतक भऽ कऽ चलय पड़ि रहल छलनि । पार्वती आ मनेज भीतरसँ खि गेल रहयि आजुक एहि यात्राक अनुभव सँ ।

बच्चा सब भुखलो छल यकलो छल, मुदा बाजि नहि रहल छल किछु । पति-पत्नी सोचैत रहयि जे ई केहन घुमनाइ भेलैक । एहिसँ एकरा सबकेँ की मजा भेटल होयतैक । मनोरंजनक नाम पर घुमबहु अवलियैक तँ बेचारा सबकेँ भुखले पेटे पयरे-पयरे सड़क नापऽ पड़ि रहल छैक । ओ आरम ग्लासिँ भरि गेलाह । कोना परतारियैक ?



—'भुख लागत-ए बाबू जी।' मुकेश बाबल।

—'हमरो लागलए बाबू जी।' मुन्नी बाबलि।

दुनूके आश्वासन दैत कहलखिन 'एखने किछु फोन दैत छी, कनेक रुकू। ओ फेर चलैत लगलाह। ओ जनैत छलाह जे बेबीमे कतबा पाइ अछि। सबक मिला कऽ बसक किरापो टा नहि निकलि सकत। मुदा किछु ने किछु करहि पड़त। बच्चा सब भुखायल अछि। पत्नी के देखलनि तँ ओ चलैत-चलैत मूड़ी झुका लेलखिन। भरिसक मनेसन कानि रहल छलीह।

—'एहत लगीत अछि पार्वती, जेना एहि पूरा गहरमे अपना सब बाहरी आदमी छी। एतय जेना नयो नहि अपन। हमरा सब कतय जायब आव भला अहाँ सोनू।' ओ बजलाह तँ खर कोपि रहल छलनि। पतिक गप जेना पार्वतीके आव मनेसन तँयार कऽ देने होअय। बजलीह—

'यदि एतबहि गोटाके सम्बन्धीक मानल जाय तँ ठीके अपन नयो नहि अछि। लेकिन ई कोना भऽ सकैत अछि। बहुतो होयताह अपन। हमरा जकाँ हमर, परिस्थितिमे हमरे सन मिलैत जुड़ैत लाचारीमे जे जीवन बिता रहल होयताह ओ हमर अपन छय। बहुतो अछि एहन।' जेना बुलीलखिन।

—'हम सम्बन्धीक गप करैत छलहुँ। आव तँ ककरो घर जायब कठिन अछि एहि टी० बी०क द्वारे।' पति, जेना हुताश भऽ कहलखिन।

—'एतेक पाइ पर्यन्त नहि अछि जे एकरा सभके किछु खूआ सकियैक। सिनेमा देखवाक तँ सबनो नहि देखल जा सकैत अछि।' पति अपन आर्थिक विपन्नता तँ दुखी होइत बजलाह।

—'नहि, सिनेमा नहि। आना लोकनि एकरा सभके कतहु तेहन मनलभू ठाम लऽ लऽईक।' पत्नी कहलखिन। पतिके ई विचार लोक मनलनि वा नलि पड़लाह। कामा कात बला सड़क पर। ओ लोकनि चलल जा रहल रह्यि।

बच्चा सभ चाकल आ हुताश छल। चलैत-चलैत पत्नीक चण्डलक ओठा बला चमड़ा टुटि कऽ खसि पड़ल ओ पपरके विसिवा-विसिवा कऽ चलैत लगलीह। ओ प्रवास करैत छलीह जे पतिके पता नहि चलनि। ओ घुमघुव चलि रहल छलीह। गर्णेशक मोनमे अवलनि जे कि एक नहि गहरी पार्कमे चलि कऽ थोड़ेक काल बेसी बच्चा सभक संग। ई विचार एकाएक मोनमे अवलनि।

—'एतेक पैस गहरमे हमरा लगीत छल जे हमर अपन बहुत लोक अछि। आव भम दूटि गेल। चारुथमे हमर अपन नयो नहि अछि। सब वीखर सन बोखरा लोक। हम तँ असगर छी।' पति फेर बजलाह पुनर्त।

—'फेर दैह भ्रम। मोचवैक तँ बहुत लोक अछि अपन। हम भलहि जकरा

अपन बुझैत छलियेक ओ अपन नहि भेलाह, ने धन, ने पद, ने प्रतिष्ठा-बीबीमे नहि। तँ द्वारे हुनका सम्बन्धीक मानलासँ पैस मुर्खता आर की होयत।'

—'ई टी० बी० सबटा सम्बन्धके छण्ड खण्ड कऽ राखि बेतैक अगिला पाँच-सात बरखमे। देखैत रहब अहाँ।' ओ बजलाह।

—टी० बी० कि एक! आदमी अपने एना कऽ रहल अछि। सम्बन्ध खतम होय बाक जड़ि टी० बी० कही छैक। ओ तँ अछि सम्बन्धीक, विचार ओकर निषति जे ओकर आर्थिक सामाजिक सुरक्षा आ सुविधा उपलब्ध करैत अछि जाहिमे बहुतो लोक ओकर उपयोगिताक परिघिसँ बाहर रहि जाइत अछि। सम्बन्धके आव एहि प्रकारे बुझऽ पड़त नहि तँ तकलीक आर बहुत। हम आर कष्ट काटब, हमर बच्चा हमरोसँ बेसी कष्ट काटब।'

ओ लोकनि पार्कमे पहुँचि गेल रह्यि। ओतुका दृश्य देखि कऽ पति पत्नी, हृदय विचित्र उल्लाससँ भरि गेलनि। ओतय बहुत रास हुनके सनक माय-बाप अपन बच्चा सभक संग गप्प सव्य कऽ रहल छल। सीले कुचैले कपड़ा बला विपन्न बच्चा सब निर्विकार भावसँ खेला रहल छल, सब खुशी छल।

मुन्नी आ मुकेश अपने तुरक बच्चा सभक संग खेलाय लागल। एतुका फूलक गाछ सभके देखि कऽ भुख-प्यास सबटा विसरि गेल छल। बीबीके बुलारसँ छिड़ि-आइत कह्य लागल—'बीबी ओम्हर ओहि दिस चल ने, देख केहन सुन्दर-सुन्दर फूल छी ओम्हर।' बीबी ओकरा सभके लऽ कऽ ओहि दिस चल गेलि।

बच्चा सभके एहि तरहें सुख देखि पति-पत्नी एकटा गाड़ तृप्तिक अनुभव कयलनि एहि पार्कमे। बच्चा सभ जन्मुवत भऽ दौड़ि रहल छल, खेला रहल छल।

ओ लोकनि चारु दिस आँखि दोड़ौलनि। ओतय उपस्थित लोकक कपड़ा-सजा देखि कऽ मोनमे एहन विश्वास होइत छलनि जे ओ सबटा हिनके सन परिवारक लोक अछि। एहन लोक, जे धनि नहि पवैत छल जे अपन नहि छी। एना चलैत छल जेना एनके नामे टाक नहि प्रसुत बराबरिक स्थिति बला आदमी अछि सभ। एहि अनुभवसँ हुनका सभके बड़ लाभित भेटलनि। आव दुनू गोटे एक कात हरियर आ मोलायम धुनि पर सोझाँ-सोझी बैसल रह्यि।

—हमरा तँ लगैत अछि पार्वती जेना एखन अपना सब जाहि दुनियाँमे रहैत छी, जाहि गहरमे रहैत छी जाहिमे भरिसक दू दुनियाँक लोक अछि। एकटा दुनियाँक लोक बड़का-बड़का धन्य घरमे अछि आ एहि दुनियाँक लोक, अपने घरमे बंद भऽ टी० बी० देखि रहल अछि आ दोसर दुनियाँमे अछि अपना सभ सन लोक जे एतय पार्कमे वा एही प्रकारक, कतहु खाखी जेबी, भारी मन लेने बाहर मनोरंजन कऽ रहल अछि अपन चाकल बाल-बच्चा सभ। आ एहि दूनू दुनियाँक विभाजन कतेक साफ-साफ देखाइत छैक। नहि?'

अपन समाज □ 111



हमरा सभ तखनसँ ओहि दुनियाँमे भटकि रहल छलहुँ जे हमर अछि नहि ।  
हमर दुनियाँ तँ ई अछि—हमर लोक ई लोकनि छथि आ हमर बच्चाक संगी ई  
बच्चा सभ छैक जेकरा संग ओ खेला रहल अछि ।

बच्चा सभ खेलाइत दोसर दिस निकलि गेल छल । गणेश अपन स्त्रीके  
आवेगते देखलनि आ धूमिपर राखल हुनकर हाथपर अपन बहिना हाथ रखैत  
पुछलनि,—‘कौ सोचि रहल छी पार्वती ?’

साँस बेसी भऽ गेल छल । एक-दू कऽ लोक सभ पार्क सँ जा रहल छल ।  
गणेशो बच्चा सभकेँ सोर पारलनि । ओ सभ दोड़ैत आयल आ नइ खुशी छल ।

ओ जेबीसँ हँसोथि कऽ निकासलनि तँ ओहिमेसँ पचहत्तर टा पाइ बहरप-  
खनि । सोझाँ बऽ कऽ ‘चना जोर गरम’ बला जा रहल छल । सोर कयलनि । पत्नी  
टोकलनि ‘जे पाइ अछि तँ रखने रहू । अनेरो एहिमे किएक खर्च करैत छी ?’

—‘बाह, इहो भाइ तँ हमरे एहि दुनियाँक अंग छथि । हमर पाइमे हिनको  
हिस्सा होइत छनि । हमरा एकरा बाँटि कऽ जयबाक चाहो । पत्नी बिहुँसलीह  
जेना गणेशक आँखि अम्हारोमे देखल जा सकैत अछि ।

—‘बच्चा सभ भुखसँ अछि पार्वती ।’ गणेश बजलाह ‘चना जोर गरम बला  
सँ आयल आ फकड़ा पड़ैत दुडिया बतवय लागल ।

‘आब दुनियाँ बदलतँ मैया’

सबहुक घरे घर सँघा,

भुखले कपो ने आव रहबैया,

पढ़ती बुतल तेहन पढ़ैया,

तेहने सहरि भरल छै हम्मर चनाचूर गरम ।

भरिसक चारि-चारि दानाकेँ सभहुक हिस्सामे बसाम पड़ल होयलनि । सभ  
पार्कमे पानि पीअय लागल ।

ओतयसँ दू किलोमीटर परे चलबामे बच्चा सभ धाकल नहि, खुशीसँ दोड़ल  
चलल जा रहल छल आगुए-आगु ।

मुग्गी अपन शीबीकेँ कहि रहल छल—‘आथ अपना सभ एतय सभ छुट्टीमे  
आयल करब शीबी ? आयब ने ? एतऽ हमरा दू तीन टा दोस्ती बनि गेल आइ । जानू  
आपब ने ? माँ आ पिता समटा मुनि रहल छलथि आ आनन्द आवि रहल छलनि ।

□

इत्यादि





लेखक

### □ वृत्तांत नहि

अपना हाथक पूरा ओजन  
 हमर अपनहि गर्दन पर लटक गेल-ए ।  
 दयेह ओही दिनक तँ गप्प धिक  
 अस्पताल प्लास्टर कऽ देल-ए ।  
 हमर जुआन छोट भाग  
 अपन हुनू मोचड़ल पंजा-हाथ के  
 पेट पर रखने  
 हमरा सोझी मे आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल-ए ।  
 हमर माथक भार हमरा गर्दन पर  
 अटक गेल-ए ।  
 हमर बेटा मोर्बैत अपना माथक केन/  
 बाँधि सँ चिमनी उगलैत  
 पड़िते-पड़िते पोथी केँ एक कात फेकि  
 विजलौका जकाँ समक कऽ  
 अकरमात ठाढ़ भऽ गेल-ए । □